# ्ठीशक।

			পর	1
গ্রস্থিক		****	>+>++	. 5,
यत्तत्र छेशानम	*****	9 413	*****	v
श्रीहरू विन गर्शका		67879		Ş)
मन्दक इन्हांचन भगत्नद मीक	1	. , , , , ,	* 5 4 %	17.
গঞ্জার মাহান্ত্র্যা	****	4051		13.3
ভগীরথের গশা আন। উপাধ	गान		* # 1 #	24
प्लीवदयह स्वच	****		6 4 # 4 N	>0
দশিষ্ঠ কৃত ভ্রাবংশ প্রিচয়	****	* \$ 7 % 2		35-
क्रशीवरथत भीक।	1 * * * * *	9	****	25
সভাবতীর খেদ				2 5
भगीतथ अननीत निकछ विमाग				3 8
ভগীবথের শিব আরাধনা				3 %
७गीदायत गना व्याताधना	****	2 2 4 4 4	* > + +	-57
ভগীরথের নিকট গঙ্গার আগ	মন		****	٧,8
ভগীরথের ব্রহ্ম আরাধনা		*1***	,	હ્ય
গঙ্গার আগমন	*****	****		80
ঐরাবডের প্রতি গঙ্গার রোষ	*****	*****	4777	82
আরু মূনির গঙ্গা পান করা	****	.1115	, ,	80
সগর বংশ উদ্ধার	****	* 6 * * *		89
मक्रमण्ड डेलाचान	***	10889	*****	g o
সভীর নিকটে নার্দের গমন			*****	60

# সূচীপত।

			প্ৰা	寒
সভীর দক্ষালয়ে যাত্রা	••••		****	ee
नुजीदत नकीत शहनाथ राजि।	****	*****	••••	a br
কুরেরের কৃত সভীর সজা		*****	****	90
मकानित्र गडीत लगन	••••	••••	****	<b>,</b> 52
সভীর কৃত প্রস্থতীর ভংগন	1	*****		30
দকের কৃত শিব নিন্দ।		****	****	46
দক্ষ প্রতি শাপ ও নতীর প্রা	ণত্যাগ	****	****	4>
नक यस्क वीत्र छस्त्र अमन		. ***	****	م ہ
पक्ष यञ्च नाम	••••		*19.	93
'দকালয়ে ভূতের উৎপাৎ	****	* * * * *		0 P
মহেশের রোদন	****	****		b.
হর পৌরী মিলন	*****	1111		ۍ س
श्रीताकदारदत उर्शायान		*****	** 1 *	b 5
অদ্বৈত প্রভুর অবতীণ	1140			6.4
নিত্যানশ প্রভুর অবতীর্ণ	****	*****	*****	25
भीतां भटम दिन जन्म		11111	****	28
मगतीय त्रभगीगत्वत त्रभात म	ৰ্ণন	*****		98
ব্রহ্ম হরিদাদের জন্ম	****		****	44
গৌরাঞ্রে পাঠ শিক্ষা	****			502
(भीत्रवस्थात गांशाया		** ****	****	508
नक्तीत्र केंगा				
গৌরচন্দ্রের সন্নাসধর্ম গ্রহ			••••	203
श्रीवश्रमन	****	****	****	>:>
জ্ঞাই নাধাইয়ের বৈরাগ্য			( * * * *	>>8
গৌরচন্দ্রের কৃত হিতোপা	म्भ	****	····	35 8
্রীরচন্দ্রের গুণ ও নবদীপ				338

স্থচীপত্র সমাপ্ত।

# ভু**মসং**শোধন ৷

বিনয় সহকারে পাঠকগণকে বিজ্ঞাপন করিতেছি বে, এই "মনোদীকা স্থাতরিঙ্গণীর " অষ্ট্রম ফবসার পর নবম ফরমার স্থানে দশম ফরমার অন্ধ লিখিত হওয়ায় ১১৮ পত্রাক্ষের পশ্চাত ১৪৫ পত্রাক্ষ অন্ধিত হওয়াছে, ফলতং সে কেবল পত্রাক্ষ অন্ধিত হওয়াছে, ফলতং সে কেবল পত্রাক্ষ অন্ধিত হউবেক না কেবল পত্রাক্ষ দর্শনে সন্দেহ হউবেক। অত্তর্গর কৃপাবলোকন পূর্বাক পাঠক ও গ্রাহক মহাশামেরা এ শেব মার্জ্জনা করিবেন নিবেদন ইতি।

श्रीदिगीमांधव (म।

विमात्रज्ञ यञ्जाशाक

# मतानीका स्थाठत्रिनी!

### প্রার।

স্বাবে রে পামর মন, প্রপঞ্চ মায়ার। আপনি মজিয়া কেন, মজালি আমায়।। কি কর ক্ষেপার মত, অপার বাসনা। ভূমি কার কে ভোমার, মনে কি ভাবন। ।। ছাড় গোল মিছা বোল, আমার আমার। বারেক ভাবিয়া দেখ, কে আছে ভোমার।। ক্ষণেক আরত মোহে। ক্ষণেক উদাস। তথাপি করিছ কেন, এত অভিলাষ।। न। कत (मरहत छम, कीवरनत रह्जू। ভরজের মুখে যেন, বালুকার দেডু।। যেমন জলের বিশ্ব, জলে ভগ্ন হয়। ভূষার তুণের অঞে, কভক্ষণ রয়।। থাকয়ে গাভীর শৃঙ্গে, সরিষা যেমন। পর্বতে পড়িলে জল, থাকে ক্তক্ষণ।।। ছুড়িলে হাতের ডেলা, ডিলমাত রয়। তেমনি দেহেতে তোর, জীবন নিশ্চয়।।

কখন কফেতে ৰুদ্ধ, করিবেক ঘর। এই বেলা তার চিন্তা, কররে পামর।। দিৰ নাই রাত্রি নাই, সন্ধ্যা নাই তার। কথন হইবে মৃত্যু, কোথায় তোমার।। बारनार्ड इटेर्टर किया, खालार्ड इटेरव । কে আছে এমন বন্ধ, সে কথা কহিবে !! কোথা রবে দ্বারাস্কুত, কোথা রবে ধন। কোথায় হইতে হবে, কোথায় গমন। ভূমি বা কোথার যাবে, আমি বা কোথার এক দিন না ভাবিলে তাহার উপায় !! কোথায় থাকিবে শ্যা কোথা রবে ঘ্রা কোথায় থাকিবে তোর, পিন্দন ভাষর।। কোথায় থাকিবে তন, মোহ বা কোপায় : মুদ্রিকা ইইবে ভোর, মুদ্তিকার কায় 😗 জলে জল মিশাইবে, প্রনে প্রন। অবনীর তংশ লবে, অবনী তথন।। আকাশে আকাশ যাবে, অনলে অনল। কোথার থাকিবে সুখ কোথার সমল ।। কে দিবে চন্দন গার, কে ভূষিৰে মন। क् चानि कतित्रा निर्देश गतीत मार्जन ।। দ্দিন যাবে ক্ৰণ যাবে, ভুইও যাবি মন। কেবল ঘোষণা রবে, কর্ম্মের কারণ।। পাঁচভূতে ঘর যার, ছয় ভূত নাচে। 🗆 এ খরে থাকিয়া লোক, কি করিয়া বাঁচে।।

ঘরের কানাচে চোর, রয়েছে শমন।
নর্মাকিক নটাছার, থোলা আছে মন।।
গেলরে গেলরে দিন, এলো এলো কাল।
লামাল সামাল ঘর, সামাল সামাল।।
শুনেছি ছুয়ারি আছে, রুফের সাধন।
নিরোগ কররে তারে, আ্নিয়া এখন।।
হওরে চেতন মায়া, মুখে দিয়া ছাই।
ভালিয়া জ্ঞানের আল, জেগে থাক ভাই।।
রাসিক কহিছে দেখ, যুক্তি বটে ভাল।
কোথার থাকিবে ভয়, কোথা রবে কাল।।

## गत्नत हेश्राम्भ।

কত মারা নিদ্রা যাও সন। আগত শমন
দুত জগত এখন। নিত্য কাজ পরিহরি,
নিদ্রাবশে কাল হরি, আমার আমার
করি, কি দেখ স্থপন। নিদ্রা ভাজে ভাব
সার, কে ভোমার ভুমি কার, আছে
নার ভরদার, সেই ক্লেখন। অভএব
বলি ভার, নাম লহ অনিবার, ভবে কি
রসিকে আর, করিবে শমন।

#### পয়ার।

ভাজরে বিষয় আশা, ভাজরে সংসার। অনিভা বসিরা ভাষ, এ কোন বিচার।। আইল বিক্ট দিন, নিক্ট ভোমার। ক্রম মুদিতে হবে, নয়ন আগার।। গেলবে গেলৱে দিন, এলো এলো কাল। ছিল্ল করি ফেল যায়া, জঞ্জালের জাল।। मत्नटक देवतांशा खान, करम ভाव नात । হরির চরণ পত্ম, হরিযে এবার।। ভাবরে ভাবরে মন, দিন বর্ষে যায়। সময় থাকিতে করু, কার্য্যের উপায়।। অসময় কি হইবে, সময় যাইলে। আপনার কাজে কেন, আপনা খাইলে। এখন বমর আছে, বুরে কর ভাল। ছাড়িয়া তাড়িয়া ধরা, সে বড় জঞ্জাল।। **कृत**दनत गांत हति, नांभ कि मधुत । স্মরিয়া হরির নাম, তুঃখ কর দুর।। শুনিয়াছি ধর্মা তত্ত্বে, বুরেছি নিক্ষয়। যেখানে হরির নাম, সেই খানে জয়।। বিষয় রোগেতে তোর, জীর্ণ কলেবর। প্রবৃত্তি পিত্তের ত্বালা, বাড়িছে বিস্তর ॥ বদেছে বাসনা কক, বুকেতে ভোমার। মোহ আর শ্লেহ ছুটা, হেঁচকি তাহার।। কৰ্ণেদাহ কণে মোহ, কণেক প্ৰলাপ। ভ্ৰমেতে করিছ কার, সঙ্গেতে আলাপ।। এবড় বিষম রোগ, অন্মেছে যেমন। चाहरत्र कृतकत्र मात्र, छवरि एक्सम।।

সেবন করিয়া তাহা, এগুরুর ঠাই। শরীরের রোগ তাপ, দূর কর ভাই।। यि वन (कवा क्रुक, महान (क्रमन) कहित विदम्म कथा, खन मित्रा मन।। কমলা সেবিত যাঁর, চরণ অভয়। অকুল কাপ্তারী হন, গোকুলে উদয়।। কিবা ৰূপ কিবা গুণ, আহ!! কি গঠন। बुब्रह्म मटनाइब्र, निव्हम वर्ष्य ॥ চরণ নথরে যাঁর, দশখানি চাঁদ। ভাহাতে নুপুর করে, মধুর নিনাদ।। উরু ভুরু চারুতর, নাভী সুধাকুপ। কীণমাঝা দিনকরে, রজনীতে ৰূপ।। कोषिक ध्वतिशा गवः शांभाक्रवा शव । বামেতে কিশোরী মেছে, বিছ্যুৎ যেমন।। ক**ত র্ম কভ ভাব, কতই বিহার**। কত মত কত কব, কত বঙ্গ ভার।। বেমন রসিক কৃষ্ণ, সেইমত রাই। দোঁহার করিলা ধনা, গোকুলের ঠাই।। क्थन निकुक्ष कष्ट्र, मधुत कान्त । কত ঠাঁই কত রনে, কত জালাপন।। थना तिहे इन्हांवन, धना त्रांशिकांवः। धना त्म खरबंद धूनि, द्राक्षांभन भाव।। थना ताहे माजी छका थना छक्न मद् धनादत्र शांद्यत्र शब्द, धनादत्र शहरा।

ধন্য সেই রত্ন বৈদী, বিহারের স্থান।
ধন্য রাই প্রেমময়ী, ধন্য ভগবান।।
ব্যাসের কবিতা ধন্য, ভারত বিদিত।
রসিকের ভাষা ধন্য, নামের সংগীত।।

# न्त्रीवनारम भाषाचा

ভাররে জীনস্থানদানং। জগৎ বন্ধানং।
হাস তড়িত, সুধা জড়িত, ভান ভব
রঞ্জনং। কাল ভর ভঞ্জনং, গোপী নেত্র
জ্ঞানং, করুণা নীর্মি ভব তারণং।
গোকুল বালকং, গোকুল পালকং,
কারুণা কেশব কর্মা কারণং। ভক্তি
ভ্যনং, পতিত পাবনং, রসিক সুস্পুহা
পদ শরণং।।

#### প্রার।

এ কপে বিহরে কত, মদনমোহন।
হর্ষিত আনন্দিত, পুলকিত নন।।
কথন ভাণ্ডীর বন, কথন বিজ্ঞান।
কুঞ্জেতে ভুঞ্জেন স্থাপে, কতই আরম।।
কথন বন্ধুল বনে, গোকুলের সার।
কথন কদম মূলে, করেন বিহার।।

कथन यसूना छोटत, मोटत्र एक (थलाह । कश्रम शांदिम क्रम, मांधवी जलात्र ॥ এইৰপে কত মতে, খেলে চুই জন। কিশোরী যেমন ভার, কিশোর তেমন। ভাহাতে গোপীর মালা, চৌদিক বেডিয়া। যৌতুক নিয়াছে প্রাণ, কৌতুক করিয়া।। এমন পুণ্যের ঠাঁই, রুন্দাবন সার। কত দিনে নির্বিধ্ব, মৃত্তিকা তাহার ॥ মাধিব ভ্রজের ধূলি, দেখিব কেমন। वित्नाम विशाबि शतिः विश्वति वन ॥ চল সে ভালস ভাজে, যাইব তথায়। বদনে বলিব ছবি, কথায় কথায়।। বাক্যের অতীত গুণ, গুনেছি যাহার। বাজিব মূপুর হয়ে, চরণে তাহার গ অথবা পাছকা হয়ে, রব ছুটি পায়। ধূলা হয়ে মিশাইব, ত্রজের ধূলায়।। কিষা যে কুঞ্জের তরু, কিষা শারী শুক। কিয়া হয়ে লতা পাতা, দেখিব কৌতুক। ভ্রম তাজি শ্রম করি, চল ব্রহ্মপুর। **टिकी ना कतिदल किथा, इ:थ इत्र पू**त ॥ আনে কর চেক্টা ভাই, তবে পাবে কুর। राबादन कराज (सर्व, तारेबाहन हर्व।। সাধন সম্পদ্ধ সুখ, সকলি চেন্টার। এখন বুৰিয়া কর, ইহার উপাত্ত।

অলস তাজিয়া কর. যতনে যতন।

যতনে হইবে লভা, কালিয়ে রতন।।
পুরাণে শুনেছি ক্লা, যতনের ধন।
অযতনে নাহি হয়, কজু উপার্জন।।
যতন করিয়া যেবা, করয়ে শরণ।
অবশু তাহার হন সে নীল রতন।।
যতন করিয়া তারে পাইল প্রহলাদ।
শুনিতে প্রবের কথা, সে বড় আহলাদ।
যতন করয়ে হুকে, গোকুলে যাইয়া।
আকুল হয়েছ কেন, অকুলে পড়িয়া।।
দিন গেল মিছা কায়ে, রাত্র গেল যুমে।
এত কি পড়েছ তুমি, সংসারের পুমে।।
কার ঘর কার ছার, কার বা তনয়।
রসিক কহিছে দেখা কেহ কার নয়।।

# गर्मटक हुमार्चन शमध्नत भीका।

মন চল জীরুদ্ধাবন। হেরিতে জীনন্দ নন্দন।। পদে শুলী দিবাকর, প্রাণ ভাতে দিবাকর, ভবে হবে দ্রাকর, সুভের দুম্বন। লোলিত জিজ্জ ঠামে, হেরিয়া কিশোমী বামে, স্থানিক বৈকুণ্ঠ ধামে, কুরিবে গ্রন্থ

### - পদ্মার।

हम यादे वृष्णावन, म्हा इत्व तम । ना कर दिलम् चात्र, नाकत चलन ॥ अरमर्भ अरख्य कत्र, भारतम् विरुष्ध । তবেত বলিব ভুই, রসিকের শেষ।। অনিত্য রসিক নামে, কি লাভ হইবে। জীবন যাবার কালে, সঙ্গেতে লইবে।। बनटाइ देखें ताहे, क्रुक नाम दम। সে রসে রসিক হৈলে, ভবে রবে যশ।। কি কর দেহের ঘরে, কাম জোধ আদি।। শঙ্গেতে রয়েছে তোর, ছয় জন বাদী।। বাদীর কুভুকে পড়ে, কেন ভাঙ্গ ঘর। তুমি হও প্রতিবাদী, বাদীর উপর।। জাননা অবির সঙ্গে, বসত কেমন। স্বদর্প গৃহেতে বাস, যেমন তেমন।। না শুনে বারণ ছটা, উন্মন্ত বারণ। ভবতি কমল ভোর, করিল দলন ৷৷ আগুণের সম যেন, উঠিছে বাজিয়া। ভূমি দেহ হরিনাম, কেশরী ছাড়িরা 🛭 थ नव भानित्राः शक्, खरणतं धूलातः । বে করে তীর্থেতে তাহা, না করে কুলার।। इन्मार्क शक्तिकम, क्टत (यह अन । " छोरात शृत्भात कथा, ना यात्र करन ॥

এমন যে রুক্ষাবন, ভূবনের সার। কিঞিৎ বর্ণনা আমি, করিব তাহার।। কভ ঠাই কত বন, কত কব তার। मधु निधु कुङ्गमाम, सूरथेत स्नाशांत ॥ ভর্মাল ভাণ্ডীর জার, নিকুঞ্চ কানন। গোকুলে বকুল কুঞ্জ, অৰ্ডুল শোভন । িকি শৌভে কদম ভব্ন, যমুনার ঘাট। দিবা মিশি পক্ষীগণে, করিতেছে নাট।। বিকচ কুসুম গক্ষে, আনোদে মাভিয়া। ভিরেক গি**ইছে** মধু, কুরুমে বসিয়া।। লেই সে গোকুলে মন, গমন করিয়া। क्रमम नकल कत्, मन्नरम (रुतित्र)।। कि ब्हारन कथन किया, इडेरव घठेन ना कर विलयं ७७, कार्यत कार्रा ॥ जारत इन देवनागांगि, जत्त भावि मात ! সেখানে হইবে তোর, দর্শন গঙ্গার।। বড়া আর বৈদ্যবাদী, ছই ক্রোশ পথ। शंभन कतिश्रा कत्, धना मरनात्रथ।। থেহেছু বিরাজমানা, জাহুবী তথায়। যাঁহার ক্ষরটো পাপ, ধ্রংস হয়ে যায়।। ेराहे जिश्रकात कल, भत्रम करिया। शका आवातरा हल, चारिया चारिया। ्य रत शृत्गत लंडा, करिए जशात । র্লিক বর্ণনা করে, মহিমা প্রকার ।

ž,

# ग्रामीका ख्रशंडक्रिकी।

# ্গলার মাহাত্য। जिल्ही।

खनरत्र भामत मन, ः धरे शक्ना विवत्र १, य्यद्ध बाह्या यही बद्धा

ত্রবণে ঘুচিবে হুখ, জহিকে বিস্তর মুখ, পার্থিকে মুকতি ফল ফলে।।

সুখ সম্ভোগের হেডু, কেবল পুণাের সেডু, কহিয়া পুৰাব মনকাম।

স্বর্গে মন্দাকিনী গতি, পাতালেতে ভোগবতি, **ज्रुटल जनकानका नाम।**।

কে বর্ণে মুহিমা মার, এমত ক্ষমতা কার হরি পদোভবা ৰূপ বারি !

क्षित्रा इरहत शान, खतः इन छशवान, স্থার মতে মেনকা কুলারী।।

তত্ব জানি বিশেষিয়া, তিনে জিল সিশাইয়া, বন্ধায় রাখিলা বন্ধবাস।

সে জল পরশ ভরে, সকলে আকাজ্জা করে, কিবা মার মহিমা প্রকাশ ॥

खन **क्षु**खल जन, ्रहतुः गृहिगी इन, পুরাণে পুরাণ কথা শুনি। 🎋

गांधरकत्र अधिकात्र, ाता कवा प्रारं शा गांत्र, ্লিখেছেন বেছব্যাস মুনি।। ১ 🔻

ভারতে আরও বার, বাতাবে হতাল যায়, মার দান মুক্তির কারণ্য করে

পুরাণে শুনেতি ঘাহাঃ বেদের মরম তাহাঃ তল্পে কয় নেইত বচন।। शकांत्र डाकिटल कांत्र, युवटन देवकूरर्थ गांत्र, এমি মার জলের মাহাত্ম। এ ঋলে করিতে স্নান, ইচ্ছা যুক্ত ভগবান,

পরম পুরুষ পরমান্ধ।।

গঞ্চার তীয়েতে বাস, যদি করে বারোমাস, কাশীর অধিক তার কল।

কাশীতে মরিলে শিব, গঙ্গার নির্বাণ জীব, क (य नर्स ठीर्थमझी जन।।

च्छ निता बचाश्रुतः, निरवत चछात्र छत्तः

ज्जीद्रथ माध्रास्त करण !

ज्या टेश्ट छशीत्रथ, आत्म त्यारेमा भथ.

मारमदत जानिना महीज्या।

দৈলে জীব অবঘাতে, কুলাতি স্পর্লিয়া ভাতে,

क्टल यनि कुन्हारन होनिया।

পুরাণে শুনেছি তায়, লাগিলে গঙ্গার বায়,

তরে যার পবিত্র হইর।।

শতেক যোজনে রয়ে, যদি গঙ্গা গলা করে,

इक्कान कोटवत मन्।

थिनादत्र कारलत हत, यात्र त्म देवकूरके नतः

व्रतिक करिएक अन्यम् ॥ 🕸 🗥 🖰

# छतीत्रयत्र गङ्गा जाना छेशाचान ।

खार रमहे जांगीतिथ পिछ्छिभावनी। छग्राज्य गिक धिनि खंगर जननी।। इति भिन शक्र खाँछता, जनमती यात हत्र ए ख्वा, खंका इतिहत य अम्बा, भार्थिक त्र जन थिन।। यज्यभूमन अहातिगी, इत खंगे कृष्ठि विहातिगी, त्रिक जांवरत निक्छा-तिगी, भाषकामें म्यायनि।।

#### প্রার !

অতঃপর শুন মন, ধর্মের নীতি।

ঘেই রূপে এই গঙ্গা, আইলেন কিভি।।

ঘেই রূপে ভগীরথে, দিলেন চরণ।

ঘেই রূপে করিলেন, জগৎতারণ।।

ঘেই রূপে উদ্ধারিল, সগরের সূত।

কহিতে সে নব কথা, বড়ই অন্তুত।।

শুনেন্ন পুর্বের রাজা, নামেতে সগর।

ঘেশর সাগর জার, রুসের সাগর।।

ঘেমন গুণের ঘটা, সেইমত রূপ।

কপবাণ গুণবাম, বলবান ভূপ।।

আহিল সুর্বের বংশে, অযোধ্যার পতি।

ভিত্তির স্থিতা মাতা, ভিকুকের গভি।।

যে করিল জন্মমেধ, উন্শত বার। শতেকের মধ্যে বাকী, একই ভাহার।। क्ड मिटन (महे यक, आंत्र्ड क्रिल। ভ্রমিতে যজের ঘোড়া, নুপতি ছাভিল।। ঘোড়ার রক্ষক বাটি, হাজার তনয়। य मिटक शंभन करत, तारे मिटक यांग्र ।। মহাকার পায় পায়, চলে যায় ঝাটি। মালসাটে কেবা আঁটে, কৃটি কাটে মাট ।। কে ধরে যজের ঘোড়া, কে করে বন্ধন গ যে পড়ে সমাধে তার, তথনি মরণ।। কোন বীর শোবে তীর, কেহ ঠকে তাল। কেই বলে আরে বেটা, নামাল নামাল।। क्ट्र माद्र कीननाथि, क्ट्र माद्र छ्छ।। মুকার মারিয়া কেহ, করে ফেলে গুড়।।। কেই ঢাল ভলোয়ার, কৈই ধরে অসি। ভক্ষারে তপন যেন, পড়িতেছে খনি।। मशरत्व मनवन, मश्वल धर्व । টল টল করে ক্ষিতি, বলবান ভরে।। মার মার কাট কাট, হাট ঘাট ময়। শব্দেতে সকল লোক, खन रत्न तन ॥ এইৰপে অনেকৈরি, দর্গ করে দুর। হোথার ভাবেন ইন্দ্র, দেবের ঠাকুর।। যে যত করিল গুণ, সাগার সগর। 🛷 कि वासि शाष्ट्र वा हरत, व्यापत संगत ॥

তথ্য রক্ষের হেড়, প্রভুত্ব আপন। স্মাসিরা যজের ঘোড়া, করিল হরণ।। यथात्र कशिलमूनि, यार्श कारहे काल। রাখিল তথার অশ্ব, যাইয়া পাতাল।। ওখানে সগরস্থত, আকুল ভাবিরা। কে নিল যভের ঘোড়া, কেমন করিয়া।। এইনপে সাত পাঁচ, ভাবিয়া বিস্তর : ভ্রমিল বিস্তর ঠাঁই, কহিতে বিস্তর ।। কি করিব কোথা যাব, কব কার ঠাই। ভাবিয়া পাছালে গেল, ষড়যুত ভাই ।। উপনীত কপিলের, নিকটে তথন। দেখিল যজের ঘোড়া, রয়েছে বন্ধন।। রাগেতে বাগের প্রায়, গর্জ্জন করিয়া। মারিল মুনিরে কত, কুন্তলে ধরিয়া।। যেমন ভাঙ্গিল ধ্যান, ক্রোধের উদ্ভব। অশ্বত রহিল বাঁধা, ভস্ম হৈল সব।। দূত গিয়া অযোধ্যায় জানায় সহর। রসিক কহিছে শোকে, মোহিল সগর ॥

ভগীরথের জন্ম। কালীর করুণা বুঝা ভার। নাগর বিহনে নারী প্রসৰে কুমার। অগতে বে আন্-ভব, কালীতে সভব সব, তাই শিব হুরে শষ চরণে পতিত তাঁর। যেই ডাকে তারে তারে, লয়ে যাইতে পারে পারে, রগিক ক্সন্তারে তাঁরে, ডাকে স্পদিবার।।

## প্যার।

সগরের ছুই ভার্য্যা, কেশিনী সুমতি। बार्भ त नाहिक मीमा, खान खनवडी।। সুমতির হৈল বাটি, হাজার তনর। জসমঞ্জ নামে পুক্ত, কেশিনীর হয়।। অসমঞ্জ হৈতে হয়, অংশুমান স্থৃত। বে আনে যজের ঘোড়া, বড় গুণবৃত।। जकल कार्जिए पड़, जूबन डांबन। इहेल छोहात शुक्क, मिनीश ताबन।। निलीभ मतिया लिल, ताथि हरे नाती। বংশ হৈঁল লোপাপত্তি, চিন্তা হৈল ভারি॥ বান্ধিয়া ভপনকুলে, ধরনের সেভু। শক্তি আরাধিল দোঁহে, সন্তানের হেতু।। रहेल काकाम तानी, इहें दव उनम्र। क्ष्यत्व गर्छा १ कत्र, रचवा गरन नम्।। ' আকাশ বাণীতে দোঁহে, সম্ভোগ করিল। তাহাতে মাসের পিঞ্চ পুঞ অনমিল।। (य जारन जूडरक अका: (पर्वाहें हा शब । करत करन क्या रहे हैं, मात्र कतीत्रथ ।।

# मानामाका स्थाउत्करी।

পঞ্চম বৎসরে শিশু, পড়ে পঠিশালে। আইলেন অফবন্ধ, মুনি সেইকালে ৷৷ युनि (मध्य व्यवसित्रों, तांकांत नक्तन। ধলার পড়িয়া করে, চরণ বন্দন।। সহজে মাংসের পিগু, নাজানি কারণ , মুনি ভাবে বিপরীত, এ আর কেমন।। ब्बि एएथ बाक यपि, कत मुतारात। ভ্রায় হইবে ভোর, এমনি আকার।। নত্বা পুরুষ হবি, পরম সুন্দর। मान देहरू जगीतथ, नाहरतान वत।। निक्नक हमा (यम, इहेन वम्म। क्रमहामत भारत, नम्रम थेखन ॥ দশন যুকুতা পাতি, অধর বিদ্বর। হাসি বিছ্যুতের সম, বচন মধুর।। পত্মের মৃণাল যেন, শোভাকর কর অবণ গৃধিনী সম, আবণ সুস্তর II. छेक रम कतीत कत, कामरन कमन। नव मालिकांत्र थटत, नश्चटतत इल ।। বাসনা বরণ করি, বরণ অনুপা মেঘ ছাড়ি বিছাৎ, হইল ৰূপ ৰূপ ॥ ट्नकारल स्टब्ड क्री, ब्रह्मह करनी। व्यास्तरिक क्रिल क्रांट्ल, बांबरत बाहिन। विशास इतिन विम, मेन्द्रमत स्थान कारन भाम निविधाः, प्रिक होममूच।।

ভূইরে ভিলক বাছান তপনের কুলে। বারেক মা বোলে ভাক, চক্রমুথ ভুলে।। এত বোলে কোলে লয়ে, সাধনের ধন। বার বার চক্রমুখে, করিল চুমন।। রসিক কহিছে রাণী, চুম্ব আরবার। এই পুজ হৈতে হবে, জগৎ উদ্ধার।।

# ৰশিষ্ঠ কৃত স্থগাবংশ পরিচয়।

শুরুদেব কি হবে আমার। কেমনে তরিব বল এ ভব সংসার।। কিসে হবে পিতৃকাজ, তুই রবে ধর্মরাজ, বুঝি এ সংস্থারে লাজ, পাইমু এবার।। রসিক কহিছে সার, ভাবনা কি আছে তার, ভবের সাগরে যার, গুরু কর্ণধার।।

## প্রার ৷

এই রপে আর কত, দিন যায় বোরে। পাঠশালে পড়ে শিশু, পুলকিত হোরে।। যথন অউম বর্ষ, বয়স হইল। জনশীরে জন্ম কথা, জিজাসা করিল।।

रम्भा कनमी काश्रा, कनक कामान । কেমন পুরুষ ভিনি, কি নাম ভাহার॥ ৰূপ বা কেমন তার, গুণ বা কেমন। শুনিব ভোমার মুখে, সেই বিবরণ।। কহিছেন সভাবতী, আরেরে কুনার। এখন সে সব কথা, কাল কি ভোষার।। এখন উচিত করা, বিদ্যার উপাধ। বিদ্যা না হইলে ভত্ব, কে কারে বুঝায়।। भकरनत गांत विमा, विमा मृनावात । বিদ্যার সমান বন্ধ, কেবা আছে আর ॥ বিখ্যা হৈতে জান হয়, জ্ঞানৈতে ধর্ম। थतम थाकित्ल जात्म, शिकांत मतम।। কে আছে পিতার নম, উচ্চ বা কোথায়। মাতার সমান গুরু, পাওয়া বড় দার।। এমন বয়সে,ভাহা, কেমনে জানিব। क्रियान अभन कथा, तुकारन वृक्तित !! ভগীরথ বলে মাতা, ছাড ফের ফার। কহ সবিশেষ কথা, নিকটে আমার।। কি করে বয়সে আর, কি করে রিদ্যায়। যে করে আমার প্রাণ, কৃহিব কহি।য়।। गडी क्य डटव यहि। अनिटव काहिनी। स्थादव विभारक गारा, कहित्वम किनि॥ এত শুনি ভগীরথ, পুলকিত মন णांकान त्म शूरवाहिक, बन्दिक क्रवंत ॥

विटमय किटाटन नक विमन्न कविना। . स्नि (पन शतिष्य, शनिया शनिया।। श्वित्रा नत्रत्व अल, वहवित्रा यात्र । ভগীর্থ বলে গুরো, কিছবে উপায়। क रचन कविट्ड मन, रकमन रकमन। কেমনে উদ্ধার হবে, পিতামহগণ।। কুলাঙ্গার জন্মিরাহি, আমি কি করিব। ভরাইরা পিতৃগণ, কেমনে ভরিও।। যে না করে পিতৃকাজ, ভারতে জনিয়া। कि कल जनत्य जात. कि कल वाहिशा भ পিণ্ডের কারণ পুত্র, করছ বিচার। যেন। করে পিশুদান, পিশুদান ভার।। পিণ্ড দাতা হৈলে পায়, পিভামহ ধন। कारा विना व वाकाव, कार्या कि वर्षन ॥ ইহার উপায় বল, কোথা আমি যাই। পিতৃলোক উদ্ধারিয়া, পরলোক পাই।। মুনি বলে ভগীরখ, যেন তুনি সার। শক্তির সাধন বিনা, গতি নাহি আর ।। ভব পিতা পিতামহ, এই মে কারণ। क्रिमा अरमक कान, शका आहापन।। পাইয়া কঠোর কট, জীবন তাজিল। उथानि मा श्रमाद्रमती, नम्मा नहिन ॥ আংগ আনি গলাদেকী, ভবে পাবে পরি হইবেক পিতৃলোক, ভোমার উদ্ধার ॥

এতেক বলিরা র্নি, কহিলেন তথা। গলার মাহাত্ম সার, অপরণ কথা।। শুনিরা ব্যাকুল হৈল, রাজার জন্তর। রসিক কহিছে মন, শুন অভঃপর।।

## ज्यांत्र्थत मीका।

গুরু বিনা গতি আছে কার। অপারে করিতে পার গুরু কর্ণধার। কে জানে গুরুর সর্মা, গুরু জান গুরু ধর্মা, গুরু বাদী গুরু বাদা, বল অনিবার। গুরু বাদী বেদ উজি, গুরু দেই জ্ঞান মুক্তি, রসিকের এই বুক্তি, গুরু কর সার।।

#### পয়ার :

खरन कथा जनीतथ, इहेन गोकून।
क्रिमान जना जनातिय कून।
क्रिमान क्रिमान क्रिमानिय क्रिमानिय क्रिमानिय
क्रिमानिय क्रिमानिय
क्रिमानिय क्रिमानिय
क्रिमानिय क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय
क्रिमानिय

আপনি কুলের গুরু, কুল পুরোহিত। একণে আমারে জ্ঞান, শিখান উচিত।। सूनि वटल कल रुख, कमा एनर त्मादत्। थ नवीन वग्रतम तक, हाजितक कारत।। কুলের ভিলক ভূমি, অযোধ্যার ধন। মায়ে কি করিয়ে দিবে। করিতে সাধন।। ध्यंत माधरन विद्या, नाहि कोन वाधा। পরেতে উচিত বটে, মন্দাকিনী সাধা!! यांश वल यक वल, धरनत मक्षत्र। नमद्य नकल जाल, जनमद्य नय । ज्लीत्रथ मरनांत्रथ, वरण मरनांत्ररथ। . জারোহিরা লয়ে যাও, ধরমের পথে।। তুমি গুরু মূলাধার, তুমি সর্বদার। অকুলে পড়েছি জামি, তুমি কর পার।। তবেত বশিষ্ঠ মুনি, রীতি অসুসারে। শৃষ্করের বীজ মন্ত্র, শিখাইল ভাঁরে।। श्रावन काकारण दोक, सूर्यात छेनत्र। মনের তিমির আর, কভক্ষণ রয়।। क्त गरता वरतं तथाम, कमल कृष्टिल। े जांव क्रश शक्त जांत्र, रहोमिटक हुछिल ॥ उक्कि अमत श्रीमि, थक्करत उपन मूजिल दियम जामा क्रूम्टमत रन ॥ फशीतश वाल खाता, क्रेड्ड जारमग। रकामात्र आरहरण आमि, रहरण कति खर ॥ একবে মানস করি, গঙ্গার সাধন।
তুমি দেহ অনুমতি, আমি যাই বন।।
গুরুর আদেশে শিশু, চলে পার পার।
গঙ্গা আরাধন হেতু, মারেরে জানার।।
মা তুমি পরম গুরু, সকলের সার।
আদেশ করিলে করি, কুলের উদ্ধার।।
কেনগো এতেক স্নেহ, এত ভালবাসা।
পিতৃলোক স্বর্গ হেতু, সন্তানের আশা।।
বে পুত্র হইতে কার্য্য, নহিল পিতার।
থাকা না থাকার সম, ভারতে ভাহার।
ভেই সে কারণে যাব, গঙ্গা আরাধিতে
ব্যক্ত কহিছে হয়, এইত উচিতে।।

# সভাৰতীর খেদ

# लय्-जिभमी।

শুনে সভাবতী, বলে একি মৃতি,
কি কথা কহিলি মোরে।
কি বোল বলিলি, কি কেরে কেলিলি,
যাছরে কি কব ভোৱে।।
এ রীতি কেমনা এমন বচন,
কেমনে জীবনে স্বাবে।

ৰূপ গুণ ৰুত, দিয়া যোগ্য যুত, विमना कि श्रेमः नाव।।

আরে পুত্র ভার, ্কথা শুনে মোর, শিরে যেন পড়ে বাজ।

পুরাইয়া আর্ম্ন, পুনঃ করে নাশ क्मन विधित्र काळ।।

আকাশ বাণীতে, দেখিতে গুনিতে, পারেছি সুন্দরস্ত ।

**जूरे** याति त्म, त्रत कि कीवम, ্বংশেতে নাচিৰে ভূত।।

বধিবারে মোরে, কে শিখালে ভোরে, এ হেন কঠিন বাণী।

ভাবি ভোর জন্যে, যোগ্য রাজকন্যা, বিবাহ ঘটাব আনি।।

নয়নের তারা, পুজ পুজদার। লইয়া করিব ধর।

्टम नाद्रथ विवाम, अकि श्रहमामः শরীরে ভাইল ছর।।

क्यू बन बन, जान बन बन কাঁপিছে কথার দোবে।

६ क्यों ना रक, । ७ शाय ना ठक, जननीदत जोब एकाटक ।।

्रीक हरत (क्या, कहितिहरू (रुम,

কাৰলৈ পাঠাব কারে ৷

काबि (गरे (करें) गरिलाम धरे, জাৰাৰ মান্ত্ৰে কি পাৰে ॥ হত মোর ভাগা, নতুবা বৈরাগ্য, इंडेटडं छाहिति (कन। কি পাপ কোরেছি, কি ফেরে পড়েছি, পাপিনী কে আছে হেন।। ছিল যেই ভালে, ভাই কভকালে, পাইয়াছি সেই ফলে। একি কথা ভার, কদি দহে মোর, कितिनि विभागता॥ মা বলিভে আরি, কে আছে আমার, गरव जुरे याष्ट्रभन। विन (जरे जना, कांद्र फिव खना, जुरे यनि याति तन।। কে বলিবে মামা, কে ভূষিবে আমা, हेरांत छेलांत बन । एक कि लिथारण, अहे कि निवारण, जननी वशांत इल ॥ रप्रदम**्डः भिक्ष**, विष भाषा देख, व वागी काशात्र कालि त्रमना भन्नदर्क, वृष्ट्ि व उन्नदक, বিশ্বিবার তরে এলিগা

माना कति क्लांट्य, क्रमा क्लांट्य दमाँद्य, क्रमा द्यानमा किट्या রসিক কহিছে, শায়েনা সহিছে, কঙ্ট দিভেছে কিরেনা

,ज्जीतथ जनगीत निक्छे विलात !!

(कामांत्र मॅं शिलांम उन्तत्र । ताथ अट्त अट्तर ॥ इत कांमूल श्राह्मिनी, इति श्रम तक विद्यतिनी, मर्क्षिती सूत्रः मित्रलिनि, छेत नित्व मखान कर्त्र ॥ कर्म क्षेश्री धर्म ख्राशिनि, महा कल्ट निनामिनि, मॅंशि भन श्रक्षानी, इत्रां श्रक्ष फ्रा

#### পদার !

ना श्रुटन मारम्य वाका, विनिम्न विनिम्न। ।
जनीत्रथ करह कथा, स्थाम किनिम्न। ।
कि वृक्षित्रण कि जावित्य, कि किनिम्न। ।
कि वृक्षित्रण कि जावित्य, कि किनिम्न। ।
भावि हारे शिष्ट काका जूमि कर माना।
धर्म श्रुटथ जननी शाहित्क ।
धर्म कर्माम वाका हाना।।
धर्म कर्माम वाका वर्गन।

জানিরা শুনিয়া বল, এ কোন বিচার। বিদার করিতে মাগো, কি দার তোমার 🕦 यिन ना विभाग देशका बाद्य कार्य । कान कारक लार्श वल, कुश्रवत धन।। তেমনি সে পিতৃ কাল, রহিত সন্তান। থাকা আর নাহি থাকা, উভন্ন সমান।। বিচার করিয়া বল, তবে হয় কাজ। নত্বা সংসারে আসি, পাইলাম লাজ।। না চাহি ধর্ম্মের পানে, না করে বিচার। যে কহে বিকল কথা, কি ফল ভাছার।। আপনি সকল জান, ধরুম করুম। कानिया निरंवध कत, ध कान मत्र। পিতৃ লোক উদ্ধারের, কারণ তময়। তাহে বিপরীত হৈলে, বিপরীত হয়॥ মনুর সংহীতা তত্ত্বে, শুনিয়াছি সার। পিতা মাতা আচার্য্যের, আজ্ঞা মূলাধার।। क्टेंहे (म कांत्रा नाथि, हत्रा धतिका। বিদায় করহ মাতা, করুণা করিয়া।। এ कथा खारा धनि, कतित्रा खारा। काँन्पित्रा काँन्पित्रा धटतं, कनदत्र कथन ॥ আরেরে বাছনি শুনি, একি প্রমাদ। जनका नितं प्रति, कनदकत हैं। म ।। कुरनत जिलक जूरे, जारगाधात धना क्षारहत तंत्रक मिन, क्षिट्स जीवन् ॥३०°

কি কৰ অধিক বাছা, ধিকু ধিকু মোরে। কেমনে পাশরি মুখ, ছাভি দিব ভোরে।। এত বলে সভ্যবভী, ডাকে উভরার॥ কোথার তারিণী গঙ্গে, পুত্তে লছ পার।। ভোষারে সঁপিত্র সুত, ভুমি দেহ জয়। সামারতো নয় পুত্র, তোমার তনয়।। জগতের মাতা তুমি, জগতের সার। যে করে ভোমার আশা, ভূমি হও তার।। ভূমি ভ্ৰন্মা ভূমি বিষ্ণু, ভূমি মহাকাল : দকল ব্যাপিত ভূমি, আকাশ পাতাল।। ঘটে আছু পটে আছ, আছ সব ভূতে। চরণ আক্রা দেহ, ভগীরথ সুভে।। জলে হকু স্থলে হকু, বনে বা কোখায়। যে ৰূপে যে খানে পার, রাখিবেন পার।। তুর্গে গো ছুর্নতি হরা, ভুই মা কোথায়। হুৰ্গমে পড়েছে দাসী, কে রাখিবে পার॥ তুমি দেছ ভগীরথে, তুমি লছ কোলে। এ বেন ভাসে গো ভোর, দয়ার হিলোলে।। সপিতু ভনরে আমি, চরণে ভোমার। তোমার করুণা রক্ষা, কারণ আমার।। किथा चारह कुक हला, 'कुरत्वत मूल। অকুলে শাসীর সুতে, ভুমি দিও কুল।। বন্দির্ভু দেবতা কোটি, জাদি দেবরাজ। নিদ্ধি দাভা গণপতি, নিদ্ধি কর কাজ।।

## गत्नामीका स्थाउतक्रिनी !

যত দেব মত দেবী, যত গুরু । জন। রাসক কহিছে হও, কল্যাণ কারণ।।

## ভগীরথের শিব আরাধন।।

कर निव मक्कत । अमीम अमीम नील कर्छ इत ।। धटमम जटमम शटगम भिष्ठा, उद्यास सूटबम मीटमम मिका, अटमय विटास छन युका, निका मित्रक्षान, विटासम्बत ।। मतन इतन मतन मत्र, कांतन कांतन हतन खन्न, धांतन कांतन जिनक कर्म, ट्रिट्स निमन्न भट्या शेत ।।

#### পয়ার।

এই ৰূপে সভাবভী, বিস্তৱ কহিয়া।
বিদায় করিলা সুভে, কান্দিয়া কান্দিয়া।
স্মরিয়া ছুর্গার নাম, শিশু যায় বন।
ক্রুরে জুর্গার নাম, শিশু যায় বন।
ক্রুরে জুর্গার নাম, বিশেষ পশুর।
ভথাপি সাধনে নাই, শিশুর কশুর।।
ভাবিয়া গুর্দার পদ, প্রবেশিয়া বন।
যোগাসনে বসি করে, শিবের স্থিন।

করিলা বিস্তর স্তব্য কহিতে বিস্তর। কেখাহে করুণাময়, আগুতোৰ হর।। ভূমি বেদ ভূমি বিধি, ভূমি ভন্ত সার। ভূমি জগতের গতি, জগৎ ভোমার।। প্রকৃত্তির সার তুমি, নিকৃত্তির মূল। তুমি জীব ভুমি জাতি, তুমি সর্ব কুল।। অনাদী অনস্ত ভূমি, ভুমি বিশ্বাধার। ভূমি রাজা ভূমি রাজা, ভূমি দে বিচার।। ভুমি স্বর ভুমি সুর, ভুমি সে সংগীত। যে জানে সারের সার, সেইত পণ্ডিত।। ভোমারি সংসার সব, তোমারি বিষয়। যাহারে তোমার দয়া, সেই ধন্য হয়।। তুমি যাগ তুমি যক্ত, ভুমি যোগ ধ্যান। তুমি যে পরম ব্রহ্ম, তুমি ব্রহ্ম জ্ঞান।। দেহের বৈরাগ্য ভূমি, বিবেকের ৰূপ। গতায়াতে লিঞ্চ দেহ, আপনি অনুপ।। চিৎস্বৰূপ চিদানন্দ, চিতা ভন্ম গায়। শ্মশানে সংখারে সম, জ্ঞান কেবা পার।। ্ অজ্ঞানের জ্ঞান তুমি, জ্ঞানের মুক্তি। বুঝিতে ভোমার অন্ত, কার বা শক্তি।। গলায় অন্থির নালা, কণ্ঠেতে গরল। निष्य कथन नट्यः समय गर्ना। **এই बट्टिंग इंगी तथ, क्रिटिंग स्टर**। হাজার বৎসর পরে, জানেন ভৈরব।।

স্তবে তুফ শঙ্করের, রূপা হৈল তায়। আকাশ বাণীতে শিব, কহিলা উপায় ৷ আরেবে ভক্ত ভগীর্থ বাছাধন। এ নব বয়সে তোর, যে দেখি সাধন। যে তোর ভকতি দেখি, যে ভোর মনন। ছরায় করিবে গঙ্গা, ধরায় গমন।। যে ৰূপ স্তবেতে ভৃষ্ঠ, জন্মালে আমার। সেই ৰূপ স্তব তুমি, করহ গঙ্গার।। শুনেছ হেমন্ত নামে, জাছে গিরিবর। তাহার ছহিতা গঙ্গা, ৰূপ মনোহর।। অনেক পুণ্যের ফলে, তাঁর শুভ কাল। হেনকার মেনকার, সমান কপাল।। अथन উচিত शका, माधरनत (इजू। চিস্থার দাগরে বান্ধ, ভকতির সেভু।। যখন হৃদয়ে আনি, ভক্তি থুইবা। কঠোর তপদ্যা কলে, গঙ্গায় পাইবা।। চেষ্টা কর লভ্য হবে, জ্ঞানের অঙ্কুর। প্রম না করিলে কোথা, প্রম যায় দুর।। আকাশ বাণীতে পায়ে, গঙ্গার উদ্দেশ। ভগীরথ করে হিম, জালয়ে প্রবেশ। কঠোর তপ্যা করে, ধেয়ানে বসিয়া। রসিক কহিছে গঙ্গে, হের মা আসিয়া।।

## ভগীরথের গঙ্গা আরাধনা।

## ত্রিপদী।

তেয়াগিয়া অনাহার, বন ফল করি সার, কঠোর তপদ্যা করে রায়।। তাজে জীবনের ভয়, জীবন পানেতে রয়, এইকপে কত দিন যায়। व्यमांशादत एक (मरु, अमा शटक (मर्थ) (मरु, मना मुर्थ अमल कहन। মনে যে সাধন ছিল, পঞ্চ তপা আরম্ভিল, কত তার কহিব ব্যসন।। কারণে কারণ বারী, কঠোর করিল ভারি, কারণ বুঝিতে কেবা পারে। কত দিন বোষে যায়, মনে গঞা গঞা গায়, গঙ্গা না কিরিয়া চান ভারে।। দারুণ ঘর্মের কাল, তপনের তাপে ভাল, विष यन वृश्विष्य वाष्ट्रि। পতঞ্বিবরে ধায়, মাতঞ্গীতল চায়, कृषित नमान कांटि मारि॥ म्हिकात्न ज्ञीतथ, शाहरू श्रूतात भथ, চারিদিকে জালিয়া পাবক। উৰ্দ্ধ পদ অধোমুণ্ডে, নম্বমান অগ্নি কুণ্ডে, খন্য সেই মান্নের সেবক॥

নে কঠোর করি লায়, কি কঠোর বরিষায়,

শরতে ছঃথের নাহি পর।

শিশিরে বসন হীন, কিবা রাভি কিবা দিন,

শীতে রন জলের ভিতর।।

বসত্তে যোগীর মন, যোগে করে উচাটন, মদনের তীক্ষ ফুলশরে।

মলয় বাভাস বয়, সাধক বাধক নয়, ভগীরথ হোসে জপ করে।।

বারোমানে ছয় ঋতু, কদাচ না হয় ভীতু, ভগীরথ সাধকের মন।

নাই ভৃষ্টা নাই কুধা, সুধুগঙ্গা নাম সুধা, অৰ্গনিশি পানেতে মগন।।

এরপ কহিব কত, অযুত বংসর গত, তবে গঙ্গা জানিলেন মনে।

ভকতে করিতে হল, তথানি ভূতের দল, পাঠালেন ভূতেশী কাননে।।

লাগিল বিষম বাদ, ভৈরবের ভীমনাদ, বেতাল বেতালে নাচে গায়।

দানা গার তানা নানা, পিশাচে পাড়িছে হানা, ঘোর দার যুক্তলে ঘটার।।

যোগিনীর ধেই ধেই, ডাকিনীর থেই থেই, পেতিনীর নাচনি বা কত।

তবে ভগীরখে হেরে, বনের চৌদিক ঘেরে, নাচিতে লাগিল ভূতশত।।

( 9 )

ডাকি কয় আরে রে রে, বনমাঝে তুই কেরে,
কার বেটা বাজি কোথা তোর।
আপন মঞ্চল চাও, এখনি উঠিয়া যাও,
নতুবা প্রমাদ হবে ঘোর।।
কাল যাতে পরাজয়, থাকুক ভূতের ভয়,
সাধকের কি করিবে হানি।
মহা সিদ্ধ ভগীরথ, না দেয় যাইতে পথ,
কাণেব কুহরে ওই বাণী।।
কি করে ভূতের গোল, ভার সদা এই বোল,
দেখা দেহ কোথা মাতো গঙ্গে।
রসিক কান্দিয়া কয়, আর না বিলম্ব সয়,
লহ শিবে জলের তরঙ্গে।।

छगीद्रध्यं निक्छे शक्रांत आश्रमनः

. পরার।

দেখে শুনে ভক্ত ভগীরথের সাধন।
গঞ্চারে ভৈরব গিয়া, কহিলা তথন।।
ধার্মিকের সার ভিনি, সাধকের সার।
কে আছে ভাঁহার ভুলা, ভকত ভোঁমার।।
শুনিরা চঞ্চল হৈল, পার্মভীর মন।
স্থির নহে ভীর সম, গেলেন তথন।।

य श्रीत चारहन वित्र, ज्व जनीतथ। ডাকিয়া বলেন বাছা, চাহ কোন পথ।। এসেছি ভোমার মাতা, আমি গলা এই। वह वत ज्लीतथ, मत्नांतथ (गरे।। यে বব চাহিবে দিব, ওরে ভগীরথ। চাহ সে করিয়া দিব, কৈল'দের পথ !! ইচ্চের রাজত্ব চাহ, ভাও দিতে পারি। किया ता गमन भूत, १७ व्यक्तिती।। অরুণের রখ লহ, বরুণের ভার। কুবেরের চাহ যদি, লুটিতে ভাণ্ডার।: ट्यामादत अदमम् माहि, मिट भाति नव। যজ্ঞের আত্তি আর, সংগ্রের বৈভব ।। ভগীরথ বলে মাগো, ভাতে নাহি আশ। কাজ কি ইশ্রহ আর, কাজ কি কৈলাস।। কাজ কি বৈকুপ্ত ধাম বিরিঞ্চির পুর। क्रक्रगा क्रिज्ञा मत्नाष्ट्रः स क्र कृत ॥ অযোগে নগরে মাগো, তপনের কুল। যে বংশে সগর জন্মে, নরের শার্দ্ধল । ষভ্রত পুত্র তার, কপিলের শাপে। জীবন ত্যজিল ভারা, কুবচন পাপে।। নেই সে সুর্য্যের বংশে, আমি ছুরাচার। কেমনে করিব মাগো, কুলের উদ্ধার।। কি হবে ভারিণী গঙ্গে, এই ঘোর দায়। তাপনি উপায় কর, ভরসা ও পায়।।

यांटल मीन मिन शाय, वांटबक हाहिया। नीत्नत क्षर्राण रता, कलाग कित्रता।। ভূবি রাত্রি ভূমি দিন, সন্ধ্যার আকার। जुमि त्र विनाभ कत्र, मत्नत्र जांधात ॥ কি আর বলিব গঙ্গে, পতিভপাবনী। स्र्राकुन উদ্ধারিতে, इইবে জননী।। क्रभा कति धनाधारम, कतिया शमन। প্রকাশি নহিমা মোর, পুরাও মা মন।। পাৰ্বতী বলেন বাছা, ওই বভ দার। সকল পারিব কিন্তু, না যাব ধরায়।। ত্রন্ধ কমগুলে থাকি, বিরিঞ্চির পাশ। কেমনে করিব আমি, ভ্রন্ধারে নৈরাশ।। বিরিঞ্চি দিবেন কেন, যাইতে তথায়। রাজা বলে কি কারণে, বঞ্চ মা আমায়।। স্বৰ্গমৰ্ক্ত বুসাহল, সকল আপুনি। वषा बाध बाधार करनी (इन एनि।। পার্বভী বলেন ব্রহা, ভকতের সার। তেকারণে বাঁধা আছি। নিকটে তাহার।। ব্রহ্মার তপস্তা ত্রি, কর এইকণ। রুসিক কহিছে ভবে, পাইবে চরণ।।

ভগীরথের ব্রহ্মা আরাখনা।
ভূলনা দেখে দিনভান্ত। সুর নরকান্ত
ওহে কর নরকান্ত।। হরি নাভী পদ্দ,
বাসী, দেহ পাদ পদ্ম আসি, প্রীচরণ
অভিলাষী, রসিক নিভান্ত।। .

#### প্ৰাৰ ৷

এতবলে গঙ্গা যান, আপনার ঠাই। ভগীরথ বলে কোথা, রহিলে গোঁসাই ॥ কোথা হে সাবিত্রী পতি। ত্রিলোকের ধন। क्रम्बंत कांत्र क्रि, धर्मात कांत्र ॥ নুজন করিলে সৃষ্ঠি, বিধি আর বেদ। যেই তুমি সেই প্রকা, সেইত অভেদ।। বিকার বিহীন বিভু, নিরাকার যেই। ভক্তের কারণ ভুমি, সাকারেতে সেই।। সকলে ব্যপিত ভূমি, জলম্বল বন। তোমার নিয়মে ফিরে, ভাক্ষর প্রন।। তোমার সূজন জীব, ভোমাতে বৈভব। তুমি রাথ তুমি মার, তুমি হর সব।। ভূমি দাও কুল শীল, ভূমি দাও মান। मुक्छि यूक्छि छन, त्वंत्मत विधान ॥ **धरेक्टम क**शीत्रथ, क्तिलन स्व। স্বস্থানে থাকিয়া জ্ঞান, স্বানিকেন সব।। चानिया वर्तन वर्त, तर छतीत्रथः। वंद्र लक्ष्म क्ल कद्र, मानरमद्र शर्थ।।

ज्जीतथ वटन वत्, कि निटव (जीमाई। रहेटल जारमण उत्, शका लट्ड गहि।। বিবিঞ্চি বলেন বাছা, এ আরু কেমন। क्रियान कहिरल खिन, तहन धिमन।। আমার সাধন ধন, তুমি চাও নিতে। চাহিলে কেমনে জামি, পারিব তা দিতে। কোরেছি কঠোব কত, পাইরাছি ভেঁই। গুরু দন্ত তত্ত্ব মানি, কেবা কারে দেই।। य विलाल तम विलाद, मा विलाद आह । **९** कथा कांट्र विष, जांक्ट्र आंगाव ॥ অপর চাহিবে যাহ। লহ এইকণে। **७कथा में आंत्र कष्ट्र, ब्रांना ना तमरन !!** আপুনি যেমন কর, তেমন আশ্য। ইথে বিপরীত হৈলে, বিপরীত হয়।। अजीवय वटल यमि, ना निटव शकांश। কাজ কি বরেতে আর, কাজ কি তোমায়।। জানিত্র যেমন তুমি, গুণের আকর। তুমি যাও बद्धालाक, आमि याई घर ॥ অভাগার ভাগা কোথা, ভাল হইয়াছে। আমার ৰূপাল তব্য কিবা দোষ আছে।। ভिম বল ভাল করি, ভালে করে দুর। দাতাত নির্ভুর নর, কপাল নির্ভুর।। **এই करण फ्लीउथ**, कहिर्छ वहने। উভয় শস্তুট হৈল, ত্ৰহ্মার তথ্য !!

কি করে ভক্তের কথা, এড়াইতে দায়। ष्यक्रिकांत्र कतित्वन, मैंशिष्ड शक्रात्र॥ ভবেত গঙ্গার বেগ, করিতে ধারণ। ভগীরথ আরম্ভিল, শিবের সাধন।। ওখানেতে ত্রদাপুরে, বিরিঞ্চি যাইয়া। গঙ্গারে বুঝান সব, সম্বাদ কহিয়া।। बाइवी रत्नम (कम, देक्तन (इम भनः क्रिस्त याष्ट्रेव आगि, त्यिनिमी कृतन।। কলিতে হইবে মহা, পাতক অশেষ। পুদ্রেতে করিবে যত, ব্রাহ্মণের ছেব।। ত্রাহ্মণে করিবে গব, কুনীতি অভ্যাগ। मा कतिरव मन्ना। यश, ना कतिरव नाम।। মায়ে না পালিবে পুজ, কলতে ভূষিবে। অবিচার যত বৰ, কলিতে হইবে। श्वधिक इट्टेंटिन मर्के, तमनीत कूल। পাশ কথা কয়ে সব, হারাইবে মূল।। अमन कांनित्रा कांत्रि, दक्मरन याहेद। ষাইতে মরমে ব্যথা, জ্বধিক পাইব॥ রসিক কহিছে মাগো, কেন ভাব আর। হইবে কলির পাপ, করিবে নিস্তার।।

## शक्षांत आंभमन।

চলে গঞ্চা কভারকে। তর তর তর তর জলের ভরকে।। কুল কুল কুল কুল ডাকিছে সঘনে, চিক চিক চকদক রবির কিরণে, কল কর কল কল শব্দ কি জীবনে, গমন শমন ভয় ভক্তে।।

#### প্রার।

তবে বিধি বিধিমতে, গঞ্চায় কহিতে। সম্যতা হলেন মাতা, ভূলেকে আসিতে।। হোথা রাজা ভগীরথ, সাধকের শেষ। কৈলানে কহিল গিয়া, শিবেরে বিশেষ।। কি করি উপার গঙ্গা, কহিলেন যেবা। উছেগ হইল বেগ, ধরিবেক কেবা।। শঙ্কর বলেন বাপ কি ভাবনা তার। প্রতিজ্ঞা করিত্ব বাছা আমার সে ভার।। শুনে ভূফ ভগীরথ ত্রহ্মপুরে গিয়া। কহিল ভক্ষার কাছে বিশেষ করিয়া।। बका स्टान रम्हे कथा जननीरत कन। ভবে অভি বেগবতী ভগবতী হন।। তীর সম নীর ভার বেগেতে ধাইয়া। পড়িছে শিবের শিবে থাকিয়া থাকিয়া।। বিষম জলের ডাক করে কুল কুল। ना भारत गहिएक मिर रहेता जाकुन।।

नकुम राक्रिम रात्र (कार्य क्रि छत्। वाशिया करोत्र शका राकात वर्गत।। হার গঙ্গা কোথা গঙ্গা বলিয়া। ভগীর্থ কান্দে কত বিনিয়া বিনির।।। शक्रा (परि शक्रा (परि शक्रा (परि रत। বৰম বৰম ৰম বম মহেশ্বর ।। প্রসীদ প্রসীদ হর কৈলাদের পতি। কোথায় রাখিলে গঙ্গা অগতির গতি !! এই যে ভোমার শিরে হইলা পতন। জানত পারেছি কত যতনে রতন।। ভোমার প্রসাদে মাকে আমি যাই লয়ে। আশুভোষ দেহ গঙ্গা আশুভোষ হয়ে।। ভবে কত দিনে শিব হাসিয়া হাসিয়া। कहे। टेस्टक रमन शका वास्ति कतिया।। উদ্ধার করিতে সব সগর সন্তান। তিন্ধারা হয়ে গঙ্গা তিন ঠাই যান।। মন্দাকিনী স্বৰ্গপুর ভোগবতী তল। हिल्ला जनक नन्ता जननीमधन ॥ जात्श यान ज्ञीतथ शथ (मथारेशा। প্রভিল গঙ্গার নীর হিমালয়ে গিয়া। পর্বত গল্পরে পড়ি চারিদিকে ধান। ত্তিপথ গামিনী পথ খুকে নাহি পান।। কহিলেন ভগীরথে ঐরাবতে চাই। সাধনা করহ তার তবে পথ পাই।।

দশনে চিরিয়া গিরি করিবেক পথ।
তবে সে চলিবে ভোর মনোরথ রথ।।
অননী কহিলা যদি বচন এরপ।
মাথের শাক্তায় তবে গতে ভতে ভূপ।।
নে নহে সামানা গল দেবের সমান।
কত দিনে রাজারে হইল দয়াবান।।
বলিল গলারে বল ভজিতে আমায়।
ভগীরথ সেই কথা মায়েরে জানায়।।
গঙ্গার হইল ক্রোধ গজের উপর।
রিসিক কহিছে সবে গুন ভাতঃপর।।

ঐরাবতের প্রতি গঙ্গার রোষ। দীর্ঘ-ত্রিপদী।

গতেতে করিল দোব। গলার হইল রোব।
বলে একি বিপরীত হার।
কিচ মুখে উচ্চ কর, বল হীনে সরে রর,
বলিফ সহিবে কেন তার।।
পঙ্গুতে লভ্যায় গিরি, সিংহের উদর চিরি,
শৃগালে করিবে রক্তপান।
বামনে ধরিবে চান, একি শুনি পরমাদ,
দেখিব কেমন বলবান।।

পশু হয়ে এত নাট, আমরি উপরে ঠাট, হায় ছংখ জানাইব কায়।

বল বৃদ্ধি আর ধন, পায় যদি নীচ জন, মহতে ভাবয়ে তৃণপ্রায় ।।

এখনি আসিতে বল, তবৈত বুকিব বৈল, মম বেগ করুক ধারণ।

জ্বিলে জামার ঠাঁই, যে বলে করিব ভাত, দেখা যাকু বলিষ্ঠ কেমন।

রাজা কর ঐরাবতে, ঐরাবত দেই মতে, মত্ত করি আইলেন তবে।

करों ना कतिल छत्र, स्थिश्यास्त मकरों तत्र, में:छोटेल करों खित त्रस्य।।

ভবে গজা বেগে ধার, বিষম তরঞ্ভায়, বহে ঢেউ প্রবিভ সমান।

কুলকুল ঘন ডাফ, লাগিলে জলের পাক, এক ভূগ হয় শতখান।।

সে জল যেখানে পড়ে, গর্কতে পর্দ্ধত নড়ে, পাছাত ভালিয়া করে চুর।

বাজে যেন পড়ে বাজ, মেঘের ইইল লাজ, পশ্চাৎ কেশরী কত ছুর।।

কুল কুল কল কল, রবে কিভি টল টল, কোথায় পড়িয়া রহে করী।

জলের তরক্ষ যার, ঐরাবত থাবি খার, কে আর তুলিবে তার ধরি।। ভয়ে করী কম্পমান, গঙ্গা গঙ্গা গুণ গান, বলে প্রাণ রাখগো শক্ষরী।

যেমন করেছি গর্কা, তেমনি হ**ইল খ**র্কা, জানিলাম তুমি সর্কেশ্বরী।।

ভূমি শোক ভূমি রোগ,ভূমি মা জীবের ভোগ, শিবের সর্বস্ব ভূমি শিবে।

ভুমি লক্ষী সরস্বভী, ওমা অগতির গতি, আর কেন নাশ ক্ষুদ্রজীবে॥

বুরোছি যেমন বল, পাইয়াছি প্রতিফল,
কুপায় পাদরে কর দয়া।

তুমি ক্লফ তুমি জীব, তুমি সেই সদাশিব, বেদে ব্ৰহ্ম তুমি গো অভয়া।।

বুরিয়া গজের মতি, তুর্মী হৈলা ওগবভী,

প্রাণ রক্ষা করিয়া তাহার।

বেগেতে চলিল জল, জল করে কল কল, তরুল বহিছে অনিবার।।

লাগিয়া গঙ্গার ঢেউ, বাকী না রহিল কেউ, যেবা মার পরশ পাইল।

সকলে বৈকুপ্তে যায়, রসিক জানন্দে গায়, যেইৰূপে জাহুবী আইল।।

# মনোদীকা স্থগতরঙ্গি। জাল মুনির গঙ্গাপান করা।

মারের কি মহিমা বলিহারি। যম গম তম নাশ কারণ কারণ বারী। তরঙ্গে তরঙ্গ কত, পাতক তরঙ্গ হত, ভবের তরঙ্গ যত, বিনাশ তরঙ্গে তারি।।

#### পরার।

এ কপে নাশিয়া ঐরাবতের গৌরব। করিয়া চলিল গঞ্চা কুল কুল রব।। উপনীত হোরে জহু যুনির আশুম। সেখানে জলের বড় বাড়িল বিক্রম।। আছিল একক মুনি যোগেতে বসিয়া। গেল সে মুনির কোশা তরক্ষে ভাসিয়া।। ভাঙ্গিরা মুনির ধ্যান কম্পিত হৃদয়। অস্ত গিরা রস হৈল রোবের উদর।। পড়িয়া যোগীর ঘোগে আর কোথা যান। ধরিয়া গ**ণ্ডুবে মারে মুনি ক্**রে পান।। তবে রাজা ভগীরথ গঙ্গা না দেখিয়া। হ**ইল উন্মা**দ প্রায় ভাবিয়া ভাবিয়া।। হার মা কোঁথার গঙ্গা কোথা আমি যাই। यां हेटल मारब्रद्ध रिवा कान चारन शाहे॥ क निम शक्रांश हित कि नाधिम बाम ! হার। হার। হার। বিধি, একি পরমাদ।।

श्वादत कलान काटन मटम मदत्त्र है। আনি বলি ছুখে ছাড়ি ছঃখছাড়ে কই।। ভাগ্যে না থাকিলে ভোগ কে কারে ঘটায়। ইড'সর গাঁথা মাচ চিলে ধরে থার।। এই ক্রেপ ভগীরথ বিস্তর ভাবিয়া। মুনিরে নিনতি করে কান্দিয়া কান্দিয়া। नम्य इहेश सूनि कछकाल दहे। ভাকিয়া বলেন আরে মাতৈ মাতৈ ॥ ना कत जावना वाहा करनोत छत्त। ব্রজাণ্ড উদরে যার সে মোর উদরে।। আরে বাহা ভগীরথ বাঞ্চা যেই ছিল। ভোর পুণে। মোব জন্ম সার্থক হইল।। উদ্বূপবিত্র হৈল পাপ গেল দুর। ভাপের বিনাশ হৈল বাবেপর ঠাকুর।। অনেক ভাবিয়া মূনি অনেক বিচারি। উরুত চিরিয়া গঙ্গা করিলেন বারি।। একবার হরে জয়ু মুনির আহার। এ হেডুলায়বী নাম হইল তাহার।। তথা হৈতে মহাদেবী মহাবেগে যান। কত কব এড়াইল কত্মত স্থান।। তবেত প্রয়াগে মাতা আসিয়া তথন। ज्जीत्रथ क्लिकांतिका शरभत कांत्र ॥ त्त्रहेशात्न ज्युक्ती यसूनांत्र स्वा। जमानि तरबट्ड जांत मार्त्य थांन दिया।।

কি কব তিনের যুক্তে মহিমা অপার।
এই হেতু যুক্তবেণী নাম হৈল তার।।
মন্তক মুগুন করি যেবা সেই স্থলে।
পিগু দেয চারি কল পায় সেই কলে।।
অভয় মাগিয়া মাতা জাত্রবীর গান্ধ।
রচিয়া বসিকচন্দ্র গঙ্গাগুণ গায়।।

## সগর বংশ উদ্ধার

## পর্ব :

প্রেরাণে পশ্চাৎ করি হর্ষিতা হইয়।

চলিলা অচল কন্যা তরঙ্গ বহিয়া।

নানা দেশ এড়াইয়া ছাড়াইয়া দুর।

কাশিতে আগিতে সুথ হইল প্রচুর।।

তবেত ত্রিবেণী আগি উপনীত হন।

তিতীয় প্রেয়াগ যারে পণ্ডিতেরা কন।।

পেখান হইতে পুর্কে যমুনার গতি।

পশ্চিম দিকেতে যান দেবী সরস্বতী।।

বুক্ত হিল তিনজনে মুক্ত হরে যান।

বুক্তবেণী মুক্তবেণী একই সমান।।

সেথান হইতে গঙ্গা বাহির হইয়া।

দরশন দিল বৈদ্য বাটীতে আগিয়া।।

কলীকাতা কালীঘাট গড়িয়ার বন। পশ্চাৎ রাখিয়া করে দক্ষিণে গমন।। ব্যস্ত হয়ে যান মাতা সুস্থ নাহি রন। स्यामुयी मंगीमुयी मञ्जूयी इन।। এমনি চলিল গঙ্গা কুল কুল ডাকে। তীর তারা উক্কাপাৎ কোনখানে থাকে।। প্রবন হরিয়া যায় দেখে যায় বেগ। भटनत अधिक इस मंद्रमत छेएवत !! পাতালে পড়িয়া জল চারিদিকে ধায়। যেশানে সগর সুত তাজিয়াছে কার।। জলের পরশে ফুটে হৃদয় অমুজ।-**अक अक जन देश्ल हार्ति हार्ति भूग ।।** थनादत मधत श्रृद्ध थना ज्हीतथ। षाहेन जिनम रेहरक् कुसूरमं तथ ॥ ডবেত চড়িয়া সেই রথের উপর। ভগীরথে ডাকিয়া কহেন পরস্পর।। ধন্য পুত্র ভগীর্থ ধন্যরে তোমায়। ধন্য তোর রত্নগর্ত্তা সভাবতী মায় ॥ কি বলিব ভোৱ গুণ কি কহিৰ আর। মহাপাপী পুর্বকূলে করিলে উদ্ধার॥ গুণেতে শীতল করে সকলের প্রাণ। কুলের সুপুত্র আর ফুলের আদ্রাণ।। সুজনের বুদ্ধি আর দিবসের আল। वुकिया (मथ्दत वाहा नवाकात छान।।

এমত বিস্তৱ থাকা কহিয়া তথ্ন ( क्यालिक्षन पित्रां करत वषन कुमन ।। চিরজীবি হও বাছা দদা রও সুখে আশীর্কাদ তোবে কি করিব একমুখে।। দে কাজ করিলি বাছা কহিব কি আর। ধ্রাধানে এই য**শ বু**ষিবে তোমার !! এতেক বলিয়া সবে হইয়া বিদায়। পুষ্পক বিমানে চড়ি বৈকুণ্ঠেতে যায় !! त्य त्यथात्न कौरक्छ, यक मदत हिल। মারের পরশে লব, তরিয়া চলিল।। এক জন হৈতে হয়, অগতের হিত। সে জন কেমন জন, বুঝহে পণ্ডিত।। ধন্য সেই ভগীর্থ, ধন্য তার মন। प्तरभाव सक्रमकाती, यात्रात माधन।। करनक सूजरन करत, मन मिक खाल। কে কোথা কুজনে কার, করিয়াছে ভাল।। সেই হৈতে এই গঙ্গা, আইল ধরার। প্রণাম কররে মন, জাহুবীর পার।। वृक्षिया अनिया हल, धनावाम त्रात ! तिगिरकरत स्थम जुमि, जुवारेखना जरव ॥

সগর বংশ উপাধ্যান সমার।

## मक्ष्यक डेशाथान।

কালাঁ না ভজিয়া ওরে মন। এ ভব সংসারে কর কি ধন সাধন। না বলিলি কালা কালা, কালীপদে না বিকালি, কোথার লুকালি কালা, ভকতি সেধন। মাথিয়া বিষয় কালি, কাটাইলি চির-কালি, রসিকের আজিকালি, নিকট মরণ।

## PRINT.

জীবন সঁপিয়া মাতা, জাহ্নবীর পায়।
তুষিত কররে গঙ্গা, মৃত্তিকায় কায়।
কালীঘাটে কালীকারে, প্রণাম করিয়া।
চলরে শ্রীরন্দাবন, হর্ষিত হইয়া।।
শুনেছি এ কালীঘাট, পীঠের প্রধান।
বিশেষ রুতান্ত কই, শুন সে বিধান।।
দক্ষের যজেতে সতী, তাজিলেন কায়।
গোকেতে মোহিয়া শিব, লইল মাথায়।।
সেই সে সতীর অঙ্কা, কেশ্ব কাটিল।
কহিব একায় পীঠ, যে মতে হইল।।

रय (३ क् क्रिन यक, मक अवांशित। যে হেডু যজেতে কায়, ত্যজিলেন সভী।। বলিব রুত্তান্ত তার, বিশেষ করিয়া। क्रिक्त इहेशा मन, शुन मन मित्रा ।। পুর্কেতে করিল যজ্ঞ, ভৃগু ঘ্নিবর। यद्कारक काहेल यक, त्मनक! किन्नह ॥ দেবঋষি ব্রহ্মশ্বনি, আইসে বছতর। নারায়ণ পরায়ণ, বিভর বিশুর॥ ध ११न नमदत्र एक, उथात्र आहेल। विधि विदु इत चिना गटव मङासिन।। দক্ষের ডুহিতা সতী ক্রামতা শক্ষর : শক্ষর না সভাঘিল হৈল ক্রোধান্তর।। त्रवादन जानिशा देकल यक आंत्रखन। मात्रदश्दत्र मिमञ्जद्य देक्ल निरश्चिम ।। বিশেষ করিয়া দক্ষ বলয়ে তথা। নিমন্ত্ৰ থেৰূপ করিবে তপোধন।। ভুবনে যতেক আছে, সুরামুর নর। मकत्व विवाद गांख, वाकी ताई इत्।। **मटक्कत आंख्वांत्र सूनि नात्रम उर्वन।** হাসিয়া হাসিয়া গেল হরির ভবন।। বিনামে হরির গুণ বীণায় গাইয়।। প্রণমিল হরিপদ, পঙ্কজে পড়িরা॥ কেশ্বে এ সৰ কথা কহিয়া সম্বর। উত্তরে ত্রন্ধার স্থান উত্তর উত্তর ॥

7.

পাতাল ভুত্তল স্বৰ্গ সকলে কহিয়া। ভাবিল এখন কৰ কৈলাসেতে গিয়া !! रुदार निकार कथा करिया क्षकान ॥ করিব এ ছার যক্ত এখনি বিনাশ।। শুনিতে বিশুর ছঃখ কহিছে অশেয। পতক হইরা করে মাতকের ছেব।। সিংহের উপরে কেন শুগালের রোম। कांत्र विधि निर्द्शाद्यत अरम अरम दमाय।। এত কেন অহন্তার একি অভিনাব। যেখানেতে তমঃ গুণ সেইখানে নাশ।। এতেক ভাবিয়া মুনি বাধাইতে বাদ। देकवादम भिटवटत शिश्रा देकना तम मन्त्रीम শুনিরা হাসিল শিব ইক্তিভে ভাষিল। বলিতে সভীর কাছে নিষেধ করিল।। নাবল কহিল যাতে ভোমার বারণ। ভবে সে কহিব আমি কিসের কারণ।। একে ভিনি রণজয়ী আরে পাবে গোল। শ্বায় ভূলিয়া দিবে যাৰ যাব বোল।। একপে নারদ কঙ্গে প্রবোধের বাণী। विजिक कहिएक श्रिक यथाँत्र भिकानी ।।

## মতীর নিকটে নারদের গমন।

ভারা নামে বাজ্বয়ে নেভারা। বল যে গোবিন্দ সেভারা॥ স্বর্মে দেবভারা ভারা, সদা বলে ভারা ভারা, সন্দেহ ভারার গুণ, জানেন জানে নেভারা। স্থাংশু তপন ভারা, যার আজাবর্ডী ভারা, শিব নয়নেব ভারা, রসিক ভাবে সেভারা॥

#### প্রার ।

বিনামে গভীর গুণ বীণার গাইয়া।
চলিল নারদ বেগে নাচিয়া নাচিয়া।।
ভারিণীর বিদ্যমান গিয়া কহে বাণী।
কহিব ছঃখের কথা শুনগো ভবানি।।
ভোমার জনক দক্ষ গুণের ঠাকুর।
যে কোরেছে যক্ত শুনে ছঃখ হয় দুর।।
নিমন্ত্রণ করিয়াছে সকল ছুবন।
কেবল রহিল বাকি দেব জিলোচনা।
এইত ছঃখের কথা হরে জানাইতে।
নিষেধিল আশুতোৰ ভোমারে কহিছে।।
আনি না জানামে জাজি কেমনে যাইব।
কেমনে এমন কথা গোপনে রাধিব।।

ভোমাদের বাপে, ঝিয়ে কিসের বিবাদ। গমন উচিত বটে শুনিয়া সংবাদ।। জামতা শ্বশুৱে জন্দ সদা দেখা যায়। ব্দনকের দোখ কোলা ধরে ছহিতায়।। আজিত রাগের রাদ্ধি কালি হবে কর। করিলে থকতা কোখা চিরদিন রয়।। ্বুঝিলা কর মা কান্স মনে ভাব ঐ। দিন শার ক্ষণ যায় কথা যায় কই । এতেন কহিয়া যদি গেল মুনিবর। পতির নিকটে সতী চলিল সম্বব।। বন্দিয়া পতির পদ কহিছেন সতী : যাইতে জনক ঘরে দেহ অনুমতি !! শুনিত্র করেছে যজ্ঞ জনক আমার। বারেক যাইব আজা হইলৈ তোমার ॥ শুনিরা হরের হরে বদনের বোল। বুঝিল নারুদে বেটা বাধাইল গোল।। कान्तिया विषया भन कहिएहन गर्छ। ष्यां अटमांच क्रम. (मांच त्रांचेश मिनकि।) ভাবিছ অপার কেন গণিছ প্রমাদ। আমি সে কুমুদ ভূমি গগণের টাদ।। আমি সে ভোমার নাথ ভূমিংসে আমার যেৰে'কি জানম। মন কেমন ভোমার। ্ভূমি মোর ধন জন ভূমি মোর বল। ' ' ভোগারি কুশলে হয় আমার কুশল।।

ভিনিয়া শক্ষর কন করেছে ধরিয়া।
কেমনে যাইব বল কেমন করিয়া।।
বিহনে আহ্বান কেন যাইতে চাহিলে।
কোথায় থাকিবে মান তার কি ভাবিলে।।
সতী কয় মহাশয় তুলে রাঝ মান।
যাইব পিতার ঘরে কিসের আহ্বান।;
সতীর বচনে নন সন্মত শঙ্কর।
দেবী হন দশবিদা৷ ক্রোধের উপর।।
ভয়েতে কম্পিত হর নাহি কন বাণী।
বিসক্ কহিছে কন্ত হও গো ভবানি।।

मडीन मकालए शहा

### जिलमी।

দেখে মূর্ত্তি ভরস্কর, ভরেতে কম্পিত হর।
বদনে নাহিক সরে বাণী।
উরু কাপে গুরু গুরু, হিয়া করে ছ্রু ছুরু,
কি করি ভাবেন পুলপাণি।।
সভী যান রাগে রাগে, অন্তরে যাতনা জাগে,
কত না ভাবিছে ক্রোধভরে।
যাইয়া কণেক দুর, চাহিয়া কৈলাসপুর,
প্রভিলেন বিপদ সাগরে।।

এক পদ ৰাজাইয়া, আর পদ পিছাইয়া। যাইতে ভাবেন কত হংব।

মন হৈল থালাছন, প্রাণ করে উচাটন, কক্তাৰ কোথা আছে সুধ।।

কি করি কোথায় যাই, কেমনে সন্মান পাই, চৌদিকে বিপক্ষ সব হাসে।

এখানে হারামু কাজ, সেধানে পাইব লাজ, হাররে কুবুদ্ধি সব নাশে।।

ওধানে ভাবেন হর কেমনে থাকিব ঘর। কেমনে আসিবে মোর সভী।

নন্দীরে কহেন ধীরে, দেখ দক্ষনন্দিনীরে. কোথা যান ভাজিরে বসভি।।

जामात मकल हां निकार बतात यां स

कि कानि घण्टित दर्शन मात्र।

চঞ্চল হোতেছে মতি, কোথায় যাইল সতী, বারেক দেখিয়া এস তার।।

থাতে নাহি হয় দ্বন্ধু, যাতে না ঘটেরে মন্দ, বারেক দেখরে চেকী করি।

অন্তরে ভেবেহি যাহা, কাজেতে ঘটন ভাহা, হার হায় কি করে শক্তরী।।

হরের আদেশ পার, নন্দী মহাবেগে ধার, উপনীত নিকটে নাইরা।

মান্ত্রের চরণ ধরি, মিনতি প্রশৃতি করি, বলে যাও কোথার চলিরা॥ দেশেতে কুরব হবে, কত লোকে কত কবে, সন্তান হইয়া কত সব।

যেমন বাবার গুণ, ভুমি তাঁর ভিনগুণ, ভামিত নিগুণ কত কব।।

লোকে কবে দশকথা, শরম পাইবে তথা, ষরম বৃঝিয়া ফিরে চাও।

শস্করের রাখ মান, যাহে রবে তব মান, কৈলাসে ফিরিয়া মাভা যাও।।

ভূমি ভার পাবে সুখ, ভার যাবে মনোছ:খ, মানে মানে থাকিবেফ মান।

যাহাতে ছদিক রয়, করিতে উচিত হয়, কি বলিব আমিত সন্তান।।

নানা ছন্দে প্রবোধিয়া, নন্দী কর বুকাইয়া, ভারিণী কি শুনেন তথন।

রাগেই চোলে যান, কোথা লাক্ষ কোথা মান: অভিমান অক্লের ভূষণ।।

माद्रित नद्भरक नन्ती, ठलिन ठर्न निम, बुकाद्र ना किंद्राहरू शाद्र ।

মনে মনে ভাবে দায়, রসিক আমক্ষে গায়। যেই শুনে সেই যায় পারে।।

# नजीदर नकीत श्रदांश ताका।

जम गानवाभ।

রাগে যান, অপমান, নাহি পান, টের। তবেত চরণে ধরি কহিছে কুবের।। काथा यांख, किटत हांख, दुक्त मांख, इत्थं। क मिल अस्टर कालि क र्हातन सूथ।। নাহি गांब, একি কাজ, বড় লাজ, পাই। क दब्दम याहेदव (काथा कदब दम सूथाहै।। ছাত জোর মাগো মোর, একি যোর দায়। क्वादत वावादत काटन याहे दव काथात्र ।। সতী কন, বিবরণ, কৈতে মন দহে। কি কৰ আমার প্রাণ যে অমুখে রহে।। পিত্রালয়, যক্ত হয়, চক্ষে বয় জল। সকলে বলিন বাকী আমায় কেবল।। কোন দোষে, আশু ভোবে, আ**শুকোৰে** নাই। দেখিতে পিভার যক্ত আমি যাব ডাই।। . नाहि छूथ, (य छारूथ, निषयूथ हयं। পতির এ অপমান সতীতে কি সয়।। যক্ষ কয়, সবিনয়, যেতে হয় হবে। सम्बद्धाः देत कथा आमि करे उदय।। জাগে বেশ, কর বেশ, তবে শেষ যাও। এ বেশে याहेव वांत्ल लक्डा किन मांखा लाटक करत, हिहि बरत राति इस जान। क्रशाल मानिक नाहे, शनांत्र क्रशाल।।

## मत्नामीका स्थाउत्विनी।

(यन मीन, शीन कीन, सूर्यालन (वन)। এলায়ে চরণতলে পডিয়াছে কেশ।। একি জালা, মুগুমালা, কানবালা ইশু। দেখিরা পাগলি কবে নগরের শিশুনা हां अ यक, निव कर, मत्नीयक मनि । বাবেক আমার ঘলে এস গো জননী।। कुटवर्त्त, किन्कट्रवर्त्त, हर्द्रपत श्राम । চিত্রিত ভাগুরী তব রয়েছে এ দাস।। কোথা যাও। ফিরে চাও। পরে যাও কিরা। ভা গুরে রয়েছে তব মণি মতি হীরা ৷৷ नीलकांस, हसकांस, सूर्वाकांस आंत । যে মণি চাহিবে দিব ভাবনা কি তার।। আর কেন, ভাব হেন, মনে যেন রয়। আমিত চরণ ছাডা কোনকালে নয়।। মন মোর, আছে ভোর, ভাবে ভোর হয়ে ! এস ওগো নিজাবিণী সক্ষে যাই লয়ে।। खांठिखाः विनाहेयाः वित्नामिता ८कन्। মন্তকে পরাব মাণ অশেষ বিশেষ।। একমনে স্যত্তনে, জীচরণে ভবে। আলোভার নাজাইব আল ভায় হবে।। এস ঝাঁটী, মোর বাটী, পরিপাটি সাজে। যতনে সাকাব তন্তু যেখানে যে সাকে।। এই গীত, সুলোলিত, মনোনীত সার। রচিল রসিকচন্দ্র রসের জাগার 🕕

## क्रवदात कृष्ठ मधीत मञ्जा।

वित्र कार्य कार्य । हार कार्य हारिक वार्य कार्य विद्याद लार्य ।। इक्षिथ वित्र में निर्माण कार्य कार्य लार्य भाग निर्माण कार्य कार्य लाय क्रम माला, विश्वमाला स्थामाला, वित्राह्मिका क्रमवाला, इनिर्देश महान्य मांबाह्य ।।

#### প্রার।

पहिला मकताक त्याहिता मात्र।
नाम कि निक्का मात्र।
यक्टम प्रित्रा नव तकटमत थिन।
नाम विद्या नव तकटमत थिन।
नाम विद्या नव तकटमत थिन।
नाम विद्या मात्र प्राप्त प्रदेशक मिन।
भागिका हित्रक मान, मत्रकक कछ।
काश्य भागिका, प्रांकाच कछ।।
काश्य काश्य मिल, मिन भागि भागि भागी।
होत्रास कितात जाथि, कित्रन अमन।।
पनव माद्यत जाया, किनास निवास।
निकास निवास जाया, क्रांस्त कास।।
पक्ष भागित मिनास।।
पक्ष भागित काम क्रांस्त हिनास।।
क्रांस क्रांस मिनास।।
क्रांस क्रांस मिनास।।
क्रांस क्रांस मिनास।।
क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हिनास।।
क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हिनास।।
क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस क्रांस हिनास।।

नत्रत्न शनिक धाता, जेलादत चाकुन। শরীর লোমাঞ্চ যেন, কদম্বের ফুল।। ভার্যারে ডাকিয়া ভার, করিয়া প্রকাশ। शम शम ভাবে কছে, आंध आंध ভাষ।। কি কর প্রের্মি ব্নি, দেখন। আশিয়া। नत्रम नकल कत्र, स्ट्रिक द्रश्तित्रा ।। শুনিরাছি বিশ্বকর্মা, চিত্রকর বটে। এ ৰপ তুলিতে নারে, তুলিতে দে পটে।। কিবা মার ভক্তিভাব, কিবা গুণচয়। ভাবিতে ভাবের ভাব, কত ভাব হয়।। जाविनो इहेब्रा जाव, जाव विस्नामिनी। ভবের ভাবিনী কত, ভাবের ভাবিনী !! ডাকিয়া কুবের বাণী, কহিল যথম। यक्तितीत हरक नीत्र, वर्ष्टल एसन ॥ কান্দিয়া কহিছে নাখ, একি দেখি আব। এ পদে কি পায় শোভা, মাণিক্য ভোমার।। যাতে পায় পায় শোভা- জামি জানি সার। वाद्यक हारिका दम्य, नाकान स्थामात ॥ বলিয়া তুলিয়া দেই, কমলের ফুল। পঞ্চমুখী জবা তার, শোভিত অতুল !! চন্দ্রনে চর্চিত তার, জাহ্রবীর জল। गांकिन উত্তম পদ, कमल कमन ॥ 🛸 ভাকিয়া যকিণী কয়, বিনয় করিয়াৰ হের দেখ প্রাণনাথ, বারেক চাহিরা।।-

হেরিয়া ছর্ষিত হয়ে, কুবের তথন।
মন্তকে ধরিল ছুটি, মারের চরণ।।
রসিক কহিছে মাগো, দেখ এই ক্ষীণে।
এ দীনের ও দিন, হইবে কত দিনে।।

## मक्तालाय महीत शमन।

ওই আইল চম্পক বরণী। মন হবে গোহরের ঘনণী।। দুর্বনা সচন্দন ভাগী-রথি কলে, যুক্ত করি রক্ত জনা শহদলে, না জানি কে দিয়া চরণ কমলে, মোহিত করিল ধরণী।। ভাক্ষর সহিত বিধ্র কীরণ, চরণ করেছে কি শোভা ধারণ, রসিকের ভব তারণ কারণ, হেররে চরণ ভরণী।।

#### পয়ার:

এই ৰপে বিধিমতে, সাজিয়া প্রচুর।
কণক বরণী যান, জনকের পূর।।
কি কব ৰপের কথা, কি কহিব ছাঁদ।
থাকুক বদন হাতে, নথরেতে চাঁদ।।
হরিষ বিষাদে করি, একেত্রে মিলন।
চক্ষের নিজিয়ে যান, দক্ষের ভবন।।
মনের মান্সে রপে, নিরক্ষিয়া সব।
সতী এল সতী এল, পতে গেল রব।।

कि बत्त करें करें, किर वरत अरें। (कर वत्त अकि क्ष्म, **उ**द्या आग महे।। क्ट बरन हल हर, आकि मरनामंख। দেখিব শুনিব আর, শুনাইব কত।। কেহ বলে একি কথা, পাগলের প্রায়। কি দেখিব কি শুনিক, কি শুনাৰ তায় !! সেইত ছ:খিনী সতী, ভিখারীর নারী। অমের অভাবে যার, চক্ষে বহে বারী ।। বিষম কুন্দুলে পতি। নারদের খুড়া। কপালে আগুন মুখে, ছাই মাথা বুড়া।। বিদ্ধিতে নিগুণ ছিছি, আই মা কি ভেকা। गित्म थात्क प्राणात्म, माशित ताथि अका ॥ সিদ্ধি খার গাঁজা টানে, ধুতুরায় ভোব। কটিতে বাণের ছাল, ভুজক্রের ডোর ।। যেমন মিলের ভঙ্গি, মাগি ভারোপরি। পাগলের ঘবমাত্র, আগলেন হরি॥ चात कन वटल नहें, व क्मन वानी। सूथी हकू इःश्री हकू, এ क्रमम वानी।। যার ধন তাঁর ভোগ, তারি **হথ আছে**। सूथी इःश्रो गव गम, सूबदमत काट्ड। वनी देश्टल बनी द्यांन, विलाहेटव बन। নিৰ্ধন যেমন দেখ, ধনীও তেমৰ ।। अमनि विनाद्य धन, त्क करत श्रेजून। ধন জন বৰ সিহা; নিনভিই মূল।।

बादका यहि थादक तम, ভादि इत योश। বাক্যেতে যশের লাভ, যশে স্বর্গ ভোগ।। এই ৰূপ কত কথা, হয়ে বয়ে যায়। ध (इन नमद्य गडी, आहेल उथाय।। প্রসূতী আদিয়া কোলে, লইলেক সূতা। পরমা ৰপদী সভী, দীর্বগুণবুতা।। উমা জগতের মায়, কোলে তুলে নিল! मा अन मा अन वत्त, वनन हृश्निता। দেবিরা সতীর সাজ, লাজে করি ভর। कुरनत कामिनीशर्ग, कर्ष्ट् शत्रण्यत ॥ এ বলে উহারে সই, একি দেখি ছাঁদ। थका नकी काल जित्न, किन कां है है। है। যতনে রতন আনি, কে পরালে গায়।। जाभारतद्र जांचि (यम, शेवाय किताय ॥ মতিতে লঙ্গায় মতি, দেখিবারে চয়: মণিতে মুনির মন, চুরি করি লব।। শুনেছি ভিখারী হর, ভিকা মাগি খার। ভবে কেন এভো সাজে সভীরে সাজায়।। कान धनो बटल वृत्ति, जारन ह गिरुशाः কেহ বলে কোথা পাবে, না পাই ভাবিয়া।। ना थाकिटल थाटक थन, आमि कानि कम। यमि এ সংসার মাঝে. থাকরে সম্ভ্রম।। এৰপে রমণীগণে, কব্লিভেছে বাণী। র্নিক কহিছে দয়া, ক্রগ্যে ভবারি।।

## সতীর কৃত প্রস্থতীর ভংসন।।

## लश्किशमी।

প্রভিষানে দত্তী, কহিছে ভারতী, मा (छात किंत मन। खननीत कना, यनि इत्र मनाः वर्ष्क ভারে কোন জন।। আমিত ছঃখিনী, ভোমার নন্দিনী, জামত। ভিথারী হর। এত কেন রোঘ, যদি করে দোঘ, তথাপি সে নহে পর।। মত ধুতুরায়, আর বিষ খার, সঞ্চয় নাহিক ধন। কি বলিয়া ছার, দোষ ধর ভার, ভোৱা বা কেমন জন।। जनक (यमन, जनमे (उपन, • দোঁহার কঠিন মন। করি এই যাগ, শিবে যক ভাগ, मिवित्न मां ७ कमन।। নিমন্ত্রণ পত্র, লিখিয়া সর্বত্তে, भागेरिल करन करन। জামতা ভোমার, অপমান তার, कतित्व मा कि कांत्र ।। ( t).

सूत्रांसूत नदत, (धवा यक कटत. শিবে ভাগ দেয় সবে। वर्तक (यह अन, श्वास्तिक अभन, य यद्ध विश्व रदा।। যা ভাল বুঝেছ, তাহাই কোরেছ, ভাহাতে কি কায মোর। (गहे नमानक, टाहे (यन, यक, ভামি কি করিত্ব ভোর।। কেমন কঠিন, দয়ামায়া হিন, চির দিন দেখি তোর। जमक खेलारम, तह सीय वारम. कानन। कि छुः थ स्मात । जिकांत्र खीवन, इत्र मा यांभन, অধিক কি কব ভার। घटि मा अमन, कन्छ आह 'म'न. কোন দিন অনাহার # পরিধেয় বাস, বিনে কীঞ্জিকার কভু দেন বাঘছাল। কি কব অধিক, ধিক ধিক ধিক, त्य इः त्थ का हो है का ला। পিতা যজ্ঞ করে, বলে পরে পরে, जांविद्य हिलांग मदन। হবে নিমন্ত্রণ, করিব গমন,

शिकांगदत्र मिव गरम ॥

সে সাধি বিধাদ, নিমন্ত্রণ বাদ, হইল শুনিমু কাণে। ভাবিলাম মনে, পিতার ভবনে,

ভাবিলাম মনে, পিতার ভবনে, যাব কিবা কাঘ মানে।। .

যাচিবার মান, আছে কোন স্থান,

- ভাই আইনু যক্ত হল।

বাৎসল্য মারায়, ছলিতে মাভায়। নয়নে দেখান জল।।

প্রসূতি তথন, করিয়া ঈকণ,

বিনয়ে কান্দিয়া কয়।

কি করিব তারা, নয়নের তারা, পতিত সংশানয়।।

মত্ত অহস্কারে, যাকু ছারেখারে, ভালত বুঝান ভার।

আমি আছি যেই, আনা যাওয়া ভেঁই, নত্বা কে আইসে আর।।

আছি যতকণ, সলিন বদন

না কর তাবিয়া ছঃখ।

মোর মাধা খাও, ' আইন জার যাও, নয়নে দেখিলে সুখ।।

আমি নহি স্থির, যেন হড়পীর, শাপের সমান চাই।

কারে ছংখ কই, মাথা গুঁজে রই,

বুঝাইতে দকে, শেল বিদ্ধে বকে,
কি আর কলিব ফিরা।
ভাবিয়া বিবর্ণ, অঞ্চলের স্বর্ণ,
কেলিরা দিয়াছি গিরা।।
সতী ভোর ভরে,/ পরাণ যে করে,
কি কব ভোমারে হাঁয়।
আগনার কন্যা, দৈন্যে কি অদৈন্যা,
সম শ্লেহ সবাকার।।
এই ৰূপে রাণী, সুমধুর বাণী,
কান্দিয়া কান্দিয়া কহে।
গরে মার গলা, সতী সচঞ্চলা,
রিসিক অসুখে রহে।।

# नक्षत्रकुछ गिर्दानकः।।

ভোলার আছে কোন গুণ। ধক ধক আলিতেছে কপালে আগুণ।। মুনে নাঝি ভন্ম রাশি, সদত আশান বাসি, তুই সতী সর্কনাশি, তাহার ভিগুণ।। যেমন পাগল পতি, তেন পাগলিনী সতী, চিরকাল সমভার, নহেভ ভরুণ।। রসিক কহিছে সার, কেন নিন্দা কর ভার, কিরণ দিডেছে যার, চরণে অরুণ।।

#### পথার !

এই ৰূপে প্রস্থুতীরে, করিয়া ভং সন। यक दरिवादा गडी, कतिना शम्म ।। **८**इतिया मत्कत त्रांश, इंटेलं क्षवल । আরে রে পাপিনী ভোরে, কে আনিল বল ।। কে দিল সংবাদ ভোৱে. কে কহিল হেন। विना आंवाहरन हुहै, यक अलि रकन ।। ভোর নাই বৃদ্ধি গতি, মোর ছু:খ ভারি। लका नारे घूगा नारे, भागत्नत नाती।। আমার মানস নহে, ভোরে হেথা আন।। यक देश्ट हुडीशिनी, मृत द्रात्र याना । ভাঙ্গ খায় নিদ্ধি খায়, কেপা যার পতি। কি কাজ সিম্মুর শিরে. মুচে ফেল সভি 🛚 স্বামীর মঙ্গল জন্য, কি কাজ লোহায়। ভিথারির ছুই সম, না থাকা খাকায়।৷ এতেক বলিয়া ভবে, কহিভেছে পুন। সভাজন শুন মোর, জামতার গুণা কোন গুণ নাহি ছার, বুকেছি সটক। বয়সে বাপের বড়, মায়ের অধিক।। क्थन टेक्नांटन क्ष्यु, श्रामान निवानी। কথন গুহুত্ব হয়, কখন সন্নাসী।। ঠাকুরে কুকুরে হয়, সম জান যার। এক মুখে কভ দোব, কহিব ভাহার।।

কে কোথা সংসারে আর, দেখেছ এমন। শামান যেমন তার, ভবন তেমন।। মানের ধেমন মান, অপমানে তাই। ছाहेटक वसन खाद्य, वस्त्रदा हारे।। কি কৰ ৰূপের কথা, গুণের দ্বিগুণ। কণালে আগুণ ভার, কপালে আগুণ। মুখে ছাই দেখি তার, মুখে ছাই তার। গলায় কণির পৈতা, দেখিয়াছ কার।। ভিকায় কাটিল কাল, রুখতে চড়িয়া। মুভারে করেছে জয়, গরল থাইয়া।। যে করে বাজারে গাল, বরম বরম। আসিতে নিকটে তার, ভর করে যম।। অমতে ভাবিয়া বিহ, বিষ থার যেই। সতীর ক্রপাল মন্দ, পতি হৈল সেই।। বিখ্যাত ভাহার গুণ, জগৎ বড়িয়া। কভু ভুতজিয়া সেই, কভু সাপড়িয়া।। বসন বাঘের ছাল, বেডা বিষধর। **ध**हे करल मकताक, निकारलक इत !! রসিক কহিছে ইথে, নাহি অপমান। खिं निन्दा हुई मिटक, निवाद मगान ॥

# নমোদীকা স্থধাতরক্ষিণী। দক্ষ প্রতি শাপ ও সতীর প্রাণত্যাগ।

শিব নিতা নিরঞ্জন। কেন নিন্দিলে সে কুমভিভঞ্জন।। কি কব অধিক আরে, সব তাঁর অধিকার, কে তাঁর অধিক আরে, আছে সুরঞ্জন।। মৃত্যুরে করিয়ে জয়, নাম যাঁর মৃত্যুঞ্জয়, কে আছে সমগুণে অগৎগঞ্জন। হরের করুণা বিনে, বারেক চাহিয়া ক্ষীণে, কে বিনাশে রসি-কের মনোজ অঞ্জন।।

শুনিয়া পতির নিন্দা, অনল সমান।
কোধেতে অলিয়া সতী, চারিদিকে চান।।
ডাকিয়া বলেন পিতে, এ আর কেমন।
ডুমি কি জাননা মনে, শস্কর কি ধন।।
বিরিঞ্চি ভোমার পিতা, সৃজিলেন সব।
কে সব পালন কর্ত্তা, আপনি কেশব।।
একথাত শুনিয়াছ, সংহারিতে জীব।
কৈলাসে সংহারকর্ত্তা, রয়েছেন শিব।।
আজ্ঞায় অনস্ত আছে, ধরণী ধরিয়া।
সোলাবে নিন্দিলে ডুমি, কেমন করিয়া।।
ধাকিলে ভক্তি মোর, শস্করের পায়।
ফলিবে ইহার কল, জার কোথা যায়।।

যে মুখে নিন্দিলে শিব, গুণের আগার। ঐ মূখ জন্মায়ুখ, হইবে ভোমার।। শিব যদি হন তিনি, গুণের ঠাকুর। वक बादव वनांखन, जांशा बादव मृत ॥ मान गांदर कन बादर, कम गांदर कल। প্রস্রাব করিবে যজে, ভুভেতে সকল।। এই লে ভোষার দশা, ঘটিবে যথন। আমার মানস পুর্ণ, হইবে তথন।। ভোমাতে উৎপত্তি দেহ, হমেছে আমার। এই দেখ তাজি দেহ, লাক্ষাতে তোমার।। এই রূপে শাপ দিয়া, তাপে করি পণ। कीवन जाकिल नजी, कीटवत कौवन ॥ ভূতলে প্ডিভ দেহ, কনকের লভা ! নক্ষী যায় কান্দি শিবে, কহিতে বারতা।। नम्रत्न शणिक थाता, मणिन वमान। তথ্যনি উত্তরে গিয়া, শিব বিদ্যমান।। বলে কি কর গো বাবা, জগতের পতি। ভোমার নিন্দাতে দেহ, তাজেছেন সতী।। জাইলাম লয়ে এই, ছু:খের বারতা। মৃত্যুকারা পড়ে যেন, আছে স্বর্ণলভা।। কোথায় রহিলে ভূমি, নতী বা কোথায়। বারেক ভাবিরা দেব, তাহার উপার।। কেমনে কৈলালে রবে, কেমন করিয়া। কেমনে থাকিবে ভূমি, থৈরজ ধরিরা॥

याहात लागिता जूमि, हरतह नमानि।

नमक (मधिरक यादत, हु अजिनािषा।

याहात (প্রমেতে বাঁধা, জনমের জরে।

धरतिहर्ण यात পদ, कमत्र छेशदा।।

याहादत जावित्रा मृजूा, कित्राह करा।

जाजि (म जामांद्र नजी, जामा हांजा हत्र।।

का मिर्न हेक कर, जायांद्र देकलाम।

हात्र निधि यूगहेल, देकलात्मत्र वाम।।

क्रमता देकलात्म कादत, मा नल जाकिव।।

क्रमरस वहित्रा काली, हद्रश्व जात।।

तिन तिमक सूधा, जबक्रिशी शांत।।

मक्क गड्ड तीत्रज्यस्य भगत्। जिल्ली।

যকেতে শক্ষরী মৈল, শক্ষরের ক্রোধ হৈল,
নরন স্থারিল যেন চাক।
সহনে কম্পিত কার, অলন্ত আগুন প্রায়,
মার মার বলে দিল ডাক।।
দত্তে করে কট কট, জটা গুলা লটপ্ট,
মট মট অন্থির নির্মোধ।
স্থাধ মার মার বলে, লল্লান্টে আগুন মলে,
পর পর বাভিতেত্তে রোধ।।

কি কন ভেজের ঘটা। রাগেতে ছিঁভিয়া জটা। বেগেতে কেলিয়া দিল দুর।

জটার জন্মিল ভূত, বীরভত্ত মগা-দূত, দাপটে কাঁপার তিনপুর।।

যোভ হাতে দাঁড়াইয়া। কহে বাক্য বিনাইয়া। ভূতনাথ পভেছ কি ঘোৱে।

আর না থাকিতে পারি, আজ্ঞা কর ত্রিপূরণরি, কি কর্ম করিতে হবে মোরে।।

শস্কর কিন্ধরে কহন সতী শোকে অভিশয়, আগুন অলিছে যেন মনে।

আমারে রুবিল দক্ষ, থেদে ফেটে যায় বক্ষ, বিপক্ষ নাশরে এইক্ষণে।।

: হয়ে সেই সভী হারা, নয়নে বহিছে ধারা, বল বুদ্ধি সৰ হৈল পণ্ড'।

জামারে ছানিয়া বাজ, যজ্ঞ করে দক্ষরাজ, এখনি কররে লগু ভগু ।

বিনাশ কররে পাপ, দুরে যাকু মনস্তাপ, নিস্পাপ কররে এই দায়।

কোথায় রহিল সভী, কি হবে আমার গতি,

শিবের আদেশ পায়, বীরভদ্র বেগে ধায়, সঙ্গে ভূত ভৈরবের দানা।

জঞ্জালে ৰেক্সাল ভাল, ধেন কালান্তক কাল, যজেতে দিভেছে গিয়ে হানা।। ধার কেহ গার কেহ, সভী দেহ সভী দেহ, সভী দেহ পতিত দেখিয়া।

বজ সম ঝন ঝন, ভৈরবের ভুতগণ,
ভুদ্ধারিছে থাকিয়া থাকিয়া।।

শাচিতে নাচিতে কয়, কেবল শিবের জয়, গে বোল হানিছে যেন তীর।

যে কিছু যজের পায়, চারিদিকে লুটে খায়, প্রমাদ গণিছে যত ধীর।।

এদিকে ওদিকে ভূত, কেবল শিবের দূত, গাইয়া খাইয়া নয় স্কুত্ত।

মহারব কিচিমিচি, ফলমূল ফুল বিচি, সকল করিল উদরস্থ।।

ধার খার গার গীত, চারিদিকে বিপরীত, উৎপাৎ করিল বড় ভূতে।

কেহবা ছুটিয়া যায়, আছতির মৃত খায়, য**ন্ধে**র কুণ্ডেতে দেই মুতে।।

ভাঙ্গিয়া দক্ষের বাটী, সাপটে কাটার মাটা, সঘনে হতেছে ভূমিকম্প।

বেতালের ছটাছটী। দানবের ছুটাছুটি, পদ্মায় বাজে জগঝল্প।

চৌদিকে ভূতের গোল, কে শুনে কাহার বোল ধেই ধেই নাচিছে পেতিনি।

টুটিল দক্ষের বল, যজ্ঞ গেল রুসাতল, রুসিকের ভরুসা তারিণী।।

#### लका यख्ड नामा

#### পয়ার।

**७३ ब्रांश कुष**शदन, नाठिया कुँ निया। বিনাশ করিছে যক্ত, হাসিয়া হাসিয়া।। नां भरि नांभरि लाक, मातिल दिख्त । কার ভাঙ্গে উক্ল ক্রক্র, কার ভাঙ্গে কর ।। কারবা মাথার খুলি, চাপড়ে উপায়। ভূতের দর্পেতে রসা, বুঝি তল যায়।। কারে করে পদাঘাৎ, কারে মারে কীল। দাঁতেতে কপাটী লাগে, আঁতে লাগে বিল।। क्ट्र वर्ल वाश वाश, क्ट्र वर्ल अहे। কেহ বলে কোথা ফাই, কার কাছে কই।। (प्रत श्र भनाइन, महश्र काँप्र। टेमजानन कम्लवान, शिमारहत मारशा। আচতে মরিল কভ, কীলে মরে কেউ। क्षिटत नमीत नम, वटत राम राजे॥ তরকে তরক কঁত, ভেষে যায় শব। ভূতগণ বলে জয়, ভৈরব ভৈরব।। বেভালে বেভাল নাতে, ভালে নাতে ভাল। ্ধেই ধেই থেই থেই, দেখিতে করাল।। मुर्ज युक्रदल नांटि, जूटि क्टब तक । निमत नाइनि प्रत्यं, ज्वि प्रशेषक।।

কেছ নাচে কেছ গায়, কেছ ধরে ভাল। हिजिया मटकत युख, बुगंत्र जङ्गान ।। जली (मह जली (मह, करहा थहें वांगी। ধরিয়া ভ্রম দাভি, করে টানাটানি।। দাভির জালায় ভক্ত, দেই গড়াগভি। আশে পাশে চারিদিকে, রক্ত ছডাছডি॥ ওখানে ভ্ঞুর ভার্যা। বাড়িতে বসিয়া।। ভাবনা করিছে কত, হাসিয়া হাসিয়া ।; গিয়াছেন দক্ষযকে, পতি মহাশয়। व्यानित्व नामिधी कड, मःथा नाहि इत्।। করিছে ভাঞ্চার খালি, পুর্ব হবে পিছে। এটার সামিথী লয়ে, ওটার ঢালিছে॥ এমন সময়ে ভ্ৰু, আসি উপনীত। দাভির জালাতে জান, হয়েছে রহিত।। রুধিরে ভাসিয়া যায়, পেট পিঠ ছই। গিন্নি ৰলে কেরে বাপু, কার বেটা ভুই।। ভুঞ্জ কহে পরিচয়, কি চাও আমার। मक्तराक्त এक मना, इहेन ग्वाय ॥ ভূগুর রমণী নিজ, পতি নাহি চিনি। বলিছেন কোথা তবে, আমাদের তিনি।। কান্দির। কহিছে ভৃগু, কি কহিব আর। আমি ভূঞ এই দশা, হোটেয়ছে আমার।। ছর্দশার সীমা নাই, হার হার হার। कुरक किन बार्फि किंदफ, सूटक किन शांत 41. কোথা গেলে পথ পাই, চকে নাই নিভা। শুনিরা ভ্ঞার নারী, দাঁতে কার্টে কিল্লা।। ধরিয়া পতির কর, হরে লয় সভী। রনিক কহিছে হর, হর হে ছুর্গতি।।

# नका नाम जूखन डेशभार।

জয় শিব শিব শিব কারণ। ববম ববম বম বলে ভূতগণ।। প্রসীদ প্রসীদ হর, নীলকণ্ঠ দিশম্বর, করে নেত্র কলুব নাশন।। বিষ্ণুপদ গুণত্রয়, সুমতি কল্যা-ণাশ্রয়, নির্বিকার নিত্য নিরঞ্জন।। উর গো পবীতাধারী, ত্রিপুরেশ ত্রিপুরারী, ভূগুদাতা ত্রিলোক রঞ্জন।। বিষ্ণুর বিষধর, সুরেশ স্থরেশ হর, রসিকের ফুর্গতি বারণ।।

#### প্রার।

দক্ষ গোল-গড়াগড়ি, যজ্ঞ হৈল ধাংশ।
দেখিতে যজের কিছু, নারাথিল অংশ।।
তবেত অন্দরে চুকে, দানবের দল।
মাসি মাসি বলে সব, হাসে ধল থল।।

क्र्इ वर्ल जाहे काथा, क्र्इ वर्ल माति। ব্ৰহ্মদৈত্য বলে দেখ, আসিয়াছি আমি !! বীরভদ্র বলে ভদ্র, লোকের কি ধারা। আইল কুটুম্ব সব, সম্ভাধিবে কারা।। কোথা গো গৃহস্থ আছে, গিলিবা কোথায়। ভদ্রকালী পুদ্র মোরা, ভদ্রকোক তায় ॥ বসিতে আসন দেহ, এনে দেহ জল। পদধৌত করি মোরা, কুটুম সকল । নন্দী বলে একি কথা, কন্দি ছাড় ভাই : এদেছি মামার বাড়ি, লুটে পুটে খাই।। ভাল ভাল বলে বীর, ভক্ত দিল সায়। চারিদিগে ভূতগণ বগল বানায়।। হইল বিষম ভায়, ভুতের উৎপাত। কুলা সম ঞিহ্বা আর, মূলা সম দাঁত।। ঢ়কিল রন্ধন শালে, ভূত পালে গাল। কেহ খায় লুটে পুটে, কেহ ঠুকে ভাল। পলায় রমণী যত, গায়ে দেই মুতে। মাসি বলে আঁকাজিয়া, ধরে সব ভূতে॥ কেহ বলে মামি মামি, কেহ বলে আই। অল্লার মা কোথা গো, অল্ল দেনা খাই।। উলঙ্গ করিয়া কারে, কীল মারে তাল। ভাত্র মানে যেমন, পড়য়ে পাকাতাল।। এইৰপে ভূতগণে, বাধায়ে জঞাল। থাবার থাবার অনে, পুরে ফেলে গাল।।

मूक्डा मार्क्य घन्डे, (काटन काटन खटन। তাল তাল ব্যঞ্জন, বেতালে খায় তুলে।। কেহবা অমল থায়, কেহ থায় ঝোল। কেছ করে কাড়াকাড়ি, কেছ করে গোল।। যে ছিল অন্নের রাশি, সকল উড়ার। ध्वत्भव्य श्रक्षांत्र, तत्म तत्म थात्र ॥ বেতাল বলিছে ভাই, আর কিবা চাও। মামার বাড়ির ত্রতা, ধামা ধামা খাও।। ক্রিয়া ব্যিয়া খাও, যত পার ভাই। ঘরে গিয়া নিক্ষা করা। সে বভ বালাই।। ভিদর **হইল পুর্ণ, নিন্দাক**রা ভার। বাবার খণ্ডর বাড়ি, কমুর কি আর ।। শাক চাই কুজা চাই, কিমা চাই কোল। भूत्त कथा वन ভाहे, किन कर शाना। এসব যজের কাগু, নহে ভাতে পোডা। দধির উপরে খাও, মোগু ওড়া ওড়া।। রসভরা পান্ত খাও, আনন্দ অন্তরে। \* আংক্রি,ব্যাভারে বল, লব্জা কেবা করে।। এৰপ ভূতৈর রঙ্গ, কহিতে বিস্তর। কভ দিকে ফিরে কভ, শক্ষরের চর।। लामिन मदकत नव, या या थारन हिल। কেবল সভীর বরে, প্রস্থৃতী বাঁচিল।। এওর গোবিন্দ পাদ, পত্ম করি আখা। র চিল।র নিকচন্ত্র, সুলোলিত ভাষা।।

## मत्नामीका ऋथा खत्रकिनी।

# মত্তেশের বোদন।

সতি হে কোথা রহিলে। ছরায় আসিব বাণী কালি যে কহিলে।। পাগলে পাগল করি, কোথা গেলে শুভন্ধরী, ভাবিয়া গুমরি মরি, মিলন নহিলে।। নয়ন ভাসিল ফলে, চলিতে পদ না চলে, কেন হে বিচ্ছেদানলে, আমারে দহিলে।। কি হবে আমার গতি, কোথা গেলে হৈমবতী, কি দোখে আমারে ভতি, শাকেতে মোহিলে!।

#### भगोह ।

হোথায় ভাবেন শিব, সভীর কাবণ।
সভী শোকে মনোছ্থে, মলিন বদন।।
হান্ন সভী কোথা সভী, বলিয়া বলিয়া।
একাকি দক্ষের যজে, গেলেন চলিয়া।।
হেরিয়া সভীর অঙ্গ, ধূলায় প্রভন।
আকুল হইল শিব, ব্যাকুস জীবন।।
নয়নে গলিত ধারা, ঘন বহে খান।
কোথা যাব কি করিব, কে পুরাবে আশা।।
বারেক উঠিয়া সভী, কথা কহ হাসি।
হইল ভোমার শোকে, সন্ন্যাসী সন্ন্যাসী।।

শ্বশানে মুগানে থাকি, তোমার লাগিয়া করেছি মৃত্যুরে জয়, তোমারে ভাবিরা।। ভূমি মোর দেহ প্রাণ, ভূমি মোর গতি। আজি কেন ভূমি হেন, হইলে হে দতী॥ কালি যে আদিৰ বলি, আমারে কহিলে পাগলে পাগল করি, কোথায় চলিলে। কেন হে কনকলতা, ধূলায় পড়িয়া। প্রাণ যায় সতি লোক, ভাবিয়া ভাবিয়া !! তুমি আনি এক অন্ত, সদাই বলিতে। নে রঞ্কি:তে বুঝি, পাগলে ছলিতে 🛭 জাজি সে মনের ভাব, করিয়ে প্রকাশ শিবের অশিব করি, কৈলে সর্বনাশ !! (मथना वादतक हादन, हुर्नीक शांमात। ভাঙ্গ যে হইল কালি, বিহনে ভোগার।। হের দেখ ফিরে ঢাও, কেন দেহ দুখ। आगादत की मादत मधी, त्वामात कि सूर्थ তাহাতে একান্ন খণ্ড, হৈল নিৰূপণ। ख्डाना এकास शीर्ट, भुंदर्देश वर्गन ।। র্মতীর শোকের কথা, কার কাছে কন। শব লয়ে শব ৰূপ, সব ভাগি হন।। কেশব ভাবেন হোথা, একি বিপরীত। এবারে সংহার বুঝি, মজিল নিশ্চিত।। এতেক ভাবিয়া হরি, চক্র লয়ে যান 😜 কাটিরা সভীর অঞ্চ, করে খান খান।।

অবংপে সভীর অঙ্ক, কেলিলেন কাটি।

হইল একাল তায়, বঙ্গ পরি পাটি।।

সেই সে সভীর অঞ্ক, যেবানে পড়িল।

ভিল ভিল মুর্ত্তি তায়, তর্বনি হইল।।

বিশেষ করিয়া তাহা, কহিতে বিজর।

বোগানে মতীর অঞ্ক, দেইখানে হর।।

কালীঘাটে কালীবপ অভি চমৎকার।

নকুল ঈশ্বর হন, তৈরব তাহার।।

যতনে মাম্বের পদে, প্রণাম করিয়া।

চলরে গোকুলে মন, হর্ষিত হইযা।।

চরনে পরম জ্ঞান, লভা হবে মন।

এবন শুনরে মার, জল্ম বিবরণ।।

সেই সে কালীর ভক্তি, করিয়া ভাষিক।

বিনাইয়া ছন্দ গীত, রচিল রসিক।।

# इत्रशिही मिलन ।

হরগোরী কিবা সাজে রে। কৈলাস ভূধর মাঝে উভরে বিরাজে রে।। যেই মত পশুপতি, সেই মত হৈমবতী, চরণ নথরে চাঁদ, লুকাইল লাজে রে। কিবা অপরূপ রূপ, ভূবন মোহন কুপ, রিনি-কের আশা পদ, স্বরক্ষহরাজে রে।।

### - পরার।

यक रेश्न मध उध, प्रुष्ट देश्न इत् । আদিয়া প্রস্থৃতী স্তব্য করে বভতর ॥ দরার ঈশ্বর ভুনিং এলের ঠাকুর। ভোমার মহিমা বালি, আছে তিনপুর।। তুমি ভ্রন্মা তুমি বিষ্ণু, তুমি সে তথান। ভূমি ইন্দ্ৰ ভূমি চক্ত, ভূমি ছতাশন !! ভূমি জান ভূমি ধাান, ভূমি সারাৎসার। ভূমি তপ তুমি জপ, তুমি মূলাধার।। ভূমি কিতি ভেজ বারী, আকাশ প্রন। निष्यांन अधान बान, कीटवत जीवन।। তোমার সমান দেব, কে আচেছ কোথায় দোষ গুণ সৰ মম, বুকে উঠা দায়।। এখন উপায় মোর, কি হইলে কও। ভাজ রোব অভিতোষ, অভিতোষ হও।। এৰপে অনেক স্তব্য প্রস্থৃতী করিল। **তবেত তাহারে শিব, मদয় হইল।।** वाँहादम्र फिटलन छटन, फटक श्रूनकात । তারিণীর শাপে অজা, মুগু হৈল তার।। জীবন পাইয়। দক্ষ, করে বহু বহু স্তব। বিস্তার করিয়া যায়, কহিতে বিস্তর।। ওখানেতে গতী অঙ্গ, তাজিয়া আপনি। किमादलन (भनकांत्र, जेमदर कननी ।।

নেনকা প্রদৰে তথা, বিশ্বাৎ আকার। ' '
কৈই কালে গৌরী নাম, হইল তাহার।।
বিবাহ করিল। হর, শোক হৈল দুর।
ভোতিল যুগল ৰূপ, কৈলাসের পুর।।
রিদিক কহিছে মন, রুন্দাবন চল।
সাক্ষ হৈল দক্ষয়ক্ত, হবি হরি বল।।

मक्तरक उभाशात मगा छ ।

# গৌরাঙ্গ দেবের উপাখ্যান।

মন ভজরে গৌর। মনের তিমির সব হইবেক দুর॥ বন্দ প্রভু নিভানন্দ, অকৈত প্রভুরে বন্দ, বিশ্বরূপ বিশ্বের ঠাকুর। বন্দ ব্রহ্ম হরিদাস, ঐ ভাবে কর জাশ, হবে স্থার প্রেমের অদ্ধুর॥ ভ্রদয়ে ভকতি ধর, বৈক্ষর বন্দনা কর, রসিকের বাসনা প্রচুর॥

# পয়ার।

উদ্দেশে হরির পার, করিয়া প্রণাম।
চল্টের পামর পাবি, ইফবল্যের ধাম।
এড়াইরা বৈদ্যবাটী, ফেলে নানাদেশ।
উত্তীণ হইবি সিরা, নদীরার শেষ॥
শুনিরাছি সেই নব, রন্দাবন সার।
যেখানে গড়রচন্ত্র, হন অবতার॥
চৈণ্ডন্য চরিতে ইহা, রচিয়াছে যেই।
নাম তার ক্ষদাস, ক্ষদাস সেই॥
ভাগবত বিরচিল, রন্দাবন দাস।
সক্লের সার হরি, ভক্তি বিলাম।

রচিল অনেক গ্রন্থ, রূপ সনাতন। ক্তমত ক্ত রুচে, ক্ত মহাজন। বিশ্বসার নাম তান্ত্র, কহিলেন হর। গউরের জন্ম কথা, সুধার সোসর।। সে সব কহিব আমি। শুন ওরে মন। যাহার প্রবণে তৃপ্ত, হয় জগৰন । প্রথমে নদের চাঁদ, বন্দিলাম ভাই। कौरवत देवजना कथा देवजना र्योगाई।। অতৈত প্রভুর পদ, করিয়া ক্রেণ। বিদিলাম নিত্যানন্দ, প্রভুর চরণ ॥ শির পাড়ি বীরভত্তে, প্রণাম করিয়া। কহিব কিঞ্ছিৎ মন, শুন মন দিয়।। ध्यक्ति भावाम प्रत, इहेटलम हति। टेठ्यमा ब्यासाय उद्घः, (बटम्ब सर्बी ॥ যেই ৰূপে নিভানন্দ, উদয় সত্ত্ত। যেৰূপে অভৈত প্ৰজু, হইলেন হর।। যেৰূপে ইবা ব্ৰহ্মা, ব্ৰহ্ম হরিদাস। ঞ্জিদামের পাবিরাম, কপের প্রকাশ।। হইল মুরলি গুলু, বীর হতুমান। थटखटक अथक लांहे, प्रदर्शत ममान ॥ **र्हे** लिस द्रुर्क्षिति, गर्स्तः डीम धीत्। খ্যাত যার ভট্টাচার্ঘ্য, বিদ্যান গভীর।। नातम करामानम, (गाँगार ठाकूत। ব্দ্যাপি যাহার নাম, খ্যাত তিনপুর।।

যেৰপে অক্সুর হন, কেশন ভারতি। বিশেষ কহিব আনি, সে শব ভারতি।। যথন ছাপরে ছরি, রুষ্ণ অবভার। করিলেন কত সুখ, কতই বিহার।। রন্দাবন মধুপুর, তারকা প্রভাগ। নে সব লীলার ঠাই, রচিয়াছে ব্যাস।। পার্থের সার্থি হয়ে, নন্দের তনয়। হস্তিনার পাগুবেরে, দিলেন অভয়।। কত ঠাই কত রঙ্গ, কভমত বেশ। আগত কলিতে লীলা, করিলেন শেষ।। ভাঙ্গদের ছিল পুরু, হরিদত্ত বর। ভাবিলেন অঙ্গদের, হাতে কলেবর।। माञ्च देश्त कृष्ण लीला, खशुर्व्स विश्वत । সেই অস্থি হৈতে হয়, বৌদ্ধ অবভার।। দেখিয়া কলিতে বড, পাপের প্রবল। क्रिया इहेरव मव, बोरवब कुश्ल ।। যাগ যক্ত ব্ৰভ ফল, কেহবা পাইবা। কেমনে কলির জীব, ভরিয়া যাইবা।। কলিতে কেবল ধন্য, কেশবের নাম। সেই নাম বিলাইছে, ভাবিলেন শ্যাম।। कीदवत भिरवत कमा, जाव छेशिका। আপনি আপন ভক্ত, তেঁই সে হইল।। মরি কি দরালু হরি, মরি কি স্বভাব। ভাবের ভাবক বিনা, কে বুঝিবে ভাব।।

বৈষ্ণবের পাদপত্ম, হ্বদে করি ধ্যান। রচিল রবিকচন্দ্র, ক্লুষ্ণ গুণগান।।

# অদৈত প্রভুর অবতীর্ণ।

গৌর প্রেম দাগরে করিয়া যতন। ছুবিয়া ভুলরে মন, পিরীতি রতন।। ভাবের তরঙ্গ যায়, দদত বহিয়া যায়, হইয়াছে হেছু তায়, করুণা প্রবন।।

#### পয়ার।

বিরিঞ্জি হরের সহ, গোলোকের পতি।
জীবের নিস্তার হেডু, করেন যুক্তি।।
হরির হইল মন, হৈতে অবতার।
যেপারি সংক্রেপে কিছু, জামি কব তার।।
যেকপে হরির নাম, প্রচার হইল।
কহিব মধুর নাম, যে আনিয়া দিল।।
জাপনি আপন ভক্ত, ভক্তের কারণ।
কে কোথা ভাবের লীলা, দেখেছে এমন।।
ভাব প্রনে হুনয়নে, বহিবেক নীর।।
প্রথমেতে শান্তিপুর, শান্তির কারণ।
উদর হইল হর, ত্রিলোকের ধন।।

হইল অতৈত প্রস্কু, নামেব প্রচার। कीरवत प्रक्रम देशन, याशांत क्रकात ॥ গাদি তাঁর শান্তিপুর, আদি কথা এই। আনিয়া গৌরাক দেবে, মিলাইল যেই।। ভারার বিবাহ হৈল, ছুই মাত্র জানি। প্রধানা হইলা ভার, সীতা ঠাকুরাণী।। रमस्का निवनी इत. कम्टब्रत धन। আগনি উদয় মাতা, ভতের কারণ।। হইল ভাঁধার গরে, প্রিয় ছই সূত। গুহ আর গজ মন, ৰূপ গুণ যুত।। ভানিতে মধুর কথা, কৈবল্যের ধাম। शांशांल अठ्ठाटानक, देश्ल छूरे नाम।! এৰূপে অধৈত প্ৰভু, থাকেন তথায়। नर्काण बदलन शति, कथाय कथाय ॥ কিবা লপ কিবা গুণ, কি ভাব সুস্পর। अत्र मर्नेटम यक, एटड़ यांत्र मह ॥ তাঁহার মাহাত্ম আনি, কি করিব গান। ছিভীয় হৈত্লাস যার। গাদির বাথান।। चिजीत मुर्यात मात्र, वांखि कटनवत्। ममधानि हस्य यात्, हत्वन मधेत्।। क्रू ठांक कमन किनि, इहे शानि शम। কর যেন কৃতিয়াছে, ছটি কোকনৰ।। फेंक् ब्राप्त ब्रष्टा क्रिनि, माधी मददान्त । षक् कि हाँ शांत कति, वश मदनारत ॥

শেষন কপের ছটা; গুণেতে ভেষন।
ছরি নাম সুধারস, সাগরে মগন।।
দিলেন ছস্কার এক, করিয়া গৌরব।
গোলোকে গোমোকনাথ, জানিলেন সব।।
রসিক কহিছে মন, বুঝরে নিশ্চয়।
নাম ব্রহ্ম নাম ব্রহ্ম, নাম ব্রহ্মময়।।

# निटानिक श्रवूद खटडीर्ग

कारत्य एक द्र निकानिक। कर्नात्म शाहेरव यनि চরণার विका ॥ क्रुवनरमाहन कुश, कक्षणा माथान कश, कुल सूर्थ गरता-शिरक हानि यक मक्त ॥ खणांकीक खण याँत, खवाकूरल कर्नथात, याँरत खारव कनिवात, शनक मानक ॥ कक्षणा निथान रयहे, खरकरत मर्कन्न रमहे, तनिरकत मांख रगहे, हत्र मसक्त ॥

## श्रात् ।

হোথার গোলোকে হরি, ত্রিলোকের নাথ। থেলিছেন লুকাচুরি, রাথালের সাথ।। দাদশ রাথাল সহ, করেন বিহার। হেনকালে ভাষেত, দিলেন ছছস্কার।।

ভঙ্কারে হরির মনে, পড়ে গেল সব। শীবের নিস্তার হেতু ভাবেন কেশব।। क्छ दिव कछ दिवी, कछ बुनिश्व। কভই রাখালে হরি, করিলা প্রেরণ।। क्रांचिक नक्न क्व. खन श्रविष्य। यबद्ध किन्छानम, हारम्त्र छेन्य।। মায়াতে ত্রজের রাম, রোহিণী কুমার। হইলেন রক্তপিও, মানব আকার।। জাহ্নবীর জলে ভাশ্র, কুণ্ডেভে থাকিয়া। তরঙ্গে পড়িয়া যান, ভাসিয়া ভাসিয়া।। এইৰপে কুণ্ডে থাকি, কিছুকাল কাটে। উত্তীর্ণ হইল গিয়া, নদীয়ার ঘাটে॥ সেইকালে ছিল তথা, হাড়াই পণ্ডিত। বড় পুণ্যবান দ্বিজ, নির্মাল চরিত।। शुर्वकांत वसूरमव, ताइ खनधाम। আছিল ভাঁহার ভার্যা, পদাবতি নাম।। वुक्र (पवकी त्रहे, हांक्नीना नाती।। এক মুখে তাঁর গুণ, বর্ণিতে নাপারি।। করিত নিবাস দোঁহে, একচাকা প্রামে। যেৰূপে পাইল শুন, গোকুলের রামে।। **क्ट्र बल शब्द कार्ड, हाँ एमत्र छेमत्र।** ष्रत्यांनी मञ्जव त्महे, त्कान मत्छ कन्न।। কি কব সে সব কথা, কহিতে অপার। अथारन ब्लाइवीकूरन, अन गमानंत ॥

কুণ্ডের ভিতরে দ্বিজ, দেখিল তথ্ন। রক্তের পিণ্ডেডে দেই, স্থর্গের কিরণ। দেখিয়া বড়ই স্নেহ, অস্মাইল ভার। হাতে করি লয়ে যান, আপন আগার।। যেখানে ব্রাহ্মণী পদ্মা, বলে আছে ঘরে! नहेत्रा छुझ ७ थम, मिल छौत करत ॥ পত্মার হইল স্নেহ, ৰূপ নির্যিয়া। রতন সমান রাখে, যতন করিয়া।। এইৰপে কভ মত, কভ স্নেহ করে। नर्कना तारथन छारत, रुनम् छेशरत ॥ তিল্যাত্র জানন্দের, নাহিক বিরাম। সেই হেতু রাখিলেন, নিত্যানক্ষ <del>নাম।।</del> বিশ্বৰূপ নামে পুত্ৰ, হইল শচীর। ৰূপের নাহিক সীমা, গুণেতে সুধীর।। कड मिरन रमहे भूछ, मन्नामी हहेत। নিতারের অঙ্গে অঙ্গ, মিশাইয়া দিল।। কহিন্তু যে সব কথা, বুঝহ মরম। **अकट**ा करिव शीत, हारमत कनम ॥ যেরপে হইলা হরি, ভক্ত অবভার। যেৰূপে করিলা সব, জীবের উদ্ধার।। গোরার মহিমা কথা, সাগর সমান। রসিক কহিছে ভার, কিঞ্চিৎ সন্ধান।।

# भीतां अपनत्तत अमा।

পোর গোর বল মন। ঘাঁহার উদরে হৈল নদে নব রুদ্যাবন।। ঘাঁহার করুণা দৃষ্টি, কেবল অমৃত রৃষ্টি, ঘাঁহার আঞ্চায় সৃষ্টি, হইল সূজন।। সেই ত্রলা তেজ রাশি, শচীর উদরে আনি, উদয় গোলোকবাসী, বৈকুণ্ঠ বামন।। হরি হরি সুধা রবে, ভারণ কারণ ভবে, রুশিক পাইবে কবে, রুশল চরণ।।

#### পথার।

কলির প্রধান তীর্থ, নলীয়ায় ধাম।
ভানিয়াছ জগলাথ, মিশ্র ঘাঁর নাম।।
ভাঁধার রমণী শাসী, শুন দিয়া মন।
ব্রজের যশোদানন্দ, ভাঁরাই ছুজন।।
হেথায় কৌশল্যা জার, দশর্থ ভূপ।
শুনিতে সে সব কথা, প্রতি অপরপা।।
নন্দ হৈল জগলাথ, শচী নন্দরাণী।।
ভাঁদের পুণ্যের কথা, বলিব যা জানি।।
কহিতে বিশুর হয়, শুনিতে বিশুর।
সংক্রেপে কহিব কিছু, শুনরে পামর।।
নরক হইতে জীব, করিতে উদ্ধার।
চিক্তিলেন চিস্তামণি, হৈতে স্বতার।।

महीत छेरदत कथा, बहैदनन कानि। পুৰ্ণ ৰূপে সম যেন, পুৰ্ণ চাঁদধানি।। যথন গউরে শচী, প্রস্ব হইল। গগণে कुरू भहिक, दम्बक। कहिला। অবনী হইল ভবে, আনিজে মগন। ष्योहेल वगस्त गर्, मलग्र श्वन ।। कृषिन विविः श्रृष्ण, गरन गरनाश्रतः। কমলে কমল ফুটে, শোভা সরোবরে ।। ফুলের গম্বেতে যোগী, ভুলে যায় জপ 🗈 গুঞ্জরে ভ্রমর কত, মুঞ্জরে পাদপ।। षानक छेथटन भएड, खकरखत मरन। काल कि सूरश्त फिन, दनवशरण शरण।। ওখানে ছেরিরা নব, কুমারের কাদ। শচীর উপলে পড়ে, আনন্দের কুপ।। কিবা বদনের ছাঁদ, কিবা নাক কাণ। কিবা কটি কিবা উরু, কিবা সুরু টান।। কিবা অপ্ৰথ ৰূপ, ভুবন জিনিয়া। कांक्ट्य कूमांत्र मात्र, तम क्षेत्र (मथिया।।। বিছাতে বিজ্ঞপ করে, ব্রুপের কিরণ। अर्न हाम कविवाद्य, बद्धण बद्धण। নিরখিয়া নদীয়ার, যতেক রমণী। বলে সে মানুষ নহে, মক্তকের মণি।। হইবে দেবতা কোন, বিধি হরি শিব। আইল অবনী বুঝি, নিস্তারিতে জীব।।

नजूना চরণে কেন, চাঁদের উদয়।

হের দেখ ৰূপ হেরে, মন মুশ্ব হয়।।

আমরি কি অপরূপ, ৰূপ হেরি ঝুরি।

শচীর তনয় কেন, মন করে চুরি।।

বেলা হৈল মনে করি, কিরে যাই ঘর।

শিশু যেন ঈরু হানে, মনের ভিতর।।
গোকুলে যেমন রুক্ত, যশোদার ধন।

তেমনি শচীর এই, গউর রতন।।

কেহ বলে সেই বুঝি, কেহ বলে নয়।

সে ছিল চিকন কালো, নন্দের ভনয়।

কেহ বলে কি জানি, বরণ যদি ফিরে।

আমি বলি সেই কুফ্ত, সদয় শচীরে।।

রিশিক কহিছে এই, যুক্তি বটে সার।

সে ধন বিহনে মন, কে হরিবে জার।।

# नगरीय समगीगटवत भीतमर्भन।

আহামরি, ভূতলে উদয় চাঁদ। হের গো চাঁদের ছাঁদ। আজি যেন নবছীপে তিমির হইল বাদ।। রূপ মোহনীয়, ভাব কমনীয়, একি রমণীয় ফাঁদ। নির-থিয়া ধুখ, মনে হৈল সুখ, ভূরে গেল প্রমাদ।।

#### পয়ার।

এই রপে রামাগণ, কহিয়া বিস্তর। পুনঃ, সে শচীর প্রতি, করিল উত্তর ॥ হের দেখ ঠাকুরাণী, সাবধান হও। পায়েছ অমূল্য ধন, কোলে তুলে লও ৷৷ জম্মে ছিল বিশ্বৰূপ, দিয়া গেল তুঃখ। ইহারে লইয়া কর, সংসারের স্থ।। ফলত অনেক দেখি। যে দিনের যেবা। সকল গাছের কল, ভোগ করে কেবা। পুর্ব্ব ছঃর পাদরিয়া, থাক মায় ছার । পারেছ পুণ্যের কল, জার কোথা যায় ।। যেমন ভোমার মন, হইল তেমন। নৰোগত বিধি নিধি, দিলেন এখন।। আহামরি বড় শোক, পাষেছিলে মনে। ংরিয়া পুত্তের মুখে, চুম্বছ বদনে।। এতই দিবসে তব, যুচে গেল দায়। বিধি না দঁপিলে ধন. কে কোথায় পায় !! এত বলে গেল সবে, নিজ নিজ ঘর। কোলেতে লইল শচী, কুমার স্থুন্দর।। नित्र थिया बक्तक्त्र, मन शिन पूरन। বাছা বলে বুকের, উপরে নিল জুলে॥ মুখপন হেরে শলী, পাদপত্মে চার। ধ্বজবজ্ঞান্তুশ চিহ্ন, দেখিবারে পায়।।

বুকের উপরে ভুঞ্জ, চরণের দাগ। দেখিয়া শচীর হৈল, ভাব অনুরাগ।। • জত্মাইয়া বন্ধ ভাব, পুনঃ গেল দুর। মায়ায় ঘেরিল হরি। গুণের ঠাকুর।। বেমন পৌরাঞ্জদেব, শচীর উদরে। ভেমনি সে নিত্যানন্দ, হাড়াঙ্গের ঘরে।। দিনে দিনে বাড়ে ছই, পুর্ণিমার চাঁদ ककुण मार्थान कथा, मत्नाहत काँ म। ধরিয়া ভক্তের মন মায়া বন পাখী। চরণ পিঞ্জরে দেই, ছুজনার রাখি।। ভূষিয়া পৃষিরা করে, করুণার করে। কুষ্ণনাম সুধা দেই, আহারের তরে 🕸 এমনি ভূষিয়া রাখে, সে পাখীর মন। श्रृमः ना याहेटल (महे, श्रात्रांत कानन । ভাবের ভাবক বিনা, ভাব বুঝা ভার। ভক্তের তারণ জনা, ভক্ত অবতার।। বুঝরে কেমন ভাব। আহামরি মরি। আপনি আপন ভক্ত, স্ইলেন হরি।। ভকত বংসল হবি, ভকতের ধন। कविदलन नवहील, नव तुमावन॥ थना त्म महीत श्रुवा, धना नमीयांत्र। শুনেছি হরির ভক্তি, তেউ বয়ে যায়।। আপনি উদর যথা, ভাবের ভাগুার। কত জনে কত ভাব, লইবে তাহার।।

এক ভাব নহে ভাব, বিস্তর বিস্তর।
কে পারে ঢুকিতে সেই, ভাবের ভিতর।।
ব্রহ্মা আদি উচাটন, যে ভাব ভাবিরা।
সে ভাব পাইব মোরা, কেমন করিয়া।।
পাঁচ ভাবে নর রস, যশত দ্বিগুণ।
হর হৈল পঞ্চ মুখ, গাইতে সে গুণ।।
কি গুণে বর্ণিব আমি, সে রসের ছাঁদ।
কুপা কর ওহে প্রস্কু, নদীয়ার টাঁদ।।
আমি দীন মূচ্মতি, কি জানিব সার।
সগুণে অবণ কর, কীর্জি আপনার।।
বৈক্ষবের পাদপ্রে, করিয়া প্রণাম।
রসিক রচিল এই, মোক্ষ ধাম ধাম।।

## अका हिंदिनारमञ्ज्ञा।

শ্রীগোরাক পদ পদ্ধজ। অরে মন ভজ ভজ।। ভজরে অদৈভচন্দ্র নিভানন্দ পদে মজ।। প্রস্কৃ বীরভদ্র বন্দ, বন্দ সে অচ্যুতানন্দ, রায় বন্ধ রামানন্দ, বন্দরে বৈক্ষবধ্বজ।। বন্দ রূপ সনাতন, ক্ষ্ণ-দাস রন্দাবন, রসিকের সার ধন, বৈক্ষ-বের পদর্জ।।

#### প্রার ৷

্রন্দির গতির টুক্ত, সর্ববিগুণযুত। ভার পরুনিত্যানন, হাড়ায়ের স্তুত।। ব্রহ্ম হরিদাস বন্দি, অদৈত গোঁসাই। ন্তির মনে বীরভত্ত, বন্দিলাম ভাই।। এপ্রের গোবিন্দ বন্দি, বন্দি দেবগণ। বন্দির অচ্যতানন্দ, সীতার নন্দন।। এक्टर अन्द गद्य, इहँ श छेल्लांग। যে ৰূপে জন্মিল সেই, ত্ৰন্ধ হরিদাস । দ্বাপরে যথন হরি, রুক্ষ অবভার। পোগণ লইয়া করে, গোর্ডের বিহার ॥ ধীরে যান ফিন্নে চান, বাজাইয়া বেগু। চাতুরি করিয়া একাং, হরিলেন ধেতু।। অন্তরে জানিয়া কুক্ত পরম নঙ্গল। সেইৰূপ ধেন্ত বৎস করেন সকল ।। দৰ্বব শক্তিমান কুষ্ণে তথন জানিয়া। পুনর্কার দিলা ব্রহ্মা গোগণ আদিয়া 🕕 कृत्कदत कदश्न विधि, अ विधि (कमन) তুমি কর রাখালের, উচ্ছিষ্ট ভোজন।। এ নহে উচিত রুক্ষ, যবনের কাজ। ভোমার কাজেতে বড, পাইলাম লাজ।। এ সব কেশব শুনে, হাসিল তথন। तिहे शार्थ खेळा देशन, किन्छ यवन ॥

কেশবের সুর্ব্ব শাপ, কে সবে রে আর : एत (मर्थ-बन्ता देशन, का**जि**त कुमात ॥ জনম ছিজের কুলে, কাজির পালন। সে বড় ভাবের কথা বুঝে কোন জন।। ভান্তরে হরির ভক্তি, হরিপদে আশ। वाथिल खनांत नाम, खना रिविनांता। কে আর করিবে আন, পুর্বকার পাপে: गतम इहेन बन्धा, इकमारत्व भारिया। नारि थान अञ्च कला नारि उँदा क्या। ভাঁহার আহার নাত্র, হরিনাম সুধা।। হরির প্রেমেতে রভ, হরিগুণ গার। প্রেমের সাগবে ভুবে, নগবে বেডায়।। ভত্র পুজ হরি, এই তাঁর বোল। वनत्न विश्वह इति, नात्मत दिखान।। श्वित्रा यवनशंदग, शंदग श्रद्भाम । এ কেন খোদার সঙ্গে, করিভেছে বাদ । না সানে কোরাণ বিধি, পুরাণে তেম্ম দিনাত্তে আলার নাম, না করে স্মর্গ 🗵 हिन्फुत गकल मोटन, विन्फु थवदनत । কদাচ নাহিক মানে, কি বৃদ্ধির ফের।। এত বলে কভবার, মানা করে ভার। তথাচ কেবল ব্রহ্মা, হরি গুণ গায়।। রাগেতে বাঘের সম, যতেক যবন। মারিয়া গঙ্গার জলে, ফেলিল তথন।।

কলিল পুর্বের কল, ছ:খ হৈল ছুর।
দরার ছুলিরা নিল, গুণের গউর।।
বৈক্ষবের পাদপদ্মে, সমর্পিরা মন।
রসিক রসের গ্রন্থ করিল রচন।।

# গৌরাঞ্চের পাঠ শিকা।

গৌরটাদের কিবা ভাব। অরে মন মনে ভাব, ভুবন জিনিয়া সেই ভাবের প্রাফু-ভাব।। ভাবিলে ভাবনা ক্ষয়, কত ভাব মনে হয়, ভাবনা রে ছরাশয়, কারুণ্য স্বভাব।। আহা মরি ভাব কত, ভাবরে অনবরত, যে ভাব অভাবে যত, সকলি অভাব।।

## বার

जाहाटक कलदब (एथ, स्माक कामि कल! যে ফল বিহনে হয়, জনম বিকল।। কহিতে বিস্তৱ কথা, শুনিতে বিস্তৱ। टेव्हमा हैं। देव कथा. उक्र मदनोहत ।। जिवन जिवन **वाट्डि, नहीं ग्रा**वं है। म कि कर बार्भा कथा। उपत्वत होंपा কুছ পর শশী যেন, ভূবন দ্বিরন। নিশিতে রদ্ধির কিছু, না করে অলস।। তাহার অধিক রৃদ্ধি, আহা মৰে যাই। যেগন গউর টাঁদ, তেমনি নিতাই।। ৰপের সাগরে বছে, কৰুণার চেউ। এ হেন কোথায় বল, দেখিয়াছ কেউ।। অপর সাগরে পাই, হীরা চুণি মতি॥ এ সাগরে মিলে ভাই, কেবল মুক্তি।। কিবা ৰূপবান হুরি, কিবা গুণমর। वरमत तमिक तम, कारन मगूनत ॥ নীলাম্বর চক্রবন্তী, মাডামহ হন। তাহার নিকটে গৌর, পড়িবারে রন।। পঞ্চম বৎসরে খড়ি, গুরু দেই হাতে। বিস্তর বিদ্যার রৃদ্ধি, হইল ভাহাতে।। জানিলা বিস্তর বিদ্যা, বিস্তর সন্ধান ( ৰাাকরণ অভিধান, নাটক পুরাণ।। বিদ্যাতে জলস কিন্তু, পাঠে নাই মন। রর্বদা ভাবেন হরি, ভক্তের কারণ।।

ছাত্রগণ বলে গুরু, দেখি ছুটা বেলা।
ভোমার চৈতনা দেব, পাঠে করে হেলা।।
গুরু বলে একি গুনি, জারে রে গর্ভর।
কেনরে পড়িতে নাহি, হেলা কর দুর।
গর্ভর বলেন পাঠ, করিয়াছি শেষ।
দেখনা জিজ্ঞাসা করি, অশেষ বিশেষ।
জিজ্ঞাসা করিয়া গুরু, দেখিলেন সার।
গুরু হৈতে গুরু জান, হইয়াছে তার।।
ভরেতে গুরুর হয়, কম্পবান উরু।
গুরুর হইল ভবে, গুরুতর জান।
রিসিক হারর পদ, করিতেছে থান।।

# भोत्रात्मत् मार्था।

গৌরচাঁদের ভাব বুঝা ভার। করুণা মাথান রূপ গুণ চমৎকার।। সামান। তিমির যত, গগণচাঁদ করে হত, এ চাঁদে বিনাশ করে মনোগত অক্কার। কুপামৃত বরিষণে, ভকত চকোরগণে, ভুবিলেন গুণনিধি জগতের সার।।

## পয়ার।

এই ব্রুপে শান্তিপুর, থাকিয়া গউর ৷ ষ্ণত্তৈত সহিত থেলে, গুণের ঠাকুর। যেই হরি সে**ই হর, অভেদ আ**ঝার। ভারিতে কলির জীব, ছুই অবভার।। আত্মার ভাভেদ মাত্র, শরীরের ভেদ। সেই বুঝে এই ভত্ত্ব, যেই জানে বেদ 🛚 বেদান্ত বেদের ভাল, ভাগবত সার : চৈতন্য চরিতামৃত, পল্লব তাহার।। ভক্তির ফুলে হয়, নুক্তির কল। কলের সুসাদ জামে সাধক নকল।। কে আছে পামর হের, কমলার বঁণ। হরির মুখেতে শুন, হরিনাম মধু।। আপনি আপন উক্ত, ভক্তের কারণ। এ বড কঠিন ভাব, বুঝে কোন জন।। জাপনি প্রসবে গঙ্গা, আপনার পায় তথাপি হরির ভক্তি, অধিক গঞ্চার।। ना दिन शक्षांत्र शन, ना करत्रव सान। ভক্ত অবভার জন্য, ভকতি জানান।। এক দিন ছাত্রগণ, করিয়া যুকভিত বলে এর নাহি কেন, গঙ্গায় ভকতি ন না করে গঙ্গার স্নান, গঙ্গাজলে ছেব। গুরুর নিকটে কথা, জানাইল শেষ।।

(ए (मर्चि देठजन) (एव, (क्यन (क्यन। নামিতে গঙ্গায় গুৰু, নাহি তার মন।। না স্পর্ফোর জল, নাহি যায় ভীর। না জানি কেমন তার, পাপের শরীর।। দেখেছি অনেক জন, একি ছুরাচার। দেখহ আগানি গুরু, করিয়া বিচার ॥ যথন গঙ্গায় কলা, করিবেন স্থান। চৈতনারে কহিবেন, কোশা খানা আন।। জানিয়া তাহার ভক্তি, মানিবেন তবে। তোমার নিকটে ছাপা, কখন না রবে।। শিযোর কথায় হৈল, গুরুর মনন। প্রভাতে চৈতন্য বলে, ডাকেন তথন গ চলিল গুরুর সঙ্গে, জগতের সার। আর সবে কৌতক, দেখিতে চলে তার । স্থান করি গুৰু ভাকে, চৈতন চৈতন। ত্ববায় লইয়া কোশা, এমত এখন।। যে আৰু বলিয়া ভাবে, কমলার পতি। কেমনে নামিব জলে, কি হইবে গতি !! পুন পুন ডাকে গুরু, জানিতে কারণ। কারণ জানিয়া উঠে ভুবন ভারণ।। যাহার ইচ্ছাতে হয়, জগৎ সংসার। মরি কি বিষ্ণুর মায়া, বুঝে উঠা ভার।। ধরিতে চরণ পত্ম, কত পত্ম উঠে। এক পদ বাড়াইতে, আর পথা ফুটে।।

বিকচ কমল সব, দেখিতে ললিত।
ভূমি হৈতে উঠে পদ্ম, মৃণাল সহিত।।
যেখানে আছেন গুরু, নিরীকণ করি।
কমলে কমল পদ, দিরা যান হরি।।
হেরিয়া গুরুর জান, গুরুতর হয়।
ভাতরে জানিল এই, মানুষত নয়।।
হইবে দেবতা কোন, বুঝি ভাকস্মাৎ।
বিসিক কহিছে টের, পাইবে পাকাৎ।।

# मकीत समा।

#### পয়ার।

विष्णता देएक ना त्या, विष्णत् निकारे।

क्षेत्रक श्रक्त विष्ण, क्षांत कि हू गारे।।

क्षेत्रक श्रक्त विष्ण, क्षांत कि हू गारे।।

क्षेत्रक कि कि का ते, गांत्रक विष्णा।

क्षिता क्षांत्रक विष्णा, क्षांत्रक त्यांत्रक विष्णा।

क्षेत्रक देवत्रक थान, त्यांत्रक के प्रता ।।

क्षेत्रक वित्रता मत्न, क्षांतित्वन गांत।

नमीत्रांत्र क्षांतित्व, मानग देवत का ।।

श्रद्ध क्षांत्र का कि गांत्र, मतांत्र श्रकांत्र।।

वित्र का कि गांत्र, मतांत्र श्रकांत्र।।

वित्र का कि गांत्र, मतांत्र श्रकांत्र।।

গুণের আকার ৰূপ, শশধর জিনি। হইল কুক্সিণী দেবী, ভাঁহার নন্দিনী।। জিমালেন লক্ষা ভেঁই, লক্ষা নাম ভাঁৱ। ৰূপের নাহিক সীমা, গুণ চমৎকার।। কি দিব তুলনা তার, অনর্থক গুলা। गवात जुलना लक्की, लक्कीकात जुला !! এক মুখে কি বর্ণির, আমিত পামর। ত্রদা হৈল চারি মুখ, পঞ্চমুখ হর।। আপনি হইল হরি, সহজ্র বদন। **७थां शिना देश्न मात्र, क्रांशद वर्गन ।।** त्महें कना। कठ मित्न, वित्रलन इति । যেমন স্থানর তেন, মিলিল স্থানরী । বিবাহের পর হরি, বঙ্গদেশে যান। পতির শোকেতে সভী, ত্যকিলা প্রাণ ।। নদীরায় ছিল এক, দিজের কুমার। শুনিয়াছি স্বাত্ন, মিশ্র নাম তাঁর।। জনমিল সভাভামা, ভাঁহার আলয়। সেই থানে বিষ্ণু প্রিয়ে, নাম তাঁর হয় ।। ৰূপনী যেমন হৈল, ভাবিনী তেমন। বিবাহ করিল তারে, গউর বরণ।। এই ৰূপে বিভা করি, কিছু দিন যায়। উদাস इंहेल इति, खकट्छत मांग्र।। ভক্তি ভার মন প্রাণ, ভক্ত ভার দেহ : না পারে ভুলিতে হরি, ভকতের স্নেহ।।

কে বুঝে প্রভুর দয়া, সাগর সমান।
করুণা মাথান যার, নামের বাথান।।
ভূবেছিল হরিনাম, পাপের সাগরে।
এলেন গৌরাঞ্চ দেব, তুলিবার তরে।।
ভাসাইয়া নাম ব্রহ্ম, করিয়া যতন।
সেই হেছু হলো নাম, চৈতন্য রতন।।
দেহটী ভাবের সিন্ধু, রূপ ভায় জল।
কান্ধি ভায় বহিতেছে, তরক্ত তরল।।
ভাক্তি সে ভবের ঘাট, রসের সোপান
কে আছ পামর এসো করিবারে স্থান
রুসিক কহিছে দিন, গেল ওরে মন।
ভূবিয়া ভুলহ শীন্ত, িরীভি রতন।।

भीत्र उक्त नहा नध्य शहर .

হুইল গোরচন্দ্র নবীন সন্ন্যাসী। কটিতে কৌপীন ডোর মুখে মৃত্যাসি॥

## প্রাধ্য ।

এই ৰপে নানা সুখে, গেল কিছু কাল। ভবেত সংসার রসে, ঘটল জ্ঞাল।। জীবের জীবাত্ম। ৰূপ, জীবের লাগিয়া সর্বদা উদাস গৌর, ভাবিয়া ভাবিয়া।

এक मिन नर्म श्रुक, त्रक्रनीत भिष्। উদয় গউরচন্ত্র, কাটোরার দেশ।। যেখানে **ভাশ্রর করে কেশব** ভারথি। সেইধানে উপনীত, পার্থের সার্থি।। কেশবের সঙ্গে হৈল, কেশবের দেখা। কে তার করিতে পারে, আনন্দের লেখা।। কহেন জীগোরচন্দ্র, শুনহ গোঁসাই। चाइक मौकांत दर्ज, जाशनांत टाँहे॥ শুনেছ গোকুলে নেই, রাধা আর স্থাম। মস্ত্রের সহিত দেহ, সেই ছুটা নাম।। কেশব ভারথি কহে, একি প্রমাদ। (क्यटन थ्यन कर, नशीयात हान।। কথায় বলিলে দীকা, কোথায় পাইব। শিখাইয়। দেও যদি, তবেত শিখিব।। তবেত এগৌরচন্দ্র, মডাইয়া কেশ। পবিত্র করিল সেই, কাটোয়ার দেশ। ভূমেতে লিখিয়া বীজ, নামের সহিত। নন্ননে গলিত ধারা, চিত্ত পুলকিত।। আপনি আপন গুরু, শিষ্য আপনার। কেশব ভারথি মাত্র, সাক্ষী হৈল তার।। যেমন দেখিল মন্ত্ৰ, তেমন বলিল। नकान नाथन थन, नकानी इहेल।। পরম সন্মাসী যাঁরে, না পার ভাবিয়া। সে ধন সন্মাসী হয়, ভক্তের লাগিয়া !!

কেবল ভক্তের তরে, ভকতের ধন। হেলায় সন্ধাসধর্ম, করিল গ্রহণ।। এই রূপে দিন ছুই, তিন হৈল গভ। এক মুখে আমি তাঁর, গুণ কব কত।। সক্তেতে নিতাইচাঁদ, ভকতির ভূপ। যার অত্যে মিশাইল, বিশ্বরূপ রূপ । বিশ্বৰূপ সকে যার, বিশ্বৰূপ ধর। ধাইল চকোর ফুটে, কুমুদ বিস্তর।। ত্রিলোক পালক সঙ্গে, বালকের দল। এ বলে উহারে ভাই, এ বেটা পাগল।। কেই দেই করতালি, কেই বলে হায়! মাতিয়া হরিষে তারা, হরি গুণ গায়।। হরি দেন কোলাকুলি, নাচিয়া নাচিয়া। হর্ষিত দেবতাগণে, কৌতুক দেখিয়া।। এ গুরু গোবিন্দ পাদ, পদ্ম করি আদ। রসিক করিল নব, র**সের প্রকাশ**া।

भाष्यक्रमन् ।

পরার।

একপে নদের চাঁদ, সন্মানী হই রা।
নগর বেভিয়া বায়, নাচিয়া নাচিয়া।।

কত দেশ হৈতে আইল, কত মহাজন। অনন্ত করিতে নারে প্রনন্ত রচন।। মুড়াইরা কেশপাশ, ছুঃখ করি দূর। **ज्यानिक ज्यानिक एक्क, मिर्टनमं श्री छेत् ।।** অনেকের বাড়াইল, অনেক আনক। রায় রামানন্দ আরু, বসু রামানন্দ।। খণ্ডেতে মুরলি গুপু, বীর অবতার। একানন একাননে, কত কব ভার।। আর আরু কত শত, কত মহাজন। হয়িলাস ক্লফলাস, ৰূপ সন্তন।। চৌর্যাট্ট মহান্ত আর, দাদশ গোপাল। দেখিতে আইল পায়ে, মনোমত কাল।। কেছ নাচে কেছ গায়, কেছ কয় মরি। क्टि वर्ता वांधा वांधा किट वर्ता हिता আছিল পাবও বড়, দীন ছুরাশয়। লগাই মাধাই ছুটী। ছিজের ভন্য।। দিনান্তরে না লইয়া, কেশবের নাম। কেবল কুকশ্মে রক্ত, নাহিক বিশ্রাম।। পরত্বেষ পর নিন্দা, প্রধনে আশ। ারে কি হইবে ভার, নাহিক ভলাস।। ভাপনা পাষাণ গণে পাষ্থের মন। कीवत्नत विश्व (यम, शरतत कीवन।। কেবল পরের লবে; পরের খাইবে। ভাবিত পরের ধন, কেমনে পাইবে।।

শিশুর যেমন বৃদ্ধি, পশুর যেমন। অসুর রুত্তিতে নাহি, কসুর কথন।। এইমভ ছিল ছুই, দিজের নক্ষন। তরাইতে গৌরাঙ্গের হইল মনন।। সেই খানে গিয়া তবে, জীগৌর নিতাই। ত্ববাহু তুলিয়া বলে, হরি বল ভাই।। জগাই মাধাই শুনে, হরি হরি বোল। বলে একি বেটারা করবে গঞ্জগোল।। কলসীর কানা ক্রোধে, নিক্ষেপ করিল। নিভাইটাদের যাহে, কপাল কাটিল।। বাহির হইয়া রুক্ত, পড়য়ে যখন। পাত लया औरशीवांक, धवरश कथन ।। অনন্ত দেবের রক্ত, কার সাধ্য ধরা। গরায় পডিলে পাছে, তল যায় ধরা।। ভক্তের মঙ্গল ধনা, ভাবিয়া অস্থির। ধরেন স্বকরে তাই, গৌরাঙ্গ রুধির।। অসহা পায়প্ত দোষ, করিল যথন। নিতাইচাঁদের রোয, হইল তথন !! দেখিয়া গভিরচন্দ্র, কহিলেন তার। কি ভাবে কি ভাব আন, এত বড় দায়।। ब नम्र खरक्त लोला, सून्ड क्रम मन। गांधर्या लीलांटक टकन, कटेंधर्या धवन ॥ জন্য জন্য ভাবে হয়, জন্য জন্য মতি। বৈরাগ্য ভাবেতে নাহি, রাগের পদ্ধতি।। বৈরাগ্য পরম ধর্ম, সব শাস্ত্রে কয়।

নেখানে বৈরাগ্যভাব, সেই খানে জয়।

একপে গউরচন্দ্র, কহিলা বচন।

রচিল রসিকচন্দ্র, শুনহ স্কুজন।।

শ্বগাই মাথাইয়ের বৈরাগাভাব

# मध्जिलनी।

হরির বচন, শুনিরা তথন।
নিতাই তাজিল ক্রোধ।
গউর নিতাই, চলে হুটি ভাই।
সবোধে অপিতে বোধ।।
কগৎ তারণ, ভকত কারণ,
ভাবেন গউর চাঁদ।
বেমন জগাই, তেমনি মাধাই,
এত বড় পরমাদ।।
এতেক ভাবিরা, মন্ত্রণা করিরা,
নিতারে লইরা সাথে।
চলে গুণাকর, দরার সাগর,
কে জানে ত্রিলোক নাথে।।
জগাই হাধাই, যথা হুই ভাই,
সেইখানে গিয়া হরি।

কতেক বলিয়া, কভ বুঝাইয়া, তরাইল দয়। करित ॥ সঞ্গে অভয়, দিয়া দয়াময়. ' পাতক করেন নাশ। बनाई माधाई, नात हुत जाई, र्शिनाट्य बट्गालाम् ॥ নাচিয়া নাচিয়া, 'পিত্রীতি বাচিয়া, ভ্রমণ করুরে রুঞ্চে। পাপ ভাপ যভ, স্ব হৈল হত, বেছার হরির সক্ষে।। মুখে হরি বোল, প্রেমের হিলোল, মাঝারে ভাসিয়া যায়। जल निता हृश्यः छनदाट सूथः ছরি ছরি গুণগার।। (मर्ट् रेश्ल तम, कड कव यम, व्यथाना यादर रदत । শাধনের জোরে, ভকতির জোরে, শ্রীগোরাক বদ্ধ করে।। যে ছিল পাষ্ট্র পাপ করে খণ্ড, অখণ্ড মণ্ডলাকার। ভকতের ধন, ি সেই নারায়ণ, . কে জানে মহিমা ভার।। ভাপার মহিমা, দিতে ভার সীমা,

্ নাপারে জিমূলপাণী।

ভক্ত অবতার, ত্রিলোক জাঁধার,
আমি জাঁর কিবা জানি।।
ভবের বারীতে, ভকতে তারিতে,
উদয় নদের চাঁদ।
কি গুণ কি কপ, কহিব কি কপ,
কেবল করুণা কাঁদ।।
কোটি চাঁদ মিলে, একত্র হইলে,
সে চাঁদে ভুলনা নয়।
কৈতে গুণ তারি, ত্রন্ধা মানে হারি,
বিসক কোথাবা বয়।।

গৌরচন্দ্রে কৃত হিতোপদেশ

শ্রমিত্য সংসারে কেন ভ্রম অকারণ।
ভূমি কার কে ভোমার কররে মরেণ।।
মিছা ঘর পরিবার, কুট্ম বান্ধব কার,
নির্ধিবে অন্ধকার, মুদিলে নয়ন।।
বারেক সচেষ্ট হও, মুধে হরি হরি কও,
রাসক কহিছে লও, চরণে শরণ।।
প্রার।

এইৰপে কিছু দিন, ভ্ৰমিয়া গউর। জীবের অনেক পাপ, ক্রিলেন দুর॥

তবেত ভাবিলা মনে, দেখিতে স্বধাম। স্থাপ্তে নাচিয়া যান, মুখে হরি নাম।। সঙ্গেতে বৈঞ্ব সব, হাজারে হাজার। नोठिया नाठिया थान, नटपत वांकात ॥ আগেতে দয়াল চাঁদ, বামেতে নিতাই। থাকিয়া থাকিয়া বলে, হরি বল ভাই।। দিন যায় মিছা কাজে, রাত্রি যার মুমে। কেনরে পড়েছ জীব, এমারার ধুমে।। कीवन जलात विश्व, जीवतन (यमन। দেখিতে দেখিতে ভর্ম, হইবে তেমন।। क्चन आंगिया काल, बाखिटवक कद : कथन याहिएक इत्त, भामन नगत ।। বার নাই ডিখি নাই, কাল নাই ভাব। ভরু যেতে অনুরোধ, না মানে কাছাব।। माश्रा यूग चूमाहेशा, मिहा पिन यात्र। ্রথন ভ্যক্তিয়া নিদ্রা, উঠরে স্থরায় ॥ এ দেহ মন্দিরে বাস, কতক্ষণ আর। ু বালকের থেলা ঘর, যেমন প্রকার।। কথন ভাঙ্গিবে ঘর, দেখিতে দেখিতে। উপার কররে দিন, থাকিতে থাকিতে।। জন্মিলে মরণ আছে, কে করিবে নয়। **ख्टर एक्ट हित्रमिन, एक वैंाहिया, तत्र ।।** পাষাণ গলিয়া যায়, লৌহ হয় মাটী। চিরদিন নাহি থাকে, রক্ষবস্থ বাটা।।<sup>\*</sup>

এমন যে বসুমতি, অটল ভূবন। **जर्मा कांनिटर आहर, रेशंत शंजन।।** বেছাও ভাজেন দেহ, ইম্পেণত যায়। চটলে নিত্ৰম কাল, কে রাখে কাহায় II ममत्य याहित्क कृत्त, भगतन्त याहि। रेन्टवटक विश्वन कार्टि, मुक्त कार्टि नाई ॥ करमा घाँदिय योद, य मिन मद्रण। कारवक त्थारवह फिन, क्वरत स्माहत ।। अवन उतिहा किछि, नवन युनिया। সেই যে পডিয়া ববে, জীবন ভাজিয়া ।৷ কোথা রবে অহস্কার, কোথা রবে খর। কোথার থাকিবে প্রাণ, কোথা কলেবর ।; धमन श्रिमनी जारी।, थाकिरव काथाम। তে আসি যোগাবে মন, কথায় কথায় !! অপার বাসনা কোথা, থাকিবে তথন : (काथा इत्त कना। बात, काथात्र मण्डन। সকলি স্বপ্নের ন্যায়, মায়ার কারণ। क्रांतिशा (क्रमद्र कीत, श्दब्र मग्रम ।। প্রতাহ শুনিছ আজি, অমুক মরিল। ভথাপিছ কেন তোর, ক্লান না হইল।। यथन अनिरल मृख्रा, उथनि छेतान। ক্ষণেক বিলয়ে কর, ছোর অভিলাব।। ै আপনি কি না মসিবে, ভাবিয়াছ সার। বসিক কহিছে বটে, এইত প্ৰকার ।।

# त्रीत्रह**रक्ततः छ**न ७ मक्कीश गमम।

দিন গেলরে অসাস্ত জন, কি কর এখন।
ভাজিয়া অনিভা আশা ভাব নিভা নিরঞ্জন।। সেই সভা সেই সভা যিনি সভা
সনাতন। আর যত দেখ সব মায়ারি
কারণ।। ভাব সভা বল সভা, মনে এই
কর সভা, সম্বরে হইবে বৈকুপ্তে গমন।।
লা জান মায়ার মায়া কারে মায়া কর।
সংসার মায়ার নাস সব পরিহর। দায়া
মৃত আর ভাই, ভবেত সম্পর্ক নাই,
রসিক ভাধিছে ভাই, মনে অনুক্ষণ।।

### প্ৰাৰ :

একপে গউরচন্ত্র, অশেষ বিশেষ।
ভক্তেরে বুকাতে কত, দেন উপদেশ।।
নাচিতে নাচিতে যান, নদের বাজার।
সঙ্গেতে ভকতগণ, হাজার হাজার।।
কত নাচে কত গায়, কহিতে প্রচুর।
ছবাভ তুলিয়া নাচে, নিতাই গউর।।
ভজরে ভজরে জীব, জগতের সার।
গঙ্গার উত্তব হৈল, চরণে যাঁহার।।
যাঁহার মায়ায় য়ৢৠ, আছে তিনপুর।
স্মারিলে যাঁহার নাম, পাপ যায় য়ুর।।

যাঁহার বাঁশীর গান, গোকুলে শুনিয়া। ওনেছ গমুনা যায়, উজান বহিয়া।। অকুল কাণ্ডারী সেই, গোকুলের ধন। দেবের ছল্ল ভ যিনি, দেব নারায়ণ।। করে জপ নাম ভার, পরে হবে জয়। নাম ব্ৰহ্ম নাম ব্ৰহ্ম, নাম ব্ৰহ্মময়।। এই ৰূপে হরি হরি, নাম বিভরিয়া। नरमञ्ज्ञ वाकारत योज, नाहिश्वा नाहिश्वा দেখিতে নগরে লোক, ধার কতজন। বিৰূপে করিব ভার, কভই বর্ণন।। নগরের নাগরী, **ধাইল বভত**র। এবলে উহারে বই, একি মনোহর ।। यनगरमाञ्च किया, यनरमञ्जीन । নগর বেভিয়া যায়, ছই খানি চাঁদ।। मर्भन क्रिए धन, शश्रुव हॅार । প্रভिन भागांत भन, ७ बत्भत कौरम ।। এমন বয়সে সই, কেমন করিয়া। পরেছে কৌপীন ডোর, কটিতে বেড়িয়া।। কে দিল সাজায়ে যোগী, কে হরিল বাস। খাইয়া চক্ষের মাথা, কে করে উদাস।। . কিবা ৰূপ কিবা ঠাম, কি মধুর হাসি। हैका इस हत्र शक्का इह मांगी॥ कि नाम खनादत्र यात्र, खन खन गरे। मन (य र्रात्रश निन, कांत्र कांट्र करें।।

উভ উভু করে মন উহার লাগিয়া। নিকটে পাইলে রই, চরণ ধরিয়া।। শাামের লাগিয়া যেন, প্রজের রমণী। করিছে আমার মন, আজি যে তেমনি।। না জানি উহার সঞ্চ, কেমনে পাইন। काभिनी इहेबा आमि, (काथांत्र गाहेव।। কি কেরে পড়িত্ব সই, কি ৰূপ হেরিত্ব 🛚 আহামরি মরি মরি, গুমরি মরিভু।। কি কাজ দংশারে থাকি, কি কাজ লজ্জায় : ভিজিব গোরারে আর, মজিব ও পায়।৷ কোথায় বসতি করে, কোথার গমন। ভিজ্ঞানা করিব চল, ইহার কারণ।। थांत खन नत्ल गरे, त्यांत मत्न लया। এই সে গৌরাঙ্গ দেব, সচির ভনর।। সঙ্গেতে নিভাই চাঁদ, হাডাবের স্কৃত। क्रवनत्माहन इति, क्र खनयुक।। ভাবের নাহিক দীমা, প্রেমের ঠাকুর। বদনে হরির নাম, শুনিতে মধুর !! এই রূপে রামাগণ, কহে পরস্পর । র্ষিক রচিল গীত, রুসের সাগর ।।

# मधी कांद्रबद द्वांपन ।

কে সাজালে ননীক সন্ধানী। আমার গোরচাঁদে।। দেখেছ গো নদে বাসি।।
দশু কমগুলু করে, কটিতে কোপিণ পরে,
মন যে কেমন করে, নমন সলিতে
ভাসি। কোনপথে কোথা যাব, কোথা
গেলে দেখা পাব, কেন গো আমার
গোরা, করিল উদাসী।। বিশ্বকপ পূজ
ছিল, নিভারেতে মিশাইল, আবার
গৌর কেন দিল ছঃধরাশি।। ঘরে আছে
বিক্তিমে, কে রাখিবে প্রবোধিয়ে,
বুঝি গৃহ ভায়াগিয়ে, গৌর চলিল কাশী।।

नगत (विष्त्रा यात्र, ननीतांत हाँ मः ।
उथारन कननी काँत्र, श्वनिन मः वाम ॥
विष्ठा । जाकारत थात्र, हरक बरह कंत ।
नरमत वाकारत भित्रा, किळारम कुमेन ॥
रमधा रम भाषितहाँ में, रमधात्र निकारे
श्वनित्र व्यामित्राहिन, जाता कृषी जारे ॥
करत नगतवामि, रमधात्र यारेव ।
भाषितहाँ एमत स्थान रमधात्र भारेव ॥
रमधात्र भाषत्र (भारत स्थान रमधात्र भारेव ॥
रमधात्र (भन्दत रमोदत, भथ रमधारेता ॥

কে সাজায়ে দিল যোগী, কে করিল দুর। কে আসি ভাঙ্গিল মোর, আনন্দের পুর।। অভাগী সচীৱে কেন, শোকেতে ঘেরিয়া। কে হানিল বক্তাঘাৎ, এমন করিয়া !! এই যে আসিয়াছিল, গোউর রতন। क् लक्ष काथां अल कः विनीत यम ।। হাররে নগরবাসী, প্রাণ যায় হায়। কি করি কোখার যাব, কোথা পাব ভার। मन करत छेडू छेडू, खान वरन गरि। (होनिक खाँशांव (मशि, कांव लाटन हांडे ॥ एक ज्यांनि मिलांदत फिरव, क् इतिरव कु:थं। কেমনে হেরিব আমি, গোউরের মধ।। পলকে প্রকর হয়, যারে না হেরিয়া। क फिल अमन धरन, महारेगी कविया।। किता भिष्ठितत प्रथे, किता दन सम्म। বাপধন বাছা মোর, হৃদরের ধন।। কোথারে গোউরচাদ, মোরে দিয়া ভাপ। নদীয়া ভাঁধার করি, কোথা গেলি বাপ। পারেছি কঠোর স্থালা, জঠরে ধরিয়া এমন নিষ্ঠুর হৈলি, কেমন করিয়া।। মান যায় প্রাণ যায়, লাগিয়া তোমার। বারেক এসোরে বাছা, কোলেতে আমার।। ना रहरत रहामात्र सूच, भूर्गिमात हाँ। ত্রু:খেতে দহিল অঞ্চ একি পরমাদ।।

নর্নে তোমার দেখা, যদি না পাইব। **তেমন বদন**চাঁদে, কেমনে ভুলিব।। কেমনে পাদরি মুখ, থাকিব হেখার। विमीर्ग इण्डाह वुक. कथाम कथाम ॥ কোথায় রহিলে ভুমি, আমারে ভুলিয়া। এ বুঝি জীবন গেল, জলিয়া জলিয়া।। আরেরে গোউরচাঁদ, না ছেরে তোমায়। যে করে আমার প্রাণ, জানাইব কার।। গোউর গোউর বুলি, বলিয়া বলিয়া। कछ ना काँदमन मही, धुलात्र পড़िया॥ দিন গেল রাত্রে হৈল, চচ্চের উদয়। হেরিয়া শচির হৈল, প্রফুল হৃদয় ॥ ৰলে কে গোউর এলি, এত দিন পর। হৃদর জুড়াল হেরে, মুখ শশধর।। निक्रमी काँ पित्रा क्यू, अ नट्ट (शाखेत । গগণে উঠিয়া চাঁদ, তম করে দুর।। রুসিক কহিছে হরি, কান্দিলে কি রন্। গিয়াছে ভক্তের ধন ভক্তের কারণ।।

# नटमवानीमिटगत्र्थम।

একি গৌরটাদরে। জগতের মোহনীয় কাঁদ রে॥ কি নাম গুনালে গোরা, পাগল হইন্থ মোরা। ভূলিতে না পারি আর, ঘটল প্রমাদ রে। নাম নর সুধারাণি, শুনিতে কি ভালবাসি, কি করিল হাসি হাসি, মধুর নিনাদরে।। এই বলি হরি হরি, কোথা গেল পরিহরি। রসিক কহিছে মরি, কি কপের ছাদেরে।।

## প্রার ।

এইৰূপে সচি কান্দে, বিনিয়া বিনিয়া। কান্দিছেন বিফুপ্রিয়ে, ধূলায় পডিয়া।। নগর বাসিনী আরে, নগর বাসিরা। কান্দিয়া কহিছে আরু কোখা যাই ফিরা।। না যাইব গুহে আর, না করিব বাস। করিল গোউরচন্দ্র, সকলে উদাস।। **ठल ठल এই ছার, গৃহে দিয়া ছাই।**। যেখানে গোউরচন্দ্র, সেইখানে যাই।। कि नाम खनादा शिल, कि दोल विनि । না জানি গৌরাঙ্গ দেব, কি ফেরে ফেলিল।। मन तल हित हित, थांग तल छाडे। পাগল করিয়া গেল, গোউর নিতাই।। এমন মধুর নাম, নাহি যার পর। অমৃত হইতে নাম, অমৃত বিস্তর ।। এ নাম জপিয়া শুনি, যোগী হন শিব। ভাবিলে ভাবনা যায়, ভাবনারে জীব।।

क् जादन नारमत छन, क् करत निर्वत्र। जगदन किंशित यात्र, भगदनत् अत्र ॥ শুনিতে অক্ষর হুটী, ভাব বহুতর। না পার নামের তত্ত্ব, সুরাস্থর নর।। কে হন রাখিল হরি, নাম স্থাময়।। এক নাম হৈছে হয়, ভুবনের জয়।। कार्वित्व नवात जान, ना जावित्व प्रःथ। অহিকে বিস্তর ফল, পারত্রিকে সুখ।। লিখ নাম দেখ নাম, জপ নাম সার। বারেক ভাবিলে তার, ভাবনা কি আর।। কি বোল বলিয়া গেল সচির তনয়। পূচেতে থাকিতে মন, জিলেক না হয়।। ভাবরে পামর জীব, হরি নাম সার। কি ছার মিছার কাজে, ভ্রমিছ সংসার।। আসার আমার করি, কেন কাট কাল। ক্খন কালের করে, ঘটিবে জঞাল ।। এখন সময় আছে, ভাবিতে সুসার। অলস্য ত্যজিয়া কর, ভাবনা তাহার।। যাঁহার রূপায় হৈল, সৃষ্টির সৃত্তন। বাঁহ'র নির্মে কিরে, শশী ভারাগণ।। লিরের সহস্র দলে, বস্তি বাঁহার। জগৎ রয়েছে গাঁথা, মানায় ভাঁহার।। ভিনি তেজ ভিনি বায়ু- ভিনি সে আকাশ। इन वन यक किंदू, कौशंदर धकाम ॥

# মনোদীকা স্থাতর্ক্তিনী। রসিক কহিছে সেই, ভব সার সার। কবে সে উদয় হবে, হৃদয়ে আমার।।

# टेरमध्य गाहाचाः

বৈশ্ব মাহাত্ম্য যত, কে পারে কহিছে তত। বারেক স্মরিলে হয় পাপ তাপ সব হড। যেখানে বৈশ্ববগণ, হরি সেইখানে রম, সেই স্থাম রুন্দাবন, বাাসের রচিত মত। বৈশ্ববের পদবঞ্জ, ভারে মন ভাতে মজ, প্রীপাদপদ্ধজ্ঞ ভজ, ভক্তিতে হয়ে রত।। চরণে কি গুণ ধরে, জীবের জিভাপ হরে, রনিক প্রণাম করে, সেচরণে শত শভ।।

#### পয়ার।

এই ৰূপে নবদ্বীপ, বালিরা সকল।
ভাবিরা হরির নাম, চক্ষে বহু জল।।
হেথার গোরাক্ষদেব, দেবের প্রধান।
বেড়াইরা নানা দেশ, এড়াইরা যান।।
সঙ্গেতে বৈক্ষবলণ, কত শভগণ।
হরিঞ্জা গান করে, করেন জনণ।।

ভার। সম ভারা গৌর, চাঁদেরে ঘেরিয়া। নগর নগরে ভ্রমে, হর্ষিত হইরা।। বিস্তর হ**ইল রুদ্ধি, বৈক্ষবের দল**। এক মুখে কভ তার কহিব মঞ্চল।! পুণ্যের নাহিক সীমা, যশের ঠাকুর। ऋतिरल योरमत नाम, পाश इम्र भूत।। মহাপুণাবান সব, বৈকাবের সার। प्याहिल गारमत मुक्त, कमत्र आंशांत ॥ সেই যে গুছেতে ব্ৰন্ধ, নাথের নিবাস। রাধিকাবলভ ক্লফ, করিলেন রাস।। কি আছে বৈঞ্চব সম, মাধ্বের ধন। বৈষ্ণবের প্রেমে হরিন गদাই মগন।। বৈষ্ণব বিষ্ণুর ভক্ত, বিষ্ণু তান্ন রত। বিষ্ণুর সম্পত্য নাই, বৈ**ক্ষবের মত**।। থে খানে বৈক্ষব গণ, সেই খানে ছরি। বৈক্ষব সিন্ধুয় জল, মাধব লহরী।। যে ভজে বৈষ্ণব গণ, ধনা সেই নর। देवकादवत मान् कारन, विकू शतारशत ॥ প্রবণে বৈষ্ণব তত্ত্ব, দূরে যায় **ছঃখ**়। বৈক্ষব নিন্দায় হয়, বিষ্ণুর ক্ষন্ত্রথ।। বৈক্ষবের পদরেণ্য পড়মে যথায়। তাহার মাহাত্ম কত, কহিব কথায়।। মৃত্তিকা পবিত্র ধ্য়, দেশের ম<del>ঙ্গ</del>ল ৷ তাপ বা কোথায় থাকে, পাপ যায় তল।।

বিষ্ণুর ভকতি ছাড়ি, বৈঞ্চবেতে মন। त्य रमम् जाशांत क्रके, नन नातांत्रं।।। জানিলে শুনিলে সব, এডাইবে দায়। মজরে মজরে জীব, বৈষ্ণবের পায়! বৈক্ষবের দাস হেতে, বিক্রুর বিধান। रेवक्थव इ**हेल जुके**, विकु क्लाश यान ॥ **रमर्थिष्ट् करनक श्रष्टुः एरनीष्ट्र** श्रमन । বৈক্ষবের পিছে পিছে, বিষ্ণুর গমন।। যেখানে বৈক্ষব ভুষ্ট, সেইখানে শ্যাম : इहेटल रेन्कव क्यो, विकु इस वाम ।। বৈষ্ণবের গলে কপ্তি, তুলদীর হার। এক মুখে কভ কব, মাহাত্ম তাহার।। দর্শনে পাপের নাশ, স্পর্শনে প্রচুর। পুণ্যের উদয় হয়, পাপ যায় দুর।। বারণে হরণ করে, শমনের ভয় জপেতে সাধক সিদ্ধ, জানিবে নিশ্চয়।। বিশেষ বর্ণনে সার, নহেত নিপুন। নিগুণ রুসিক কহে, বৈষ্ণবের গুণ ।।

বৈষ্ণবের তেজঃ হাস:

গৌর বড় দয়াময়। যাঁহার স্মরণে হয় পাপ তাপ কয়॥ ভাবিলে চরণারবিক, দূরে যার নিরানন্দ, লহ্রে পরমানন্দ,

ক্রীচরণাশ্রয়। কিবা দ্ধণ কিবা নাম, কি
গুণের গুণধাম, পদে যার মোক্ষধাম,
চারিবেদে কয়।। অনাথের বন্ধু হরি,
গৌরক্তপে অবভরি, রসিক কহিছে মরি,
কি ভাবে উদয়।।

#### প্রার ।

এ হেন ভকত সঙ্গে, নদীয়ার চাঁদ। अभग करतम कछ, कि कव मश्वाम ॥ নেশে দেশে পাড়া পাড়া, হাট ঘাট যত : জ্ঞমিয়া হরির নাম, কন অৰিরত। এমনি দয়ালু সেই, গউর নিভাই। সবার মঞ্জন কারী, তাঁরা ছটা ভাই।। ্রপের নাহিক সীমা, গুণেও তেমন। জনাথ দীনের বন্ধু, কে আছে এমন।। দেখহ হরির দয়া, এমনি প্রকাশ। কার্গ্যের পাতক সব, হইল বিনাশ।। হরি প্রেম সরোবর, ভক্ত মীনগণ। नर्तना ভাবের জলে, জাছয়ে মগন।। ভাসিয়া বেড়ান কিবা, দেখিতে সুন্দর। যে জানে ইহার মর্ম্ম, ধন্য সেই নর।। इ**डेन প্রবল বড়, বৈঞ্চবের বল**। তেজেতে দহিল ভারা, ভুবন মঞ্ল।।

এমনি হইল তেজ, কহিতে জপার। অনল করয়ে দৃষ্ট, অনল জাকার।। হরির ভেজেতে তেজঃ প্রবল অধিক। কতবা ঋষির তেজঃ, ধিক ধিক ধিক।। পরম তেজস্বী হৈল, পরম ব্যাপক। পরম সাধক লব, পরম জাপক ॥ পরন ধার্ম্মিক ভারা, পরম বৈষ্ণব। সঞ্জের সম্বল হরি, ফিনি ভব ধব।। ভেজপ্র জ দারুণ বৈরাগী যত সব। এক এন জন খেন, দ্বিভীয় ভৈরব।। এমনি তেজ্জী গ্ৰহ, এমনি সাধক। (य मिदक निवृद्ध करल, तम मिदक शांवक।: विषय वटनत बृद्धि, इन्न शहर। সে বল বিনাশ হেডু, ভাবের গউর।। टेन ऋव चारिक देवन, देनकानीत मन। ক্রনেতে হরিল সারা, বৈষ্ণবের বল।। বৈক্ষৰ বৈক্ষ্যী সব, মিলিয়া ভখন। কভ দেশে কভ ঠাই, থাকে কভজন। मदनव यांनरम करत, धरनत मक्तान। इहेल बरलब हांग, जरलब गर्भान।। (म नम्र खरणव मङ्गी, मिन्निरीत वन। ন্যাভা আরু নেভি মাত্র, ব্ঝিবে সকল।। তবেত গৌরাঞ্চ দেব, জগতের সার। ভ্রমিলেন কত দেশ, কত কব তার।।

শান্তিপুরে অকৈত, প্রভুর কাছে গিয়া।
তথার করিল দেখা, দচীরে আনিয়া।।
অধিকা নিবাদী যার, গৌরীদাদ নাম।
রজের স্থবল সথা, দেই গুণধাম,
পণ্ডিত বিখ্যাত নাম, রাফ্র বক্ত দূর।
কপ বা কহিব কত, গুণের ঠাকুর।।
ভাগার গৃংহতে কাল কিঞ্চিৎ বঞ্চিয়া।
তবেত গোউর মনে, নাম বিনাইয়া।।
আঞ্জি গোবিন্দ পাদ, পদ্ম করি আশ।
বচিল ব্লিকচন্দ্র, চৈতন্য বিলাদ।।

## ভেকেব মাহালা।

ইচ্চা ময় গৌরহরি। কতই ভাবের ভাব, আহা মরি মরি।। কি ভাবে কারে তারে, কে চিনিতে পারে তারে, তকতি সাগরে যার, করুণা লহরী।। যত ভাব ভাব মনে, ভাব রদ্ধি প্রতিক্ষণে, যে ভাবে ভাবের ধনে, পার পদতরী। ভাবরূপ স্রোব্রে, পাদপদ্ম শোভা করে রসিক পাইলে পরে, রাথে কদে ধরি

# गतानीक स्थाउतक्रिगी।

#### পয়ার।

একপে গোউরচন্দ্র, বিলান অভয়। সঙ্গেতে মহন্তগণ, চক্রবর্ত্তী হয়।। কৰিৱাজ অন্ধ জন, গোপাল ভাদশ আব বত শিষাগণ, কে করে প্রকাশ। যখন হইল ব্রজ, বিহারের জন্ত। চৌষটি সথিৱ। হয়, চৌষটি মহন্ত।। আরু গে প্রধান স্থী। অফজন তায়। স্পষ্ট অবভার হয়ে, অফীদিকে ধার।। জগদীশ পণ্ডিতের, শুনিয়াছ নাম। আছিল ব্রজের স্থী, সেই গুণধাম।। তাহারে লইয়া হরি, ভ্রমিয়। বিস্তর। পাপীর বৃচায়ে দিল, তাপিত অন্তর ॥ क बादन (शांखेबर्हादम, क्र बादन चर्चाव। যেই জানে গেই জানে, ভাবের প্রভাব।। এক ভাব নহে ভাব, কতই প্রকার : কত ভাবে করিলেন, কতই বিস্তার-।। দয়ার ঠাকুর সেই, নদীয়ার চাঁদ। কি তাঁর ৰূপের ছটা. করুণার ফাঁদ।। তারিলেন রূপা নিধি, কতশত নর। এমনি ভেকের মর্ম্ম, বুঝরে পামর।। शक्तर्यत्र शत्य मित्रा, कुलगीत माल। আপনি প্রণাম করে, সচীর তুলাল।।

গোটর সবার বভ্, ভেক বছ ভার। থে জানে ভেকের মর্মা, সেই জানে সার।। যতনে কি অষতনে, ভেক যে লইবে। ভাছারে হরির দরা, অবশ্য হইবে ॥ কৃহিব তাহার কথা, বিশেব করিয়া। कहिरम् (७८कत् सर्या, १७न अन निम्न) ।। विक्र शांध श नद् , हिल धक अन । কেবল করিত গেই, কুপথে ভ্রমণ।। আছিল তাহার তেক, বৈঞ্বের মত। সংখ্যার অভীত পাপ, করিয়াছে কত।। কভাই দিবসে ভার, হইল মরণ। कविल भवन हुट्छ, कोरन इत्र ॥ সেই সে পাপীর দেহ, তরঙ্গে প্রচুর। ভাসিতে গঞ্চার জলে: দেখিলা গোউর !! কটিতে কৌপীন গলে, তুলসীর হার। निর্ধি করিল দ্যা, সচির কুমার ।। विद्माव क्रांत्न इति, ता क्रम कुक्म। বিষ্ণু নয় রুষ্ট তার, জেকের কারণ।। দয়ার প্রকাশ করি, ভাবিলেন আসি। ধন্য রে ছব্রির ভেক, সাবাসি সাবাসি 🛚 এম্নি ভেকের গুণ, ভেক কর সার। ভেকের গুণেতে হয়, পাপের উদ্ধার।। মুক্তি মাধান ভেক, ভক্তি করিয়া। যে করে ধারণ যায়, সে জন ভরিয়া॥

ধনা সে গোউর চাঁদ, ধনা সে নিডাই।
ধনা সে হরির নাম, তুলা যার নাই।।
নদীরার লোক ধনা, ধনা কলিকাল।
যে যুগে গোউর হৈলা, নন্দের গোগাল
ধনা সে কলির জীব, বৈক্ষবের দল।
যাদের লাগিয়া হরি, আপনি পাগল।।
কেশব ভারথি ধনা, সাধুর প্রধান।
রবিকেব গীত ধনা, গোউরের গান।।

নিতাইটাদের গ্রহ্মেশ্র যুক্তি।

কি কর অকারণ ধনের সঞ্চয়। নয়ন

যুদিলে পর কিছু কিছু নয়।। ছরিপদ
রজ্ঞ ধন, তাতে কর সযতন, অনিতা
বিযয়ে মন, দেওয়া উচিত নয়।। মিছা
কর উপার্জন, মিছা কর পর্যাটন,
ভাবরে পরম ধন, দেবকী তনয়।।

সংসারে অবার সহ, সার মাত্র সে
কেশব, যাহারে ভাবিয়াশব, রূপ ত্রিলোচন। সকল বেদের সার, সম্পদের মুলাধার, রসিক যাচয়ে তার চরণ আগ্রেয়।।

PRI

একপে ভারিয়া নর, বিস্তর অধম। পুরুবোত্তমেতে যান, পুরুষ উত্তম।।

সঙ্গেতে বলাই চাঁদ, রক্ষেতে গমন। क्रविन नरमत् हाँमः खीरद्ध खीवन ॥ কক্ষেতে ভিক্ষার ঝুলি, সঙ্গে নাই ধন। প্রভাহ করেন ভিক্ষা, মুভন মুভন।। এৰপে কাটিয়া কাল, যান কভচুর। ধনের সঞ্চয় নাহি, করেন গোউর।। করিল নিভাই টাদ, ধনের সঞ্চয়। शांकित्वत्र मत्न देशना (तार्षत्र केन्द्र ।! ড়াকিয়া গোউর কন শুনহ নিতাই। সম্যাসের ধর্ম এত, কভু নহে ভাই।। এখন তোমার আছে, ধন অভিলাব। এ হেতু উচিত নহে, মম সহ বাস।। এত অভিলাষ যদি, দেহেতে তোমার। ভাবে সে কেমনে যাবে, সক্তেভে আমার মনের বাসনা তাজ, তাজ অহস্কার। ব্রবিবে মরম ভবে, সন্ন্যানের শার।। যথন সংসারে সহ, উদাস হইবে। তবেত সন্মাস ধর্ম, গ্রহণ করিবে।। স্থ্যাস পরম ধর্ম, কহিতে অপার। কিঞ্চিৎ জানেন মর্মা, পঞ্চমুখ যার।। আর সে জানেন জন্ম, সন্মাসের গুণ। তেঁই দে সন্ন্যাস ধর্মো, সদত নিপুন।। জানিয়া মানিয়া শিব, কারণ তাছার। হইলেন যোগীরাজ, বুবে দেখ সার 🔢

ত্যজহ ধনের মায়া, ত্যজ অভিলাষ। তবে সে উচিত হয়, লইতে সন্মাস ॥ বুঝিয়া শুনিয়া, তবে, নিতাই তখন। বিনয়ে কচেন মোর, কি হবে এখন।। ক্রেন গোউরচাঁদ, মানস আমার। আর কিছু দিন তুমি, করহ সংসার।। পানীহাটী নামে দেশ, আছমে স্কুলর : রাডীয় দ্বিজের বাস, তথায় বিস্তর ।। স্থব্যদাস পণ্ডিতের, বসতি যথায়। তাহার গুণের কথা। কি কব কথায়। शोतीनाम स्र्यानाम हुई मटशानत । প্রণ্যের সাগর নাই, তাঁদের সোদর।। সূর্যা রন্ পাণীহাটী, গৌরীদাস ভায়। অম্বিকা নিবাসী হয়ে, আছেন তথায় 🕧 স্বর্যোর ভনরা ছুই ক্রমেতে হইল। रसूषा जोह्रता नाम, (माश्रात व्राधिल।। त्य नम्र मामाना हुई, मन्नदमाहिनी। রেবতী বারুণী দোঁহে, ব্রজের গোপিনী 🛭 জাত্নবার বহ হবে, বিবাহ তোমার। বস্থুরে যৌতুক পাবে, কহিলাম সার।। লইয়া উভয় কন্যা, উভয়ের মন। তুষিয়া সংসারে কাল, করহ যাপন।। ব্দাহ্রবা উদরে স্কুত, জনমিয়া সাত। **জী**দামের প্রণিপাতে, হইবে নিপাত।।

অর্চনে আমার জন্ম, হইবে যথন।
সাক্ষাৎ হইলে পুনঃ জানিবে তথন।।
প্রীগুরু গোবিন্দ পাদ, পদ্ম করি আশ।
রচিল রসিকচন্দ্র, গোউর বিলাস।।

#### নিতাবিদ প্রস্তুর থেদ।

ভাবেন নিভাই চাঁদ। একি হরি ঘটালে প্রমাদ। কি করিব কোথা যাব, কার পানে ফিরে চাব, জার কি দেবিতে পাব, যে অপের ছাঁদ।। অধীনেরে পরিহরি, কোথায় গেলেন হরি, হরির বদনে হরি, মধুর নিনাদ।। বিলাধে মধুর নাম, অধীনে হই য়ে বাম, না জানি কেনবা শ্যাম, পাধিল এবাদ।।

#### পয়ার :

এতেক যুকতি দিয়া, নিতায়ের মন।
তুবিয়া গউর চন্দ্র, করেন গমন।।
যথার সে ক্ষেত্রখাম, তথায় ঘাইয়া।
চইলেন যড়ভুজ, নাচিয়া নাচিয়া।।
মোহিয়া ভজের মন, কহিয়া উপায়।
প্রভুর জাআয় প্রভু, মিশাইয়া যায়।।

সংক্ষেপে কহিনু নহে, বিশেষ তাহার। কহিতে সটীক সব, শক্তি কাহার।। क्रिशट्ड क्रक मान, व्यम्बिन मान। ৰূপ সনাতন আদি, সাধকের ভাষ।। এখানে নিতাইচন্দ্র, ভাবিয়া ভাবিয়া মলিন হইলা মহা, প্রভুর লাগিয়া।। ত্রেভার লক্ষণ যিনি, দ্বাপরে বলাই। কথন তিলেক ছাড়া, নহে তুটা ভাই ।। এমন প্রণয়ে যদি, হইল বিচ্ছেদ। কতই কহিব ভামি, নিতায়ের থেদ।। सूर्यंत नल्लक बाहे, खबूर्यंत स्मय প্রভুর আক্ষায় যান, পাণীহাটী দেশ।। কেহ বলে পাণীহাটী, কেহ বলে নয়। কত মতে কত লোক, কত মত কয়।। যে হকু সে হকু খেদ, নাহিক ভাহাব। আমি বলি পাণীহাটী, অন্যে কহে আর !! मिहे (म अधान भानी, इहेल यथन। তুজন সুজন ভক্ত, আছিল তথ্য।। এইৰপে কিছু কাল, যায়ত বহিয়া। বেড়ান হরির নাম, কহিয়া কহিয়া।। নাচিয়া মাচিয়া কন, গুণের নিভাই। কে আছরে কোন খানে, হরি বল ভাই।। कटन वा इटलट्ड थांक, कथरा कांनटन। **उष्ठ**त खटलत वीको, मनगरमोहरम ॥

श्नित्र श्नित्र मिन, अन अन क्लि। ভূলিয়া রয়ৈছ কেন, নন্দের গোপাল।। সময় থাকিতে ভজ, রসময় হরি। অসময় পাবে যদি, লে চরণ ভরি॥ ষ্মনিত্য কার্য্যের তরে, দেখ দেখ ভাই। হারাওনা নিভাধন, গুণের গোঁসাই।। ভাই বল সুত বল, কেহ কার নয়। পার্থিবে কোথায় থাকে, অহিকে প্রণয় ।: আতিয় কুটুম দেধ, আর পরিজন। কে রবে তথন দেহ, তাজিবে যথন।। नमरत्रत वक्त मव, व्यममरत्र वाम। সেই সে হরির পদে, কররে প্রণাম।। জগতের সার সেই, নন্দের তনয়। व्यविदल याद्यांत नाम, श्रुत्गात छेमत्र ।। (इतिदा निष्णाश (मह, न्लटर्मट्ड निर्काप। কে আছে জগতে আর, তাহার সমান । বিনোদ বিহারী সেই, গোকুলের চাঁদ। क्ष नम्र जगट्यत, साहनीम् काँ ।। কিবা ৰূপ কিবা গুণ, কি মধুর হাসি। যে ৰূপ হেরিতে হর, সদত প্রিয়াসি।। যেমন ৰূপের ছটা, গুণ সেই ৰূপ। স্বৰূপ কহিছে নাই, সে ধন স্বৰূপ।। অকুল কাণ্ডারী সেই, গোকুল মোহন। ভাবরে পামর জীব, জুড়াবে জীবন !

শীতল হইবে দেহ, পাপ যাবে দুর। রসিক কহিছে ভাব, গুণের ঠাকুর।।

## নিতাইচাঁদের পাণীহাটী আগমন।

গৌর গৌর বলি কে বেড়ায়। উহারে চিনা বড় দায়। যোগী নয় গৃহী নয়, কি ভাবের ভাবী হয়, কুধাইলে পরিচয়, না বলে কাহায়। কি ভাবেতে দিয়া ভগ্ন, কিবা বসে আছে মগ্র, কার প্রেমে মন লগ্ন, জিজ্ঞান উহায়।

#### প্রাব।

এ রপে নিভাই চক্র, নাম বিভরিয়া।
ভ্রমণ করেন দেশে, নাচিয়া নাচিয়া।।
হেরিয়া দেশের লোক, হাসিয়া তথন।
বলে কি পাগল বেটা, না দেখি এমন।।
কার বেটা কোথা ধাম, কোন খানে ছিল।
কোথায় হইতে বেটা, হেথায় আইল।।
না পাইসু ভাব কিছু না বুঝিসু ছির।
যোগী নয় গৃহী নয়, ছুয়ের, বাহির।।

क्रि वर्त उर्धातकी, क्रि वर्त नहा। পাগল বলিয়া তারে, আর জন কয়।। পাগলে কোথায় হরি, হরি বলে বল। যে বলে পাগল ওরে, সে বেটা পাগল।। হইবে প্রম যোগী, প্রম সুবোধ। আমিত বিকার পায়, জনমের সোধ।। আর জন বলে ভাই, এত বড় দায়। ক্ষণেক করিয়া নৃত্য, ক্ষণে গীত গায়।। কেহ গিয়া দের তাড়া, কেহ ডাকে ভার। অঞ্জলি করিয়া ধলা, কেহ দেই গায়।। কেহ বা হাসিয়া বলে, এ ভার কেমন। দেখেছি অনেক লোক, না দেখি এমন :: কি ভাব ভাবিয়া আছে, কি রুসে মগন। পাগলের মত ভাব, কেমন কেমন।। क्टर पट क्रजानि, कट नल पूरा। নিতাই নাচিয়া বলে, গোউর গোউর ।: এইৰূপে কিছু দিন, যায়ত বহিয়া। আছেন নিতাই চন্দ্র, যোগেতে বসিয়া। সূর্য্যদাস পণ্ডিভের, হৈল আগমন। তবেত করিলা প্রভু, অনেক ষতন।। অনেক যোগের তত্ত্ব, শুনিয়া তথায়। ভুলিল সূর্য্যের মন, আর কোখা যায়।। জানিয়া পরম ধন, মানিয়া সুসার। জামাই করিতে তাঁরে, করিলা স্বীকার।। निक करत दिक तोक, धतिया हत्। কহিছে প্রণয় ভাবে, বিনয় বচন।। বিকার তাজিয়া বল, স্বীকার করিবে। তরিতে আমার কথ;, বরিতে হইবে।। হয়েছি ভোমার দাস, লয়েছে অভয়। জাহবার পতি হও, তুমি মহাশয়।। জামাতা হইবে মোর, মমতার ধন। যথন বলিবে যাহা, কড়িব ভথন।। আমিত কহিতু সার, আসিয়া সন্মুখ। আপনি স্বীকার কর, তবে যায় ছঃখ।। গোঁসাই করিছে রাম, গোঁসাই গোঁসাই। ভাবিলে ভার্যার সনে, কোন সুখ নাই।। জাপনি বৈরালী তাং, মুস্ত নহে মন। ভবে যদি সভে দেহ, সেবার কারণ।। তাহাতে ত্রীকার আছি, বিকার কি আর। দেশের মঞ্ল হবে, মঞ্চল ভোমার ।। श्वित्रा हिटजत यम, मीखन श्रेन। আপনারে ধন্য বলি, আপনি মানিল।। শ্রোতার মঙ্গল হয়, পাঠকের হিত। বুচিল বুদিক চক্ত্র চৈত্র চরিত।।

## স্থ্যদাস কর্তৃক নিত্যানন্দ প্রভুর গহিমা বর্ণন ।।

ভারে কে পারে চিনিতে। সে পারে কটাক্ষে যত সুরামুর জিনিতে।। সেই হরি সেই হর, সেই সে ধরণী ধর, সেই ব্রহ্ম পরাৎপর, অবতীর্ণ অবনীতে।। কত গুণ কত ভাব, কি ভাবের পরভাব, সেই ভাব সেই ভাব, যে চাহ অভয় নিভে।।

#### পদার।

এইকপ স্থাদাস, পণ্ডিতের পণ।
শুনিয়া রাগিল যত, দেশের ব্রাহ্মণ।।
বিষম দেশের ছেষ, কোথা রয় ধীর।
ছলেতে করিল তারে, দলের বাহির।।
এক জন কহে কথা, আর জন শুনে।
পায়েছে উত্তম বর, রূপে আর গুণে।।
কাতির নির্ণয় নাই, নাহি যার মান।
কেমনে এমন জনে, কন্যা দিবে দান।।
এইকপ বিধি মত, ভাবিয়া চিন্তিয়া।
জাজাসা করিল তবে, স্থোরে ডাকিয়া।
রাহ্মণের পৌত্র ভূমি, ব্রাহ্মণের স্তুত।
কুলীনের বংশ জাত, রপ গুণযুত।।

শানীর প্রধান বটে, পণ্ডিতের কুল। মহীতে গৌরব যত, কহিতে অতুল।। कित्रिया छेख्य घटत्र, व्यथट्य मिलन। সুজনের পক্ষে নয়, উচিত এমন।। विदन्ती देवतांशी (मटम, व्यानिशादक (यह । তোমার জামতা নাকি, হইবেক সেই।। वुकित्रा विटमय कत्न, व्यवा इत्र मात्र । সতের ঘরেতে কেন. জসৎ বিচার।। জাতি যাবে মান যাবে, আর যাবে কুল। ভুবন জুড়িয়া হবে,কলপ্ত অভুল।। তবে কয় সূর্যাদাস, শুন মহাশয়। শুনেছি ভাঁহার তত্ত্ব, জানেছি নিশ্চয়।। সামান্য মানব নয়, সকলের নার। আমিবা মাহাত্মা কত, কহিব তাহার।। কি কব ভাঁহার কুল, কি কহিব জাতি। তাঁহার ইচ্ছার হয়, দিবা আর রাভি।। শুনিলে তাঁহার তত্ত্ব, পাপ যায় চুর। ৰূপের নাহিক দীমা, গুণের ঠাকুর।। শুনিয়া দেশের লোক, দ্বেষ করি কয়। কহিতে এমন ৰুধা, উচিত না হয়। সামান্য মানব সেই, অমান্যের শেষ।। কহিতে তাহার গুণ, অশেষ বিশেষ।। এমনি কহিলে ভূমি, কেমন করিয়া। व्यामता नकत्न याहे, मद्रतम मदिशा।। >> )

একপে নিন্দিয়া সব, কত মত কয়।
শুনিয়া ছিজের হৈল, ক্রোধের উদয়।।
না কয়ে অপর কথা, না দিয়া উত্তর।
সেখান হইতে চলে, আপনার ঘর।।
না যায় পাড়ার মধ্যে, নাহি পায় ছঃখ।
বদনে হরির নাম, মদে বড় সুখ।।
গ্রোতার মঙ্গল হয়, পাঠকের হিত।
রচিল রসিকচন্দ্র, চৈতন্য চরিত।।

## क। इरीत स्पूर ७ धांवनान।

कारत जावह जालन। माम्रावर्ण एनथ एयन निर्माटक क्रलन।। विकारत एयमन हत्र, कर्ण स्माह क्रला ज्यान क्रला करण क्रण्यानिम, मश्मात ट्यम। क्रलाविस ए ख्रकात, किरमत ख्रजामा जात, एस्यान वृत्तिरव गात, एमरहत घर्णन।। ल्रूबावस् मध्य जाल, एयमन जूषात माल, मिह्मक किष्टू काल एमरहत्व जीवन।। कत हित अम मात, महे मात ज्यमात, कि जारह जेलाम जात, एम विना ध्यमन।। हित अपन प्रांच हिट, तिम्हित वित्रहिट, हित मश्कीर्जन।।

#### প্যার !

এই ৰূপ ছিজবর, হরিষে মগন।। **८** एथ इतित ८४ मा, टेम्टवत घरेन ॥ সকল হরির ইচ্ছে, ইচ্ছানয় হরি। নিশিতে নিজায় ছিল, জাহুবা সুন্দ্রী।। এ হেন সময় তারে, দংশিলেক ফণি। অম্নি মরিল সেই, রুমণীর মণি। কি করি ভাবিয়া দিজ, করিল তথন। যথার নিতাইচাঁদ, তথায় গমন।। কহিল বিশেষ কথা, হাসিল নিতাই। হরেছে বরেছে কাল, উপায়ত নাই।। ্য দিনে যাহার মৃত্যু, কে করিবে পর। धर्मन मदकांत कत्र, कान्मिटल कि इस ।। কাহার লাগিয়। কান্দ, কে কার আপন। खुमि वा कथन शांद्य, आमि वा कथन।। मानव नानव यक, की छानि हम । অবশ্য মরিবে কেই, চিরজীবি নয়।। আজি হকু কালি হকু, কিম্বা কিছু পর। যাইতে হইবে সেই, শমন নগর।। ভূমি যাবে যমালয়, পড়ে রবে ঘর। তৰে কেন হইতেছ, এতই কাভর।। এমনি মারার দাস, হইয়াছে মন। कर्णक को जुक कत्, करणक द्रांपम ।।

এ যেন বেদের বাজি, সংসারের সুখ। জানিয়া মগন লোক, এত বড় তুখ।। क कांत्र निक्ति वन, (क्वा कांत्र सूछ। नम्रम स्मिटन (मर्थ, गकल खरुरु।। विकाद रामन (मर्थ) विविध अनाम। হইলে রোগের শান্তি, যুচে যায় পাপ।। মাষার বিকারে দেখা প্রলাপ তেমন। যুচিবে যথন মায়া, জানিবে তথন।। সর দেখা মায়ামার, জগত সংসার। কে আছে ভোমার ভবে, ভূমি বল কার । ভবে কেন কি লাগিয়া, এডই ভাবিত। যে হয় এখন কর, ইহার উচিত।। মত্তেছে তরেছে সেই, এডায়েছে দায়। ভেবে কি করিব তার, তোমায় আমার।। ভাবিলে যদাপি পাই, ভাবনা কি ভার তাহার লাগিয়া কান্দি, জগৎ সংসার॥ এ ৰূপে নিতাই চন্ত্ৰ, কহিলেন সার। কাঁদিতে কাঁদিতে যায়, দিজের কুমার।। যাইয়া বিরস মুখে, জাহ্রবীর তীর। দাহন করিতে যার, কন্যার শরীর।। বুঝিয়া ছিজের মন, শুঝিয়া তথন। চলিল গোঁসাই প্রস্কু, যথার ভাব্দণ।। হরিষে ধরি সে কর, কমলের ফুলে। আহ্বায় বাঁচাইল, আহ্বীর কুলে।।

যথন বাঁচিল কনা।, হাসিল ভ্রাহ্মণ।
দেখিল দেশের লোক, আশ্চর্যা ঘটন।।
হাসিয়া হাসিয়া ছিজ, স্থাদাস কয়।
বুঝিলু গোঁসাই ভূমি, মানুষত নয়॥
হইবে দেবতা কোন, কহিবে আমায়।
আমিত দিলাম কনা।, বরিতে তোমায়
এই কপে ছিজবর, কত গুণ গান।
বসিক কহিছে প্রভু, গেলেন সন্থান

#### পাষ্টের ব্যাঞ্চ।

#### পরার !

ध वाला श्रष्ट्र प्रा, रहेन वित्मयः।
स्थालि प्रान्त लोक, नाहि हाँ ए एव ।।
स्कर् वल नालिएगाः, ६ विहा स्मनः।
ध विहा दिस्त रूटः, मिटलह एकमः।।
स्कर् वल उवा उताः, वृद्धा शर्म छारे।
स्कारत शौनारे नट्टः, मद्धात शौनारे॥
नालानि गावानि मक्षः, नावानि छेशदा।
नालानि शरेन काथाः, भानिश काशदा।
साल प्रिय वाकः, छनिएत भ्यः।
स्वा विष छेणारेशाः, स्मारिन ध प्रमः।।
प्राद्ध विष छेणारेशाः, साहिन ध प्रमः।।
प्राद्ध विष छेणारेशाः, ना प्रार्थ अमनः।
प्रमु एएटर क स्नानिशः, नक्षादा कीवनः।।

এ বেটা গুণিন বটে, ভারতের সার। মরা বাঁচাইতে ভাই. শক্তি কাহার।। বিদায় নিপুণ বটে, সম্পেহ কি ভার। का त्वांत्व छेशांद्र नांकि, कमा प्रश्ना यांत्र ॥ কোন জাতি কার বেটা, কোথায় নিবাস। দেখিতে দিজের চিত্র, কি আছে প্রকাশ।। महत्क (नश्चिम्न यात्र, छेग्राम लक्ष्ण। ভাহারে দেবতা কর, এ আর কেমন।। না পাই ইছার মর্ম, ভাবিয়া ভাবিয়া। ক্ষেপেটে ত্রাক্ষণ সুষ্ঠা, উহার লাগিরা ।: এত বলি সুর্যোরে ডাকিয়া সবে কয়। পাগল হইলে কেন, দ্বিজের তন্য।। কোথাকার ওঝা ওটা, নহেত ত্রাফা। ওঝারে সঁপিবে কন্যা, এ আর কেমন।। महनदा श्रदांध निया, थांक किছू निन। मिनाव উख्य वह. छेख्य कुनीन॥ ঘর বর জীতি কুল, উত্তমে উত্তম। भिल्म इहेटल कारत, क्वरल अधम।। ভোমার হইবে ভাল, দেশের সুখ্যাতি। পাগলে সঁপিয়া কন্যা, হারাওনা জাতি॥ मूर्या तल अकि कथा, कर विश्रती । না জান উহিার মর্ম, ভাঁহার চরিত।। আমি জানি তিনি হন, নৰ্ক মূলাধার। অন্যের অসাধ্য যাহা, স্কুসাধ্য ভাঁহার 🖔

তবে কছে দ্বিজগণ, বুঝিব কেমন। একই পরীকা আছে, শুনহ ব্রাক্ষণ ।। দেশের পশ্চিমে মাতা, জাহ্নবীর তীর। উত্তরে পড়েছে দহ, বড়ই গভীর 🕩 নিশির ভিতরে যদি, দহ দুর হয়। ভবেত ধরিব তাঁর, 🕮 চরণদ্বর ॥ शिनिया शिनिया चिक, सूर्यामाग यादाः কহিল প্রস্তুরে সব, কথায় কথায়।। শুনিয়া হাদিয়া কন, একি বিপরীত। কহিতে এমন কথা, না হয় উচিত।। कि कथा कहित्स षिज, निज घर हम। क्रियान असन मह, युहाई एक बला। এ নয় আমার কর্ম, বিপরীত কাজ। ज़ाम कर निक मङ, आमि शाहे लाख।। শুনিয়া ছিজের হৈল, চুঃপিত অন্তর। ভাবিতে ভাবিতে যায়, আপনার ঘর।। ছিজ গেল নিজ দাসে, দয়াসয় কছে। धक शांहि थए लर्म, किटल मांड मरह।। যেমন ফেলিল খড়, রজনীর শেষ। খড়েতে বুজিয়া হৈল, খড়দহ দেশ।। প্রভাতে উঠিয়া যত, দেশের ব্রাক্ষণ। দেখিল হয়েছে বড় আশ্চর্য্য ঘটন।। শ্রোতার মঙ্গল হয়, পাঠকের হিত। রসিক রচিত গীত। চৈতনা চরিত॥

## নিতাই গোউরের গুণ ব্যাখ্যা।

ধনারে গৌর নিতাই। গুণের অনন্ত
নাই।। যেমন গোকুলে সেই কানাই
বলাই।। পাপী ভাপী ভরাইতে, অবতীর্ণ অবনীতে, হইবে দেবভা কোন,
বলিহারি যাই।। নাম ধন্য গুণ ধন্য,
কুবনের ভাগ্রগণ্য, যে আছে তুলনা অনঃ
বল দেখি ভাই।।

#### প্রার :

এই নপে দ্বিজ্ঞান, প্রভাতে উটিয়া।
বাথানে নিতাই চাঁদে, আশ্চর্যা দেখিয়া।
জানিল নাহাত্মা ভাঁর, মানিল ঠাকুর।
ধন্য সে নিতাই চাঁদে, ধনা সে গোউর।।
তথন ডাকিয়া সবে, স্থাদানে কয়।
জাতামার যোগ্য বটে, সেই মহাশয়।।
জাহ্রার ভাগা ভাল, সফল বলিল।
বিধি নে গুণের নিধি, মিলাইয়া দিল।।
এ বড় সুখের দিন, বলিহারি যাই।
নুতন জামাই হবে, নুতন গোঁসাই।।
ভোমার উড়িল ভাল, স্থ্যাতির থকা।।
জামরা উদর ভরি, আজি থাব জকা।।

মারিব পাঁঠার পাল, করিব ভোজন। তবেত বিবাহ হবে, নিৰ্ফাহ তথ্য।। এ কথা উচিত কহা, গোঁলারের ঠাই : দেখিব কেমন ভূমি, কেমন জামাই।। উদর ভরিয়া আজি থেতে যদি পাই। জানিব ধনাত্য সেই, মানিব গোঁসাই । শুনিয়া ছিজের হৈল, তুই দিকে দায়। সন্থরে সংবাদ গিয়া, প্রভূরে জানায়।। হাসিরা কহেন প্রভু. গুণের ঠাকুর। धर्ष दूर्यंत्र कथा, कुःथं कत मृत्।। আহারে বাহার যাহ। মনে হয় সুখ। তাহাই খাওয়াব তারে, কেন ভাব দ্বঃখ।। তবেভ নিভাই চন্দ্র পাঠাইয়া চর। আনিলা অজার পাল, বিস্তর বিস্তর ।। সক্তে রক্ষক ভার, আইল যধন। হাসিয়া হাসিয়া প্রভু কহিল তথন।। কি কর তোমরা আর, এখানে বসিয়া। পাইবে উচিত মূল্য, প্রভাতে আসিয়া।। শুনিয়া রক্ষকগণ, চলে গেল ঘর। षार्याटन श्रुतिल यङ, खिटकत श्रुत ॥ কেহ কাটে কেহ ছড়ে, কেহ কুটে মাস। পৰ্বত সমান হৈল, দেখিয়া উলাস।। উত্তম উত্তম মাংস, মধুকোৰে তায়। हान मान श्राष्ट्र खना, (करन मिट्ड यात्र।। গোঁদাই বলেন রাধ, ঘরেতে দকল।

যারে রাথ দেই রাখে, কেলিয়া কি কল।।
শুনিয়া প্রভুর কথা, অন্থি মন্তি ছাল।

রাখিল পুরিয়া ঘর, বিস্তর জঞ্জাল।।

তবেত মাতিল দব, এক ঠাই বোদে।
কেহ রাজে কেহ বাড়ে, কেহ থায় কোদে।

অজার পালকগণ, আইল তথন।।

তারা বলে এই দর, প্রভু বলে নয়।

কথায় কথায় তবে, কত কথা হয়।।

রোতার মঙ্গল হয়, পাঠকের হিত।

রাচিল র্দিকচন্দ্র, চৈত্না চরিত।।

### আফ্রবীৰ সহিত নিজানিক প্রভুৱ বিবাহ।

কে জানে অনন্তের অন্ত। নিতাই
কপেতে শোভাপান গুণবন্ত।। অনন্ত
মহিমাধর, সে অনন্ত গুণাকর, অনন্ত
রস সাগর, বিদ্যাও অনন্ত।। কি অনন্ত
কপমর, অনন্ত ভেজেতে লয়, ভকতে
অনন্তাভয়, দানে নহে কন্ত।। অনন্ত
প্রেমেতে রত, আর সে অনন্ত যত, রসিক
কহিবে কত, না পারে অনন্ত।।

#### পয়ার।

এইৰপে অজাপাল, মত কথা কয় ৷ শ্রভুর রাগেতে হৈল, কম্পিত হৃদয়।। তथन क्रिया कन, এত नम्र शैता। কে দিবে এতেক দর, লয়ে যাও কিরা। যেমন থেমন অজা, দিয়াত আনিয়া बदत्त जिल्दत् कारक, लङ्ड किनिया।' এতেক বলিয়া প্রাক্তু, খুলে দিল ঘর : বাহির হইল অজা, বিস্তর বিস্তর। धर्मान श्रकुत हेन्छा, तृत्व कान अन ! দিয়াছে যেমন অজা, গাইল ভেমন।। আছিল অজার অভি, আর চিল ছাল । প্রস্কুর ইচ্ছায় অজা, হৈল পালে পাল 🔢 লইয়া অজার পাল, অজাপাল যায়। অবাক ভিজের কুল, চারিদিকে চায়।। এ বলে উহাবে ভাই, এ আর কেমন। प्रत्थिष्टि व्यत्नक कर्षा, ना प्रतिथ अमन ।। আমরা ধাইতু পাঁটা, উদর ভরিয়া : ঘরের ভিতরে আল, কেমন করিয়া।। খাইনু যে সব পাঁটা, দেখিনু সে সব।। জানিত্ব গোঁসাই কভু, নহেত মানব।। হইবে দেবতা কোন, বৃত্তিত্ব আভাগ। দরার ঠাকুর করে, দরার প্রকাশ।।

श्रुटर्लट्ड प नव कथा, सूर्या मान कन्न। না বুঝে উহারে কভ, দেখা**রেছি ভ**য়।। করেছি কুবাক্য কন্ত, বলেছি পাগল। পাগলের গুণে দেখ, বাঁচিল ছাগল।। যে বলে পাগল তঁরে, পাগ**ল দে জন**! এখন বুঝিন্ন তিনি, ব্ৰহ্ম সনাভন।। এইরতেপ ভিজ্ঞগণ, বাগানে বিস্তর। বিবাহ নির্মাহ কথা, শুন অভঃপর ।। **७८व द्विस सूर्वानांग, कूट्रेश लहे**शा। बाइबीत विद्या (परे, रुपिंड रहेना।। বিবাহের পর বড়, বাড়িল কৌডুক । कोजूदक गॅं शिन कना, उसूदत योजूक ॥ मूरथेत अवधि नाहै, द्वःथ देश्ल हुत । সগুণে করিল দয়া, গুণের ঠাকুর।। তবেত প্রভুর মুখ, বাড়িল অংশ্য। পবিত্র করিয়া সেই, পাণীহাটা দেশ।। আপন সুঞ্জিত খড়, দহের উপর। করিল। নিভাই চন্দ্র, উত্তম নগর।। इहेन बिलार्थ त्रहे, थात्न मत्नाहत । যাহার দর্শনমাত্র, তরে যায় নর।। স্বর্গের সমান ঠাই, দেবের ছল ব। হা হয় বর্ণনা তার, এক মুখে সব।। সেথানে থাকিয়া পাপ, করিয়া হরণ। ভারিল বিস্তর জীব, জীবের জীবন।।

অমনি প্রভুর দয়া, বুঝে কোন নর।
ভানেক প্রকারে ভরে, ভানেক পামর।।
কেশ হীন বেশ হীন, ছেব হীন সব।
নগর ভ্রমণ করে, যভেক বৈক্ষর।।
ভাপিয়া হরির নাম, ছংথ হৈল দূর।
বাসক কহিছে দয়া, করহ গোউর।।

## श्रीमारगत कृष व्यास्वर ।

কোথায় রহিলে হরি। দেখা নাও চরণে ধরি।। একি মফ প্রবাদৃকী, না করিলে শুভ দৃষ্টী, কেন ছে লুকালে ক্লক্ষ, তব পদ তরি।। ভাধন ভারণ হবি, কোথা গেলে পরিহরি, ভোমার বিহনে মরি, মরি হে গুমরি।। ভক্তে বরি নিরাপন, দিভে পার জক্ষ পদ, রাম বলে দেছি পদ, পল্লবে বিহরি।।

#### भग्नात् ।

তবে সে নিতাই চক্ত্র, ভার্যারে লইরা।
সুখেতে কাটেন কাল, কৌতৃক করিরা।।
চারিদিকে ভক্তগণ, দেখিতে সুন্দর।
হরিষে বরিষে পুষ্পা, যতেক অমর।।

এখানে নিতাই চক্ত্ৰ, এইৰূপে রন । শুনহ আশ্চর্য্য আরু, রামের কথন।। যধন খেলেন হরি। সেইকালে ধারে। গিরির গম্ভরে ছিল, শ্রীদাম লুকারে।। খাকিয়া অনেক কাল, বাহির হইল। কুক কই কুৰু কই, বলিয়া উঠিল।। করিয়া অনেক তত্ত্ব, তত্ত্ব নাহি পায়। ঞীদাম ভাষণ করে, যথায় তথায়।। ভবে मে जीमांभ देशन, প্রভু অভিরাম। কটিতে কৌপান ডোর, মুখে হরিনাম।। অপরে অপর কথা, কত মত কয়।। ত্রনেকে ভলেছে ভার, যোগীবেশ নয়।। এ ভাব প্রকাশ করে, রুপ ননাতন। महानी इड्रेल (मर्डे, मझानीत धन ॥ গ্র ! হরি কোথা হরি, বলিয়া বলিয়া। कडहे जटमन अष्ट्र, अष्ट्र नानिश्चा ॥ কোন খানে লুকাইয়া, আছেন কোথায়; হায়রে বাঁকার মন, পাওয়া বড় দায়।। ভাবিয়া চিস্তিয়া তবে, অশেষ বিশেষ। ভল্লাস করিতে ধরা, আইলেন শেষ। জ্বনেক বিগ্রহ দেখি, জনেক প্রকার। প্রণাম করিতে দেহ, না রহিল কার।। क्टर वा काण्डिता शिल, (क्ट्टेंश्ल हूत। र्तन अक रोन, जत्नक ठांकूत ॥

বগ্জির ক্লফরায়, বিখ্যাত সংসার। তাহাতে কিঞ্ছিৎ আছে, ব্রহ্মার সঞ্চার।। मम्भूनं भाषत नरह, अभूनं विरम्य। প্রণাম করিতে বন্ধ, হইলেন শেষ। তিনবার প্রণমিতে, শ্রীদাম গোঁসাই : অন্যাপি রয়েছে তার, বন্ধ তিন ঠাই 🛭 शांतिल जीमाम जत्व, कामिल कावर । হরির কিঞ্চিৎ অংশ, ইহাতে মিলন। এ নয় সম্পূর্ণ দেই, গোকুলের চাঁদ। কোথায় রহিল প্রস্কু, একি পরমাদ।। এইৰপে ভাবে অভি, রাম অবিরাম। অন্তরে জানিল সব, নব ঘনশা। ।। হইল আকাশ বানী, শুনিতে মধুব। त्य बदल छम्य देशन, निजारे त्याछित ॥ य बदल ভারিয়া জীব, জীবের জীবন। প্রভুর অঙ্গেতে হৈল, প্রভুর মিলন 🛭 व्यष्टेक्टल निजानन्त्र, थ्रज्नद्द दन। আকাশ বাণীতে হরি, বিশেবিয়া কন।। নিভায়ের পুত্র আমি, হইব যখন। স্থির হবে বীরভদ্র, নামেতে তথন।। প্রণাম করিবে তুমি, একশন্ত বার। ভবে দে জানিবে পুর্ণ, নন্দের কুমার।। রসিক কহিছে ভাব, কহিলাম সার। মতান্তর আছে এর, বিবিধ প্রকার।।

## অভিনাম গোসানির থানাকুলে আগমন।

(भाइन वश्मीत खरत। मत्ना श्वान किमन करत।। सूथा वितिष्ठित राम कार्यत विविध्य स्थान कार्यत विश्व करत।। श्वीन कार्यत विश्व कर्मात कार्यत है। स्थान कर्मात करता। क्षित्र करता। मधुत मधुत तर्यत विश्व करता। मधुत मधुत तर्यत क्षाणि करता। क्षाणि कर्मान कर्मी, वाकार्ये क्षाणि तमान कर्मी, वाकार्ये कर्मी, तिक्ष कि तम्भरत।।

#### পয়ার।

অমনে আকাশ বাণী, শুনিয়া তখন।
ভবিরাম গোস্থামির, ভুষ্ট হৈল মন।।
ভ্রমিয়া অনেক দেশ, অনেক ভাবিয়া।
উপানীত হৈল খানা, কুলেতে আসিয়া।।
কলির কলহ সব, করিতে মোচন।
নিশিতে বংশীর ধ্বনি, করিল তখন।।
শুনিয়া দেশের লোক, মোহিত হইল।
একি একি বলে সব, জাগিরা উঠিল।।
কেহ বলে হেন রব, কছু শুনি নাই।
কেহ বলে অমৃত, বরিষে বুকি ভাই।।
কেহ বলে মধুর, সাগরে হৈল তেউ।
দেখি দেখি বলিয়া, ধাইয়া বায় কেউ।।

श्टर्नाइ त्रांकुटन कृष्ण, धरे त्म श्रकांत । হরিল বাঁশীর গানে, মন গোপীকার।। এমন করিয়াছিল, বাঁশরীর গান। গোকুলে আপনি বয়, যমুনা উজান।। যখন বাজিত বাশী, থাকিয়া থাকিয়া। সে রব শুনিত পশু, নিরব হইয়া।। পूनः वा वांकिन वांनी प्रथ प्रथ खाई। এ বুঝি আইল সেই, ব্রন্থের কানাই।। শুনেছি অনেক ধানি, মধুর মধুর। এ ধ্বনি শুনিয়া দেখ, দুঃখ হৈল দুর।। ও থানে রমণী গণ, গুনিরা তথন। क करिश कहिएह नव, मधुत वज्य ॥ কভ জন কভ কথা, কত মত বলে। বসিলেন অভিরাম, বকুলের তলে।। সেই সে বাঁশীতে জন্মে সেই ভক্ন বর। অদ্যাপি রয়েছে রুক্ষ, দেখিতে সুক্ষর।। বসিয়া তরুর তলে, ভাবেন গোসাঁই। কোথায় আছেন কুষ্ণ, কোথা দেখা পাই কোথায় সে নিভ্যানন্দ, কোথায় যাইব। কোথার যাইলে তাঁর, দর্শন পাইব।। এই ৰূপে অভিরাদ, আছেন বসিয়া। ও খানে সকলে নিশি, প্রভাত দেখিয়া দ আসিয়া দেশের লোক, দেখে অতঃপর। वित्रा नवारंगी अक, शहम सूक्तत ॥ 5**2** )

কটিতে কৌপীন ডোর রথে হরি নাম ।

যেমন বপের ছটা তেমনি সুঠাম ॥

দেখিরা নকলে কয়, কথায় কথায় ।

না জানি এমন যোগী, জাছিল কোথায় ।।

সুনিদ্ধ সয়াানী এই, বুঝিলাম ভাই ।

থাকিয়া থাকিয়া বলে, গোউর নিভাই ।।

কি বোল বলিল ঘোগী, কি কেরে কেলিল ।

মন করে উজু উজু, বিপদ ঘটিল ।।

শুনি নাই শুনিব না, এমন বচন ।

যোগীর বচনে হয়, সুধা বরিষণ ।।

বীগুরু গোবিদ্দ পাদ, পদ্ম করি জাশ ।

রচিল রাসকচন্দ্র চৈতনা বিলাস ।।

## অভিরাম গোম্বামীর পরিচয়!

কে তুমি নৰীন সন্নাসী। গৌর গৌর বলি বর্ষিলে অমৃত রাশি॥ শুনি যে মধুর নাম, পুর্ণ হয় মনকাম, বল প্রভু অবিরাম, ঐ শুনিতে ভাল বাসি॥

थ जटल **जटनेक कथा**, कहिंगा उर्थन । । याहेशा क्रिनाट्य केंग्र, मधुत वहनेता ।

কোথার জাপ্রম তব, যাবে কোন ঠাই ! कि इन् अथादन चारेटल, मन्नामी (गामारे॥ কি নাম শুনালে তায়, গোউর গোউর। নামের গুণেতে আঁজি, ছুঃথ হৈল দুর।। **खटनकि खटनक न**ाँम, ना खनि अपन । এ राम कतिरल भूनः, अमुद्ध महन ॥ এ नव मधुत नाम, सन यात्र कुटला। বর্ষিল অমৃত যেন, অবণের মূলে।। किहिट्हन खिलिज्ञांग, छन विवर्ग। আমি বে গোউর ভক্ত, গোউরের ধন।। আশ্রমে গোউর পদে, বিশ্রাম হেথার। গোউর চল্লের গুণ, কি কর কথায়॥ এ তিন্ন সংসার সার, নিভাই গোউর। বারেক অরিলে দাম, পাপ হয় দুর।। উভয়ে নদীয়া দেশে, হইয়া প্রকাশ। করিলেন নিভাবিন্দ, খড়দহে বাস।। क्षरणत टेम्फना हाँ म, नाहि स्रात शरू। তারিল বিস্তর জীব, কহিতে বিস্তর ।। কি তার ছল ভ নাম, গুনিতে মধুর। ভোমরা সকলে বল, গোউর গোউর 🔢 গোউর গোশুর বলি, নাচিন্না নাচিনা। নগর ভ্রমণ কর, কৌভুক করিয়া।। रहेरव मक्ल छात्र, चूहिरवक क्रथ। তালরে ভালরে ভব, সংসারের সুখ।।

अटमङ यांश्रंत जत्ना, (मथादन विनित्रा। কি তার করিলে বল, এথানে আসিয়া।। সংসার বিষয় বিষে, মাতিয়া এখন। ज्रलह अपृष्ठ नाम, निमश्युमन।। অকুল কাণ্ডারী সেই, গোকুলের চাঁদ। যাহার স্মরণে দুর, হয় পরমাদ।। সেই সে রাধার ৰূপ করিয়া ধারণ। क्तिलाम नवसीश, नव ह्रमायन ॥ এমন হুর্ল ভ ধন, গোউর আমার। জীবের শিবের জন্য, হন অবভার ॥ দয়ার ঠাকুর হরি, রূপ গুণ ধাম। কে আনিল হেন ধন, কে খুইল নাম।। সুধা হৈতে সুধা নাম, গোউর নিতাই। এ হেন মধুর নাম, ত্রিজগতে নাই।। শ্রবণে পাতক নাশ, বলিলে মুক্তি। **অবশ্য পাইবে এই**, শিবের যুক্তি ॥ এ ৰূপ জীদামচন্দ্ৰ, কহিল ভগ্ৰন। শুনিল দেশের যত, কুলীন ব্রাহ্মণ।। ব্রাহ্মণ কারস্থ আর, অপর অপর। উথলিল সব।কার, সুধের সাগর।। হৃদরে ভক্তি হয়, মনে ভাবে সারি। রসিক করিল নব্য রদের প্রচার।।

#### मनोनेका ऋथाउत्रक्तिनी।

# অভিরামের মাহাত্ম্য প্রকাশারস্ত। পরার।

এই ৰূপ খানাকুলে, হইয়া প্ৰকাশ। कतिल श्रीमाम्बद्ध, अश्रुक्ष विलाग ।। কহিতে অপুর্ব কথা, শুনিছে সুসার। কলির মঙ্গল জন্য, জীবের নিস্তার।। এক দিন দ্বিজগণে, কহেন ডাকিয়া। এসেছি অনেক দিন, কি করি থাকিয়।।। একই মানস আছে, গুন অরে ভাই। রক্ষন করিয়া তার, খাওয়াইয়া যাই।। গুনিরা প্রভুর কথা, যতেক ব্রাহ্মণ। আপনা আগনি কয়, এ আর কেমন। কেমনে এমন কর্ম্ম, আমরা করিব। **४**त्राप्य ट्रोकिव आत्र, भंतरम मतिव।। নাহিক জাতির ঠিক, কুলের নির্ণয়। থাইতে ইহার অন্ন, উচিত না হয়।। কেমন করিয়া থাব, লোকে কি কহিবে। উদর করিতে পূর্ণ, কলঙ্ক হইবে।। এই ৰূপ দ্বিজ্ঞাণ, কহেন বচনা अर्थात्न क्षिमां महस्य, श्रुनिन एथन।। কহিল জনেক প্রভি, হাজার হাজার। পঞ্জণ করি মুক্তা, দঁপির এবার।। যেমন খাইবে অল, তথান প্রদান। করিয়া রাখিব সব, ত্রাক্ষণের সান।।

নে সব শুনিয়া সবে, কথায় কথায়। লোভেতে বাড়িল লোভ, জার কোথা যায়।। বিশেষে অধিক লোভী<sub>ক্</sub>কলিয় ব্রাহ্মণ। বলে কি বিলম্ব আরু খাইব ক্ষম।। আতি ৰল কুল বল, আৰু বল মান। কলিতে কিছুই নাহি, ধনের সমান।। यथारम धरमत छात्रिः त्महे श्रांतन गत। धन ना शांकित्व कांत्र, ना वादक शोहत ।। যাগ্য**ত মহোৎসব, ধনের অধী**ন। थन ना शांकिटल छाद्र, वटल मीन शैन।। যে খানে ধনের রুদ্ধি, সেই খানে জয়। ধন না থাকিলে কেবা. মানামান হয়।। কিন্তু সে সন্দেহ হয়, কহিব কাহায়। সন্ন্যামী সপিতে ধন, পাইবৈ কোথায়।। কথার বলিল যভ, কাজে ভভ নয়। मतिराजत मीर्थ कथा। एक करत खेलात।। **एएथिছ नम्नांगी केल, कांत्र आंट**ह धन ! তবে कि माथिक छोड़े, छित्रिश तमन ।। এ সব অদীক কথা, শুন কেন ভাই। निकटनत कथा जाते, यागारमत हाहै।। বুঝিলাম ভপ্ত যোগী, কাপ্ত সব মিছা। जारत कत्र जान वटी, मंहि तत्र लिहा।। কাৰেতে কিছুই নাই, কথার উৎপাত। বর্মর বুমারে বুমি, খাওয়াইবৈ ভাত।।

জাগে চাই মুদ্রা ভাই, তবে করি কাজ।
নতুবা থাইরা জন্ন, কেন পাব লাজ।।
যার যাবে জাতিকুল, মদি পাই ধন।
এখনি খাইব জন্ন, যতেক প্রাক্ষণ।।
জ্ঞীগুরু গোবিন্দ পাদ, পদা করি আশ।
রচিল রসিকচন্দ্র, গোউর বিলাগ।।

## খানাকুলে দিজগণের যুক্তি।

কি কর সম্পদ আশায়। সম্পদে বিপদ্ ঘটে আপদ সঞ্চয়।। তাজ লোভ তাজ মায়া, মায়া সে পাপের ছায়া, জল নিম্ব মত কারা, না রবে নিশ্চয়।। দিনেক ছদিন তরে, বাস করি দেহ ঘরে, অবশ্ব লইবে পরে, রবির তনয়।। মিছা দেহ মিছ: ঘর, ভাবিলে সকল পর, র্যিক যে নিরন্তর এই ভাবে রয়।।

#### পয়ার।

वह बट्ट विकाश, माना कथा कर। श्वीतल क्रियां केट्ट, करून समय। श्वातिश कट्टम थ्येड, श्वेडिक सम्मन। श्वादश कर्ड केन श्रेडा, क्राइ स्थानमा।

কেহ বলে ভাল ভাল, ক্ষতি কিবা ভাই। करवरह छेखम बास्ता, मझामी (शामाह ॥ क्ट बाल अकि कथा, क्यान इंहेरत। ना कानि (यांत्रीत अन्न, त्कमत्न थांहेर्ट ॥ কি কৰে কুটুম গৰ্ণ, কি কহিবে জ্ঞাভি। পড়িয়া ধনের লোভে, হারাইব জাতি !! পেটুকের কর্ম্মে হয়, জানীর শরম। লোভীর কোথায় আছে, ধরম করম।। যে খানে লোভীর কর্ম, সেই খানে পাপ। পাপেতে ঘটায় স্বানি বিধিমত তাপ।। ष्मारभ द्वा ७८व कत्र, थहे मुक्ति हम्र। করিয়া ভাবিবে পরে, সেত যুক্তি নয়।। আর জন বলে ভাই, এই কথা বটে। ধরম করম নষ্ট, লোভের নিকটে।। লোভেতে হইবে পাপ, পাপে আয়ু ক্ষয়; করিতে এমন কর্মা, উচিত না হয়।। রুষিয়া অপর কহে, ছাড় ফের ফার। ধনেতে হইবে মান, ভাবনা কি তার।। কড়িতে বুড়ার বিয়া, কড়ি সব সার। কজি না থাকিলে মান কে রাখে কাহার। কভিতে সকল হয়, জাভি কুল মান। निर्कात्नद्रत् वन दक्ता, कहद्र मस्त्राम्।। শুনেছি কথার কথা। লোকে কংল মার। কভি নাই যার দেখ, লাভি নাই ভার।।

লুকায়ে খাইব অন্, কেন দাও কের। কে দেখিবে কে শুনিবে, কে পাইবে টের 🛚 क्ट वरल विश्रतील, ध क्रमरम इत्र। হাটের ছুরারে চাপা, আগড় কি রয়।। चांकि इत्त (मर्ग (शांक, शर्त क्रमत्रत । क्रांच क्रांच अविषय, जानित्वक गत्त ।। (इलां स कहिरल जान, सूमधुत वाक। বাজিলে ধর্মের ঢাক, কে বলিবে ঢাক 🗓 এই ৰূপ ঘরে ঘরে, কত কানাকানি। অধিক লোভেতে ধরি, করে টানাটানি । কি করে মনের টানে, লোভেতে টানিল; হইল সবার মন, ভারনা যুচিল।। बिकागन बटन छाई, हल हल याई। হেট মাথা করি জন্ন, পেট ভরি থাই।। এতেক ভাবিয়া তবে, দ্বিজগণে যায়। লাগিল লোভের গিরা, খসাইতে দায়। দরিত স্থার স্থা, বৃঞ্জিয়া মনন। তখনি অর্গিল সব, মনোমত ধন।। দেখিয়া অবাক লোক, না পায় ভাবিয়া। কোথায় পাইল ধন, কেমন করিয়া।। যত চার ভত পার, ঝুলির ভিতর। এ नम्र नामाना त्यांभी, त्यांटंभन्न क्रेश्वन ।! শ্রীগুরু গোবিন্দ পাদ, পথা করি জাল। त्रविव त्रनिक्षतः, टेष्ट्या विकाम ॥

नानिमी ठाक्राणीत व्याविकार।

কপ কি হুজার। চরণ পঞ্চল উক্ল করি রাজকর।। কেশরী নিন্দিত, কটি কি শোভিত, নাভী রুধা সরোবর।। মেদিনী নিন্দিরা, নিতম ছান্দিরা, কি শোভিত দিব্যামর।। সুচারু দ্বিভূজ, সনাল জমুজ, মুঝ ভার সুধাকর।। নাশা ভিল কুল, মেঘখালা চুল, প্রবিম্ব ওঠাধর।।

#### প্রার।

তবেত জীদামচন্দ্র, হর্ষিত হর্ষ।।
উদ্যোগ করিল দ্রব্য, হাসিয়া হাসিয়া।।
আপন তন্ত্রর শক্তি, বাহির করিল।
তাহাতে মালিনী নাম, তাহার হইল।।
নথরে উদর চাঁদ, উরু করি কর।
মরি কি নিবিভ ভায়, নিতম সুন্দর।।
কটিতে কিব্ধিণী আর, চরণে হুপুর।
মাঝায়ে হরির দর্প, করিয়াছে দুর।।
নাভী সুধা সরোবর, ত্রিবলি সোপাম।
লোভিছে বুর্মল কুচ, দাভিম্ব সমান।।
কমল স্থাল সম, বাছ শোভা কর।
বদন নির্মাল চন্ত্র, কেশ পরোধর।।
নামান কির্মল চন্ত্র, কেশ পরোধর।।
নামান কির্মল চন্ত্র, ক্রম প্রসাক্ষর।।
নামান কির্মল চন্ত্র, ক্রম প্রসাক্ষর।।
নামান ক্রিলের কুলি ভ্রম সঞ্জন।

শ্রবণ পূর্বিনী ভার, অধর বিষুর। দশন শ্বকুতা পাতি, সিঁতায় সিন্দর।। গলাম ভুলসি মালা, হরিমাম গার। পর্ম বৈষ্ণবী তিনি, কে গিনিবে তার ।। হেরিয়া জীদান কংহ- নিকটে তাহার। এখানে হইষে যত, ভিজের আহার !! উত্তম উত্তম দ্রব্য হস্থান করিয়া। ভোজন করাছ সব, হর্ষিতা হট্যা।। শুনিয়া হাসিল দেবী, এই কোন কাজ। এখনি ভাকিয়া জান, বিজের সমাজ।। বলিবা মাত্রেতে দেবী, করিয়া রক্ষন। প্রস্তুত করিল বভ্, ওদন ব্যঞ্জন। হোষা সব ভিজন্ত, ভাবিছে বসিধা। बाहित योशीत खक्क, (कमन कविता।। ্হনকালে জাসি এক, ছিল কর ধেষে। রন্ধন করিছে এক, বৈষ্ণবের মেয়ে ।। मिवटन श्राहेटक हत्व, अल बटह व्राक्ति। क वृति धरनत लाएल, श्वाहेल कालि॥ এইৰপে মানা কথা, হইছে যথন। অভিরাম অবিধান, তাকিছে তথন । जसरें जिल्में खत्र, मूर्य नहीं गाहे। कि जानि केतिरंथ ताने नमानी क्यांना है।। যে দেখি দক্ষিণ যোগী, ভেজস্বীয় সাম। ना श्राटन क्षिट्रिं छन्त्र, माहिक निश्चात्।।

যাইতে উচিত বটে, খাইতে হইবে।
নতুবা কি জানি শেষে, প্রমাদ ঘটবে।।
এ কপে কহিছে কথা, এমন সময়।
ওখানে আকাশে হৈল, মেঁঘের উদয়।।
হেরিয়া হরিষে বলে, এই বেলা চল।
যখন বসিব খেতে, বরিষিবে জল।।
অমনি উঠিব সব, জঞ্জাল যুচিবে।
রসিক কহিছে ভাহা, পশ্চাত জানিবে।।

ক্তিরামের ব্রাহ্মণ ভোজন। পয়ার।

বৃক্তি করি দিজগণ, হাসিয়া হাসিয়া।

শ্রীদানের নিকটেতে, উত্তরিল গিয়।।

যতনে আদন দিয়া, শ্রীদাম তথন।

বসাইয়া বিপ্রগণে, পুলকিত মন।।

সুখের নাহিক সীমা, ছঃখ হৈল দূর।
পদ ধৌত করি দেন, শ্রীদাম ঠাকুর।।
তবেত খাদ্যের সব, হয় আয়োজন।
পভিল আদন পাত, বিসল ব্রাহ্মণ।
তথন মালিনী দেবী, হাসিয়া হাসিয়া।
লইয়া অয়ের পাত্র, উদর আসিয়া।।

অয়দা বিপিনী সেই, অন্য কেহ নয়।

সুধা বাঁটিবারে যেন, মোহিনী উদয়।।

এমনি বিভরে অন্ন, ব্যঞ্জনের রাশি। সৌরতে ভূলিয়া যান, পরম সন্নাসী।। এমন সময়ে মেছে, ববিষিল জল। यान यान् यान् याना, विश्वाद अवल ॥ তরাশে ছিকের কুল, উঠিবারে চায়। হাসিয়া জীদাম বলে এত বভ দায়।। মঙ হকু বৃত্তি হকু, হউক প্রলয়। व्यामात निकटि नाहि. त्य गळव छत्र ।। প্রভুর কথায় দ্বিজ, সকলে মিলিয়া। যতনে আহার করে, বদিয়া বদিয়া। অবাক হইয়া সবে, নেথ দেখ কয় ।; क्षों मिटक विविध्य खन, अश्वीदन ना इब ॥ मिद्र नां**रे आक्**ष्टापन, व खां। दिसन। उथानि अशास्त्र नदश, विन्द्र रहियग ॥ হইবে দেবভা কোন, হের দেখ ভাই। वृक्तिय मायूव नट्ड, मन्त्रामी (ग्रामाइ ॥ এইৰপে ভিজগণ, বলে আব খায়। সুধার সমান অল্ল, ফেলা বড় দায় ।। সভাবের আট গুণ, হইল ভোজন। তবু বলে খাব খাব, আনহ ব্যঞ্জন।। হেনকালে মহাঝড়, আইল তথায়। মালিনীর ঘোমটা, খদিয়া গেল তায়॥ না পান উপায় ভাবি, একি আকস্মাৎ। এক হাতে অন্ন পাত্র, আর হাতে ভাত।।

হাসিল ছিজের কুল, দেশিয়া তথ্য। लब्जांग्र ८एमीत देश्ल, भारतम वसम ।। পুর্ফে হৈতে ছুই বাছ, বাহির করিয়।। क्रेन्ट श्रामित्रा निल, (श्राम्छे। छोमित्र)।। সবে বলে একি একি, ছের দেখ ভাই। এমন আশ্চর্য: কন্তু, দোখি শুনি লাই।। কহিতে কহিতে হোখা। দেষী অন্তর্ধান। জিখন বিজের কুলে, গুরুতর জ্ঞান।। कार्निय श्रवम (पर्वी, मानिल कुश्ला मत मत **मत्रन, वर्श्ति।** गांत्र **क**ल ।। ধরিয়া যোগীর পদে, করে নমকার। ভুমি দেব ভুমি দেবী, ভুমি সর্ক্রসার 🖯 ভূমি দে পরম গুরু, তুমি মূলাধার। ধরেছি চরণ পদ্ম, না ছাড়িব জার ॥ বিপদ ভঞ্জন তুমি, জগতের ধন! হারিতে হইবে যত, পামর ব্রাহ্মণ।। ঞ্জিঞ্জ গোবিন্দ গাদ, পদ্ম করি আশ। রচিল রসিকচন্দ্র, চৈতন্য বিলাস।।

> অভিরামের গৌর দর্শন। পদ্মার।

এ ৰূপে ভক্তি করে, যতেক আছা। দেখিয়া জীনাসচন্দ্র, হাসিল কথন ॥ সকলের গলে দিয়া, ভুলসির মাল। नामिल भारभव वामि, युक्ति अक्षात । মহাপাট খানাকুলে, যে যেখানে ছিল। ভবিতে গোকুলটাদে, মন্ত্র শিখাইল।। পাপ গেল রমাতল, ভাপ গেল দুর। সকলে নাচির। বলে, গোউর গোউর ॥ কেই নাচে কেই গায়, কেই পেই ভাল। কেহ বলে বল হরি, যুচিল জঞ্জাল ।। এইৰপে অভিৱাম, দেখাইয়া নাট। তবেত গেলেন প্রভু, নদীরার পাট।। क्ट्र बटल श्रुटर्स धान, क्ट्र बरल श्रद्ध। কহিতে হরির নাম, সে দোবে কি করে 🗵 याहेटल नमीत्रा (मन, दमन ममत्र) গোউরের নক্ষে দেখা, পথ মধ্যে হয়।। তাহার হুতান্ত বলি, শুম দিয়া মন। य बाल्य भाष्टित हस्तु, तमन मत्रमा ।; সন্মাসীর বেশে যান, নাচিয়া নাচিয়া। জীদাম ধরিল কর, বিনয় করিয়া।। বলে দেহ পরিচয়, ভূমি কোন জন। প্রভু কন গোকুলের, মদন মোহন।। জীদাৰ বলেৰ প্ৰভু, না হয় বিশ্বাদ। আমিছ শ্রীদাম দেই, মাধবের সাস।। আমারে রাঝিয়া গিরি, গহরে ভিতর। কোথার পেলেন হরি, প্রম ঈশ্বর।।

चारानि इटेर्व यमि, तारे शमाध्य । ति (तान (पर्था स्वीति, (पर **प**रःशत ।। করে বাঁশী শিরে চূড়া, গলে রনমাল। কটাতে সুন্দর ধড়া, নন্দের গোপাল।। অনকা তিনকা ভালে, ভাল শোভা পার। দেখিৰ মোহন বেশ, দেখাও আমায় । श्वित्रा (शांखेब्रह्म, अभि उर्थन। रुकेल खरखत याँका, यमनरमाहन ॥ মরি কি চিকন কাল, ৰূপ মনোহর। ললিত ত্রিডজ ঠাম, দেখিতে সুন্দর।। ঞ্জিকরে মোহন বাঁশী, অধর বিষুর। ভাহাতে ঈযৎ হাসি, নপুর মপুর 🛚 রতন <mark>রূপুর কিলা, শোভা পার</mark> পার : ভব অন্ধকার নাশে, রূপের ছটায়।। এমনি বাড়িল কাল, মুগের কিরণ। ८१तिया क्यामा देशला रहित्यं मणम ।। धतिया युगल शरम, कतिया आगाम। বলে কি হেরিস্থ ৰূপ, নব ঘনশাম।। श्हेल खानक पिन, ना दर्शत अभन। क्रविष्ट मार्गत मन, क्मन क्मन।। क्मरन धनन क्ष्री, लुकारत्र कानाई। হইলে গোউর ৰূপে, সন্মানী গোঁসাই।। কোষায় গোকুল তব্য কোষায় গোধন। কোথার হইতে কর, কোথার সমন।।

কহেন গোউরচন্ত শুন অভিবান। যথায় ভক্তের স্থান তথা মোর ধাম।! ছরিবোল যেই স্থলে বলে ভক্তগণা সেই খানে যাই আমি শুন বিবরণ।। অশেষ পাতকী যারা ও নামে অশিকা। काशादमत कर्ल मित श्रिताम मीका ।। এমন মধুর নাম আর নাকি হবে। হরিবোল বলিলে কে ভাবে আর ভবে।। अভिदारम क्रमा कति कन खन्याम। সকল মামের মধ্যে সাব ছরিনাস।। যোল নামে বত্রিশ অক্ষর যাহা কয়: শরণে পাতক হরে যুচে যম ভর।। প্রভুর বচন শুনি কহে অভিরাম। জানিলাম স্বাকার সার হরিনাম।। ভীবের শিবের জনা হবিনাম তব। অবিরত পঞ্মথে গান তাহা ভব ।। চারিমুখে চারিমুখ সদা গুণ গায়। সবার সমল হরি অন্যথা কি তায়।। তবে এক নিবেদন করি জীচরণে। কুপাকরি কুগাময় কহ দীন জনে।। ওনিরাছি ছাড়া তুমি নহ রুদাবন। চৌষটি গোপীর ভূমি মদনমোহন।। কথন যা ভাজা ভব হইবার নর। কি ভাবে এভাব তব কহ দরাময় !! 30 )

হান্ত করি অভিরাদে বলেন গোঁপাই। मगीत्रात लीला मम जीना चात बाहै।। वन्तायम देशदा त्यार्क मनीत्रा मनावा। কি কৰ অধিক ভাগা কহিতে বিস্তর।। সংক্ষেপে কিঞ্চিৎ বলি শুন অভিয়াম। নদীয়া নগর ধেন অতি পুণাধাম।। ত্ৰত ভারকাব লীলা যেৰূপ প্ৰকার। নদীয়ার লীলা কিছু ভিন্ন নহে ভার ॥ বুন্দাৰনে সন্তৰ্গ অগ্ৰন্থ আমার। সেই সম্বৰ্ধণ নিজ্যানন্দ অবভার ॥ শঙ্কর অতৈত গাদী শান্তীপুরে তার। ভগবতী সীতা নাম বনিতা ভাহার।। গোপাল অচ্যভানক বুগল নক্ষ। জনম লয়েছে যেন গুড় গজানন।। ব্রদা হরিদাস সার্কভৌম রহস্পতি। অভিবাদ ভূমি হে জীলাম মহামতি : কেশব ভারতী ফেই অক্র মেজন। नातम् कशमानम् अन विवद्गा। একচাকা গ্রামে বাস হাডাই প্রভিত। वस्राप्त राष्ट्रे क्रम क्रामिट्य निष्क्रित ।। ৰতী পদ্মাৰতী যেবা বনিভা ভাৰার। (प्रवको क्रममी छिमि कानित्व कामात्र।। হরিদাস ক্রেদাস তঞ্জ বেই জন্ম ৰানিবে তাহারা ৰূপ আর সমান্তম 🖟 গৌরীদান অন্ধিকার যাহার ভবন। खरकत सूरल (महे स्वन विवत्तन ॥ বসুধা জাহনা ছটা কুমারী ভাছার। রেবতী বারুণী তারা শুন সমাচায়।। তগল্প মিঞানশ্য কনক কামার। মা যশোদ। শচী নামে বনিভা ভাহার।। बल्ल किटका कमा। नक्षीयारम किया। क्रिकारी क्रमम लट्स की वन क्राकित ।। সনাতন মিজোর তনরা বিফুলিরে। পতাভাষা দেই ধনী জনমে আগিয়ে। নদীয়ার লীলার নাহিক কোন অস্ত। চৌষ্টি স্থিরা যেন চৌষ্টি মহস্ত।। প্রত্যে গোপীগণ সনে রমরছে বাস। ক্লবৰে কেবল বাডিত মহোলাস।। আহা কিবা নদীয়ার অপ্রুণ ভাব। मिर्विश्वरत नाहि हाट्ड स्मिड (क्षमें जार ।। नाम ভাবে मध हात्र करत मश्कीर्श्वन ! হরি হরি হরি বোল রব সর্বক্ষণ॥ অভিরামে এশকল কহিতে কহিতে। হরিবোল বলি ছরি লাগিল নাচিতে।। অভিরাম নহ বলি হরি হরি বোল। श्रमित्रा शोताक एवं बदत एवं क्यांग । स्थानत नात्र कार्य छटन वाहे धन। ছুটোছুটা **এবে ভারা** করিতে জ্ঞারণ 🕦

আবাল বনিতা বন্ধ সকলে আসিয়া। হরিনাম নৃত্য করে বিভোর হইরা দ स्थामत्र नाम कर्ल खरम (यहे जन। সেই জানে হরিনাম কেমন রঙন।। তাই বলি দেহে প্রাণ আছে যতক্ষণ। মিছে কি করিছ চিন্তা রে পামর মন।। প্রেপঞ্চ মায়ায় কেন মজাও আমায়। রুথের সার্থী রথ সুপথে ঢালায়।। भिरु क्ष त्राया नात्री कृषि मन। শার্থী হউরে কেন কররে এমন।। সংসার বিপীনে রথে লহ কি কারণে। कारित्य कि करना कृषि कावनांक मरन !! যে বনে চালাও রথ কি পাবে তথায়। জাননাকি কভ বিভিষিকা আছে ভার।। মারারপা রাক্ষ্যী বেডায় সেই স্থানে। সার্থির ত্রিবায় গে রজ্জু দিয়ে টানে।। আছয়ে সাগর সেই কান্ন ভিতরে। ভাষাতে ফেলিমে দের মারা নাহি করে।। আহা সেতু:ধের কথা কি কব তোমায়। সলিলে সভত ঘড় কুম্বির বেড়ার।। ভাহাতে বিষম চিন্তা বিষম ব্যাপার। সংসার কানন ছাতি ভরের বাাপার।। স্থপথ থাকিছে মন যেওনা সে পথে। পরিভাপ ভাহতে পাইবে পর পরে 🗓

य श्रथ. कतिल मुक् नरंगत्र निमाइ।

त्म श्रथ थाकिए मन क्वनं छूटल गाई।।

किक क्यों करताथित श्रित तल मूर्य।

तल भन श्रित छाव क्वन क्यात।

य कथा वलिस छाश नरह जाविवात।।

वात किथि छिन्न। जात्र करिए न। श्रित।

तमन जित्र। मग श्रिनाम कर्य।।

विनय त्रित्र मान्न देश मिद्र निर्मा ।

विनय त्रित्र मान्न देश मिद्र निर्मा ।

विवय मुद्र मान्न देश मध्र वहन ।।